

धरती कद ताईं घूमैली

[कहाणिया]

सावर दइया

प्रकाशक :

राजस्थानी भाषा-साहित्य सगम [अकादमी]

बीकानेर

नेत्रक सावर दईयाँ

प्रकाशक राजस्थानी भाषा साहित्य सभ (अकादमी)
बीकानेर

पला वार वि० 2037, ई० 1980

म.ल सादी जिल्द 11 25
पकी जिल्द 15 50

मुद्रक अजिता प्रिंटस धी वाला का रास्ता जयपुर

भरती कद ताई घूमली [कहाणिया] [DHARTI KAD TAIN GHOOMALI]

पढण सू पैलां

एक वखत ह्रा जद हर बहाणी न एक घटना री जरूरत हुया करती। जे कुछ घट्यो ई नइ तो बहाणी बणण रो सवाल ई कानी उठतो। आ धारणा धीर धीर बदळगी। आज री बहाणी खातर बोई घटना री जरूरत कानी। उलटी, घटनाबा वाळी बहाणिया कारीगरी मे हळकी मानीज।

ज्यू सत बवीर कयो, 'कर का मनका छाडि क, मन का मनका पेर', त्यू ई आज रो लिखारो घटनाबा खातर बा रली दुनिया न छोड मामली दुनिया मे विचर। रात दिन रो लोम-ब्याहार देपता करता उण र मन म बढ्यो कारीगर छीपा जिवी रग बिरगी भाता टापता जाव वा चित्तरामा भरी पड ई उण री बहाणिया म दरसाव वण र प्रगट हुव।

मिनख रो वा रला बरताव उण र मायल मन रा प्रगट रूप ई तो है। जिवो बीज है वो ई तो रूख री जड है। इण वास्त मन री बात, बीज री चरचा पहला होणी चाईज। काम करण र आपोपरी सबध मे कारण ई प्रधान हुव। आज रो लिखारो जद इण डाळ बीज री, कारण री मन री बाता कर तो वो ठीक इ लाग। मिनख रो मन ता मकडी रा जाळा है, या पेर वा रसम रा लच्छा है। इण जाळ मे फमणा आसान निक्ळणा मुसकल। इण रेसमी लच्छे रा तार सुळझाणा काई हासी-खेल कोनी। इण म पडडी गाठा तो खुलण रो नाव ई नी लेवै। इण वास्त लिखार रो काम घणो दा रो है। वो किया तार तार उघेड र मन र मरम नै ओळख, अर पिछाण नै आपा ताई पूगवै, इण म ई उण री कारीगरी है। इणी भात उण नै आपर हरेक पात्र र मन म घसणा पडै अर आ सगळी खेचळ करणी पड। लिखार नै आ खेचळ भार नी लखाव। उण न उण भार सू ई प्यार है। भार समझणिया तो सायद ई कदे कोई काम पार पाड सक।

लिखारै रै मन मे अणगिणत समाज रा रात दिन रा बरतावा री नाना भात जद घूळी हो जाव तो वा वा रो दरसाव करण नै छटपटाव। आ छटपटाट उण री बेवसी है अर इण थवमी रो करतव ई उण री साहित्य है।

आ एक थूळ सी बात हुई, मना र ब्योपार री। लिखारो किणी बात किणी बरताव नै किण डीठ सू रूख अर किण भात, किण इराद सू उण न माड अ सगळी बाता उण वास्त घणी मटताभू हो सक, पण जठ ताई उण न पडणिया रा सवाल

है व आप आप र ग्यान अर समझ मुजब उणर रक्योड हुरेक पात्र मे छुद बठसी अर चोख याअू रो फसलो करसी । ओ फसलो भी लिघार रो निजर म बण्यो र्वणो चाईज । जिण समाज सारू बो रच पच, उण रो प्रतिन्रिया रो अदाजो पला सू लगा लेणो चोखी बात ई है । हा, समाज र भल वास्त घारी भीठी दवाया देणो चीर फाड करणो, या अौर भात रा दूजा अौर उपाय काम म लेणा, काम लिखार रो छुद रो सूझ बूझ रो है ।

इण सग्र रा लिखारा सावरजी दइया आपरे आस-यास रो ओळख नै आपर निरू ढग सू माड र मेली है । मायल मन र ब्योपार न अ भली भात जाण्यो-परदो है । दइया रो अ कहानिया राजस्थानी र कया साहित्य मे अावत नय मोड रो वानग्या है ।

—रायत सारस्वत

सभापति,

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम [अवादमी]

बीकानेर

दीवाळी

2037 वि०

कहाणियाँ सू पैली

हरेक प्रादमी जीवन रा सुख दुख खेल । इण खेलण मे बी नै भात भात रा अनुभव हुवै । अँ अनुभव माय भेळा हुवता रैवै । भेळा हुयेडा अनुभव माय रा माय कसबसीजमी करै । कसबसीजतां-कसबसीजता अँक दिन विस्फोट हुवै । अर विस्फोट रो ओ क्षण ही वो क्षण है जिको रचना नै कागद माय लावै ।

अनुभवा रै माय रा माय कसबसीजण सू लेय'र विस्फोट ताई जिकी जातरा चाल, वा खासा तकलीफ देवण भ्राळी हुव । आ तकलीफ बोई भी सरजणधरमी जाण सकै ।

अनुभवा री जातरा रै वाद जिकी रचना कागद मायें भावै (किणी भी कळा रूप म) वा हू-ब-हू विसीज नी हुव, जिसी क जीवन मे देखण न मिलै । साहित री किणी भी विधा मे जीवन नै 'हू व हू नी राखीज सकै । कारण क 'हू व-हू' राखण रो काम फोटोग्राफर कर । पण थोडी गहराई सू बिचार करा तो ओ तथ्य सामें भावै कै फोटोग्राफर भी फोट लेवण सू पैली 'एगल' देख । अर जठ 'एगल' री बात आव, बठ 'अँकदम है जिया ई भ्राळी बात कोनी टिक' । टिक तो खाली बस आ ई अरथा मे कै बी एगल सू जित्तो आयो, वो 'है जिया ई आयो । बस, इण सू आय नी । पण कहाणी फोटोग्राफी कोनी ।

साहित री हरेक विधा रो सीधो सम्बन्ध जीवन सू हुव । कहाणी भी इण सू अछूती कोनी । बदळता राजनीतिक-सामाजिक अर प्राथिक धरातल जीवन नै बदळ 'हाथ बी नै जटिल बनाय देवै । इण बदळत अर जटिल हुवत जीवन र सागै साग कहाणी रो रूप ई बदळतो रैवै ।

कहाणी रा ओ बदळयोडो रूप ससार री हरेक भासा री कहाणिया मे साम्प्रत देखयो जा सक । राजस्थानी कहाणी री बात करा—अर दायरो अँकदम छोटो कर र करा—तो अवार मुरलीधर व्यास सू लेय'र आज री मित्ती मे अँक कहाणी लिखणिय लिखार री कहाणी ताई, सगळी कहाणिया नै सुलसुलवार राख र देखा तो ओ बढाव साफ निजर आव ।

पण अबै ब दिन कोनी रया क राजस्थानी कहाणी (किणी भी विधा) रो दायरो इत्तो छोटो राख'र बात करी जाव बी नै आनी परखी जाव । आकण-परखण री बगत तो देसी विदेशी भासावा री कहाणी जातरा सू जुडणो ई पडती ।

बा सू जुडण रो मतलब ओ बोनी क बा रा पोज दावण लाग़ा, बा या रँ दया-देखी खोड खुदावण लाग़ा । बा सू जुडण रो मतलब इत्तो ई है क बठ अ बढ्ढाय बपू भर किया हुया—इण री इतिहासू समझ बिगसावा । दूजा री दुनिया सू जुडणो एण कारण भी जरूरी क आज दुनिया भोत छोटी हुयगी है । छोटी हुयोटी दुनिया म आपा कित्ता क छोटा हुय र रसा ? बाकी आपणी जमीन, ह्वा भर पाणी सू बट र रैवण री बात म्हँ नी कय रँयो हू । बी सू कट्या पछ ता लारँ रसी ई वार्द ? बी सू जुड'र दूजा सू जुडू जणा ई म्हार काम री सायबता है ।

अ की मुद्दा है जिना सू खचळ करतो रवू । इण खेचळ सू जिवो की हाथ लाग्यो, आपर सामँ है । किता है—आ परखण रो ह्व म्हारो बोनी । अणछप्य रूप मे म्हारी हो । अय छप्या पछ या सगळों रा है । इण खातर आबण परखण रो ह्व पार ई हाया छोडू ।

'सगम' रो आभारी हू क आ पाथी छापी । भाई रावतजी सारस्वत जिण रुचि भर लगन सू इण काम नँ पार घाल्या, बी खातर म्हँ निजू रूप सू बा रो आभारी हू ।

बीकानेर (राज०)

—साँबर दइया

334 001

टीप

1	सुगन	9
2	हाल ताई	15
3	हिडकाव	20
4	हत्या	29
5	सुळ् योडा	34
6	घणा कोनी चालै	39
7	हूवणा नई हूवणो	46
8	गळी जिती गळी	53
9	अरे इत्तो दुष	65
10	कोट	74
11	अघार मे सास	80
12	जीवती ल्हासा	85
13	घरती कद ताई धूमली	95

432
1983

सुगन

बी आदमी री, जिक रो नाव गरोस है, सब सू बडी खासियत आ है क बी र कने काई काम नी हुव तो ई बा खुद नै इत्तो 'बिजी समझ क मास लेवण री ई फुरमत कोनी लाध ।

बो सोनलिया रग री डाडी आळो चस्मो लगाव । घणीक दफ तो चस्मो नाक माध सिगक आव । मूछा सावळ कोनी छाय अर दाढी यारी बघायोडी राख । बी री खिण्डयोडी मूछा झाडू र तिणखला दाइ लाग । जिण बगत बो आपर कभर री सफाई कर परो'र निकळ तो' चरा घूड फूस सू भरयोडा हुव । बी नै देख र आट मे भरी-योडो वादरो याद आवण लाग । पण जिक दिन दाढी वणाय'र घर मू निकळ बी दिन बी रो बुक्का लवण री इच्छा हुव । आ बात बी रा भायला कव । जे काई बी रो बुक्को लेय ई लेव ता ई बो बुरो कोनी मान । बी सू मिलणिया मिनताइ बी रो हाथ पीच । बी री हयाळी रेजाई नरम है । नूबी बीदणी री हयाळी टाट । अक दफ तो अक जण अठ ताइ कय दियो क जे वा छोरी हुवतो तो बी न उठाय र कोडमपेर लय जावतो अर ।

आ वान मुण र उण आख मारी । फेर हसण लागयो—ही ही ही । थोडी ताळ पउ उण कयो—आ बात म्हागे लुगाई सामे ना क्या ।

बी री तुमाइ रो नाव कमला हो । बो आपरी तुमाइ नै छोरी र नाव सू बुतावता । बी नै इण तरह हेचो पाडतो क वा भुसळीज र रय जावती । बो कवता—
काळी मा ५५ ।

वाळी री मा री जगा वाळी मा मुण र वा चिगती । वा चिगती अर बी नै मजा आवता ।

जद बी र दूजी छोरी हुई तद उण आपर भायला न पूछया क छारी रो नाव नाइ राखू । बी रा भायला ई जाणता हा क वा आपरा लुगार्च न वाळी मा कय र चिगाव है । व भी बी दिन मजाक र भूट म हा । ब्यो—गोसिया इ छोरी रो नाव हेभा राख द ।

—नाइ नाइ ? उण आग्या भवडी करी ।

—है मा ५५ । दूज भायन बात न रग निया ।

—हा हा हे मा S ! तीज भायल न ठा ही क गणेश री अक्कल री घडी जाम हुयोडी है । उण चात्री भरण री कोसाम करी ।

—हे मा S ! गणेश वात समज र मजाक रो पूरा रस लवण मे डूबग्या । बी रा चस्मो नाक माथ सिरकिआयो । बो क्या गयो—हा भाई लोमा, सुणो सावळ सुणा ह मा S S काळी मा S S बहू मा S S । अर सगळा जणा खुल र हसण लाग्या ।

००

गणेश घर सू निकळ्या । बी र साग सुरेद्र हो । दोना वन साइकबा ही । अेक ^र दपतर म काम करता हा । राजीना च्यार कोस जावणो'र पाछो आवणो । च्यार कोस साइकल सू नापण म पूण घटो लाग्या करतो हो । हवा सामली हुवती बा घटा सवाघटो ई लाग जाया करता हो ।

ब गळी सू निकळ र सडक माथ आय अूम्या ।

सुरेद्र साइकल माथ चढण लाग्यो क इत्त म गणेश बी नै टोक्यो—ठर सुगन आवण दे पछ चालाता ।

—मोडो हुय जावला ।

—माडा सुगन लेय र चालाला तो बठ दिन भर भायाकूटी करणी पडला । मू ड सू ग्राई कवता राड निकळला । सुगन सारा मिल जाव तो साव री फटकार पोसाव ।

सुरेद्र बसळीजग्यो—ठीक है वेटा ! कर पूरा दस मिट खराय । थोडी ताळ पछ—पण था र सुगना रो काइ ठिकाणा । जे दा घटा इ नी आव तो ? तो छुट्टी तो जरूर लेइज कोनी । वरस म कुन पत्र कजुअल मिल । सुगना री उडीक म ता नित कजुअल खराव करो भलाइ । अर आ गधो रोजीना सुगना न उडीक ।

गध रो नाव याद आवताइ वा मन ई मन भगवान नै अरणास करण लाग्यो—ह भगवान और की नइ तो अेक गधो ई भेज । कठ सू ई भज । कियार्ई भेज । पण अक गधा जरूर भेज जिण न टाव तय र ओ गधो टुर तो सरी ।

सुरेद्र उथपण लाग्या । इ बगत खाजगळ्यो गधो कठ सू आव ' अठ ता जे छड किणी धात्री या कुम्भार रो घर ई कोनी । नीतर बो वार घरा सू गधा मगवाय र ई गप र डाव कानी सू निकळ त्वतो ।

सुरेद्र मोचण लाग्यो—हनिया आळा ता चान् माथ पूगग्या । पण अठ रा नोग तान ताद गावर म हीरा साध । सुगना न उडीक । ज गध रा ई सुगन आळा

हुव तो पछ लाग ई सबद नै गाळ क्यू समझ ! अर जे आ बात मसखरी रूप ई कथ तो भी ठीक कोनी । गध जिस बुद्धिसाळी करमयोगी प्राणी साग आ मसखरी ओप कोनी !

उडीकता उडीकता तो मौत ई कोनी आव, पछ गधो कठ सू आवतो ! सुरेद्र सोचण लाग्यो—गधो नइ तो कोई दूजो ई हुव बळ तो चोखो । छाजलो लियाडो भगण भर्योडी मटकी लिया आवतो कोई सुहागण पीळो ओढ्योडी टाबर री मा क पछ ।

—आव चाला ! सुरेद्र बाल्यो—क्यू माडो कर है ?

—बस, थोडीक ताळ और

—तू पड्यो उडीक सुगना नै । मैं तो आ चाट्यो । मत्तई आवबो करिय, सूनी सडक सू वाता करतो ।

सुरेद्र सिगरेट सिळगा र रवाना हुयग्यो ।

००

लारल दिना गणेश अेक नूवो नम पाल्यो । वो दिनूग सिध्या सतोसी मा र मिन्दर मे घी रो दियो करण लाग्यो । वो चाव हो क नानोजी बी नै स्कूटर दिराय देव । वा कन पीता री कमी तो ही कोनी । व्याज रो धधो करता हा । पूत कमाव आठ पौ र व्याज कमाव चौईसू पौर ! पूत बा र कोनी हो, इणी खातर गणेश नै घोळ लेय राट्यो हो ।

गणेश स्कूटर भाग माग र थकग्या । व टस सू मस कानी हुया । उण छोट माट दवी देवतावा न काम पार घालण खातर बालबा वाली । वण पार कानी पडी । बजरगवली तबात नै धोक्या ता ई नानोजी री आगळ्या तिजोरी र ताळ कानी कोनी गयी । बी न लखाया क सतोसी माता ओ काम पार घाज सक ह । बी र हीय साळ आना डूकगी क स्कूटर महीन दो महीना म आ जावला ।

उण सुरेद्र नै कयो तो सुणण नै मित्या—दख, म्हारो तो खयाल है क आदमी न जद छट माथ भरतोसी नी रव तद वो मिन्दर-दवरा री मरण लेव । भाठा पूज्या ई स्कूटर मिलता हुव तो मैं ई पूजणो सरू कर दू । पट्टान रो खरचो ता मन ई पोसाव । अेव स्कूटर म्हार खातर ई माग लिय ममश्या वगू ।

—तू ना गलो मर ! गणेश बाल्या— काम वणता हुव ता तू म अू पली खवी मार !

—यनै ठा है जणा म्हार आग आ खपत कर न क्यू । तू धागे राग मतामी माता न ई सुणाया कर !

सतोमी माता र मैमूड धी ग िया मन र वा प्रायना ररती—हे माता !
म्हार नानोजी न अक्कल दे । मा न िया ई मूवी मुना । साइजल र खील सू नित
च्यार वास जावणो र आवणो म्हार उम री वान कानी । म्हारी तो षीच्या म पाणी
पडग्या ।

जेक दिन सुरेद्र वी नै कया—अ गणेम थार नान ग ओ पीमा अन पत
थन ई मिलणा है । पाच सात बरस ठर जा । आर मर्या पछ मरजी आव जिता
स्वटर लेय आये भलाई ।

—म्हार इत्तो खटाव कोनी । आ रो वाइ अ ता वीस बरस ई कानी मर ।

—अमर पट्टा लिखवायोडा है वाइ ? या तै आरी जलम पतरी दयी है ?

—अ कया सू मर । आव सोयाळ गूद अर मयो रा लाडू ठाक । असली धी
रा सीरा उडाव । आ र हाण म था म्हा नाऊ वत्तो करार है । थार म्हार जिमा रो
ता मुरचो अेक पटक म उतार देव । समच्यो वटा ।

सुरेद्र चुप हुयग्यो । साचण लाग्यो—मीत रो वाइ भरोसो ? वाइ ठा, कद
कठ फूक निक्ळ जाव । मह पावणा अर मीत किणी न पूछ र थाडा ई आव । ठीक है,
जीवण रा सहारा घणई है अर हुव पण मीत रा कारण जिता कम है । किणीज
मिस सू आ सक है वा ।

—अव ता सतोसी माता ई कोई चमत्कार भलाई दिखावो । आ मुण र सुरेद्र
भुसळीजग्यो—हा जद आदमी लाचार हुव तो धी न भगवान री ज सरण लेवणी
चाइज । भगवान री सरण लिया पछ इ जे काम पार नी पड तो कम-सू-कम आ
बात कवण री गुजाइस तो रव क आपा वाइ करा भगवान री मरजी कोनी ही ।
भगवान री मरजी र खिलाफ बापडो वदा वाइ कर सक है ।

सुरेद्र सिगरेट सिळगा र धूवो छाडण लाग्यो ।

—मन थ मू जेक राय लेवणी ही । नाक माथ लटवयाडा चस्मा आगळी
म् ऊपर मिरका'र गणेश बोल्थो ।

—स्वटर वावत या ।

—नइ । दूजी वात ह ।

—खाम वात है ?

—न । अेकदम मामूली ।

—ता वगो सीर वक दखाण ।

—दिनूय सिइया कोइ काम करणा चाव ।

-पूछणो काई है सरू कर दे ।

-काई करू, आ बता ।

-कोयला चुग । सु द्र रीसा बळना वोल्या ।

उण जेकर सुरेद्र कानी देखो अर पछ चुपचाप बह्यो रैयो । मून चुभणो सरू हुया पली ई सुरेद्र बोल्थो—साफ साफ बब कनी मेफा बाइ । तै काइ मोच्यो है ?

-मै मणिहारी रो काम मीखणा चावू । अक जण सू साठ रिपिया महीन म खात करी है । काम मीग्या पत्र म म्हागे यारी दूकान । आ कय'र ता मुर द्र कानी देखण लाग्यो ।

-ओ अवसर ना चुकिय ।

-ठीक है । थार जवगी इ खातर मनै ओ काम करणो पडती ।

-बस, रवण दे । कय र सुरेद्र सिगरेट बुझाय दी ।

बो झाझरक झाझरक उठयो । नहा धोय र पूजा पाठ मे लाग्यो । हडमान-चाळीस रा जाप कर्यो । चाय पी । दाढी बणायी । नव बजी घर सू निकळ'र सडक माथ ऊभग्या ।

सामें मू विजवा लुगाई आवती दीखी । गणेश मूटो मचकाडयो । सडक माथ धूकयो—पिच्च । बी न गाळ्या काढी—आ रडार दिनूग सूणी किन्न मर ह ।

थोडी ताळ पछ अक दूजी लुगाई आवती दीखी । बी रा पीळा ओढणो देख र वा हरखाय मन सू साइकल माथ चण लाग्या क इत्त म लार स किणी छीक लियो—घाक् छी ।

बो आपरा जुता खाल'र मुस्तावण लाग्यो, साइकल रो महारा नव र ।

-काइ हाल है ? सुरेद्र आय'र पूछया ।

-ठीक है । गणेश र मूड सू मर्योडी आवाज निकळी ।

-कठ जाव है ?

गणेश रीसां बळतो बोल्थो—बठकारो मत दे ।

-सिध जाव है ? सुरेद्र आपरी भूल मुजारी ।

-मणिहारी आळ री दूकान ।

-ले आव, चाना ।

-मुगन कानी आया ।

—सुगना न बळण दे ।

—तू बळ घठ सू । म्हारो माया ना खा घवार । बी न रीस आयणी ।

—जावू ?

—हा हा जा उखड ।

सुरद्र टुरम्यो जेजलाज ।

००

दूज दिन सुरद्र नै ठा पडो क गणस न मणिहारी घालि री दूकान माय वाम मिलग्यो । पण खास बात आ ही क बी दिन बी न सारा सुगन मिल्या ई कोनी हा । मरय मम सू बिना सुगना ई टुर्या बापडा ।

सुरेद्र राजी ह्या क चाना उण न साठ रिपिया महीन रो पाट टाइम जाय मिल्यो ता सरी । अवक मिलताइ बी गध सू मिठाइ खावणी है ।

गणस सू मिलताइ सुरद्र री इच्छा हई क पूछ—क्यू बेटा, तू तो कय हो नी क त्रिना सुगना

पण उणी वगत उण साच्या—बळण दा र । ई गध न पूछ'र काइ करणा है ।

गणस न दख न वो मुळण नाग्यो ।

२० १०

हाल ताई

खन लगोलग बवतो ई जा रयो हो । वार-वार कपड री पाट्या बदळणी पडती । नूकी पाटी थोडोज ताळ पछ पाळीज खून सू लात हुय जावती । मगळा रा चहरा धोळा हुवण नागम्या हा ।

भोजाई छटपटा रयी ही । बी र चहर री रगत विगडणी ही । चहर माथे मोत रो छीया धिरगी ही । बी री आख्या खुली हुवता थकाई अधमु दी सी-क दीख रयी ही । गात डीलो पडग्यो हो ।

मुमति दूसरी मूर्ई (इजेक्शन) लगायी । थोडीक ताळ बी री निजर भोजाई र चहर माथ टिकयोडी री । पाचेक मिट बीतग्या । खून हाल ताई कोनी रक्यो । ओजू पाटी बदळणी पडो ।

—ओ इजेक्शन घोर नावो । मुमति वाती ।

मैं बी र हाथ सू कागद ग पुरजो लेय र इजेक्शन रा नांव बाच्यो । घर म वार आयग्यो । साइफल माथ चड र पडन मारण लाग्या । बीकानेर इग हाउम स इजेक्शन खरीट्यो ।

मुमति भोजाई र यूजिय म ओजू मुई लगायी । उडीकण लागी-कदास घून यम जाव । ओ इजेक्शन भी काम कोनी आयो ।

मा एक लफ फेर पाटी वट्ळी । वा मन ई मन देवी नेवतावा नै धोक्ण लागी । मायद ई कोई देवी-नेवता छूटयो हुवेना जिण रो नाव मा नी लिया हुव । मैं बी घडो न उडीकण लाग्यो जण काई देवी नेवता प्रगट हुय र आपरी करामान सिखावता । मैं घगोईज उडीकना रयो पण काई करामान हुई कोनी । घून हान गिपाई ग्या जाव हो ।

मुमति र चहर माथ धूवळ रो रजावा गीणण नागो । आपरी अमकळा घर परमाळा रो मुरगता माथ तं न रोम मो क घा रयी ही ।

भाईती पर म प्राया । व रीना वळ ना-मो दक कंयांग है क भाग ना उठाय कर, पण घण गुण घुण है, मैं आप मत्त हुवाच है घर भुगता गिवाण रा पळ । पिजा मडा पाट'र कूणण लाग्यो ।

पिकीड र कूरुण सू भाईजी न भळ झाळ चढी । वा बी र एक घप्पड धर दी । मा पिकीड न चुप राख्यो । बी र सैमूड रम्मतिया राख्या । वो रम्मत लाग्यो । मा माय गयी परी । बठ सुमति बठी ही ।

—अब काइ करणो चाईज ? मा पूछ्या ।

सुमति नम ऊची कर र मा र मू ड कानी दरयो । वा वाली-खून भीत बह चुक्यो है । अब मीडो करया टाबर नै नुकसाण पूग सक है इ न बडाही अस्पताळ लय जावा । सायद दोना री जान बच जाव ।

मा दुयभरी मीट सू सुमति कानी दरयो । मा री आख्या डबडबाईजगी ही, पण आसू कानी छळक्या हा ।

सुमति आपरी पीस लय र टुरगी । जावण सू पली च्यार गोळ्या देयगी ही । तीन तीन घटा पछ गाळी देवणी ही ।

मै मा र नड गया । बा मनै डागदरणी नै बुलाय र लावण खातर कयो । मै अस्पताळ पूग्या । डागदरणी सू बात करी । फेर बगा सी क दौड'र तागो लायो । पाछा बी र कमर कानी गया । बा बार आवती तीखी । मै हाथ आग कर र बी रो प्रग झाल नीना ।

डागदरणी भोजार् र डील री तपास करण लागी । माच कन पडी खून सू भरयोडी पाटया टखी । उण पूछ्या-पडगी ही काइ ?

मा बोली-मटकी उठाय र लाव ही पग तिसळग्यो दो घटा हुवण न आया है पण खून रूकण रा नाव इ कानी लेव

डागदरणी रीसा बळती बोली-थे लाग मरण रो रस्तो मत्तईज निकाळ लवा । आठव महीन म कदेई मटक्या भराया कर है । मूरख कठई रा । हूस ।

डागदरणी दो इजकशन लगाया । वा खून थमण रो इतजार करण लागी ।

धानीक ताळ पछ मा पाटी बदळी ।

डागदरणी वाली-अब इ न घरा राखणा छतर सू खाली कोनी । जित्ती जल्ती हुय सक ई न वडाडी अस्पताळ लय जावा । तीन च्यार घटा र माय माय ताबर बार आय जावना ।

बा आपरी फाम लय र रवाना हुयगी ।

मा घनगायाडी मी क आपर दवा देवतावा न अरदास क्य्या जाव ही ।

अस्पताल फोन कर्यो। एम्बूलेंस दूज मरीज नै लेवण खातर गयोडी ही। में घर रो ठिकाणो लिखवा दियो। फोन राख्या पली एकर फेर कयो-एम्बूलेंस थाडी बेगी भिजवाया मरीज भीत सीरियस है।

में घरा पूग्यो। देख्यो क भाइजी हाल ताई बडबडाट कर हा। मा म्हार-कानी देख्यो। में कयो क एम्बूलेंस बेगीज आवण आळी है।

भाईजी झुझलावता म्हार कनै आया अर रीसा बळता बोल्या-घटो भर हुवण आळो है। एम्बूलेंस हाल ताई कोनी आयी। जा एकर फेर फोन कर'र आ।

में घडी देखी। दस मिट सू बता कोनी हुया हा। पण भाईजी र कवण र कारण दूसर फोन करण नै गयो।

दस मिट और बीतग्या। एम्बूलेंस हाल ताई कोनी आयी। मा बोली-ताग म लेय जावा तो काइ हरज है ? भाईजी, जिका इत्ती ताळ ताई मन ई-मन अमूज रया हा अब बरसण लाग्या-तागें मे ले जाय'र बी री जान लेवणी है काइ ! अठ री मडका म एक एक विलात रा खाडा है। पूर महीना आळी नै जे आ सडका सू ताग मे लेम जावा तो रस्त म ई बीरी हालत बिगड जाव अर ई री हालत तो पला सू ई जे रस्त मे मरगी तो पछ बैठा रोवता रया हुह !

मा मरम्मत हुवती सडका देखी ही। बा बोली-आजकाळ सगळी सडका नूवी बणगी है।

भाईजी पला दाइज तेज आवाज मे बोल्या-बस बस, वणी ई समझ नूवी सडका। ई जमान मे तो मडका बणावणिय ठेकदारा अर इजीनियरा रा बण ग्या है व घाप जासी तो ई घणो है। अठ तो सगळी जगा अ धारखातो है। गरीब री कोई सुण ई कोनी। अब आईज लेवो नी, दो घटा हुयग्या पण एम्बूलेंस हाल ताई कानी आयी। ओ ई जे सेठा रो फान हुवती तो अबार नै नूवी एम्बूलेंस बणवाय र भिजवाय देवता। पण गरीबा री कुण सुण !

भाईजी मा र सामें सू हट र बार आयग्या। व हाल ताई बक्या जाव हा-स कामचोर है साळा ! कोई सुण ई कानी। मिनघ मर त' मरा भलाई !

घटो री आवाज मुणोजी। में चिमक्या। बगा-सी-व सडक माय पूग्या। दोनु हाथ ऊ चा बर्या। एम्बूलेंस री चाल धीमी पडगी। एम्बूलेंस घर भाग घयो। दा मिनघ पाटक घाल र बार निकळ्या। बा र हाथ म स्ट्रचर हा। इमार र साग ई व घर म बडग्या। स्ट्रचर पसार र उडीवण लाग्या।

मा पाटी बदल'र खण मे नाखी । भोजाई नै स्ट्रेचर माथ सुवा'र मा बार निकळी । स्ट्रेचर उठार ब लोग ऐम्बूलेंस माय जा वट्या । भोजाई र साग मा अस्पताळ गयी । मै साइकल लेय'र ऐम्बूलेंस र लार लार अस्पताळ पूग्यो ।

भोजाई नै अपरेसन आळ कमर माय लेयग्या । मा अर मै बार बँच माथ इ बठग्या । बी कमर माय नरसा घडी घडी आय जाव ही ।

भाजाई र पीड सू बरडावण री आवाज फाटक खुलताई बार ताई आवती पछ बीरी आवाज हळकी पड्या गयी ।

आपरसन आळ कमरं रो दरवाजो बंद हुयग्यो । बारै बठी मा पाछीज आपर तेतीस करोड देवी देवतावा नै घोक्ण लागी । मा भात भात री बोलवा करण लागी । परसाद री रकम बघ रयी ही । पला तो उण सवा रिपिय रो परसाद बाट्यो । पछ ओ बघता बघतो इग्यार रिपिया ताई पूग्यो । बस, परसाद र साग एफ सरट ही-भोजाई री जान बच जाव अर पेट मायलो टाबर सही-सलामत हुय जाव । मा कामना कर रयी ही क छारो हुव ।

कमर रो दरवाजो खुल्यो । एक नरस बार आयी । मा ऊ तावळी सू पूछ्यो-
बीदणा री हालत किया है टाबर किया ।

-बीदणी री हालत ठीक है अर

-अर काई ? मा पूछ्यो ।

-मर्याडी छोरी हुई है । नरस उथळो दियो । मा एक लाबो निसकारो 'हाख र पाछी बच माथ बठगी । मने ओ सो की धोखा कोनी लाग्यो । जी खराब हुयग्यो ।

नरस गयी परी । मा उदास आख्या सू आपरेसन आळ कमर र दरवाज कानी देखण लागी । पछ आपरी गीली हुयोडी आख्या ओडभ र पल्ल सू पूछ र म्हार कानी देखण लागी ।

डागदरणी कमर मू वार आयगी । वा मा कन आय र बोली-मरोज नै एक हप्त ताई अस्पताळ म र्दज रापणो पडसी ।

भोजाई नै बच्चावाड माथ एक बिछावणो मिलग्यो । मा रात भर भोजाई कने रयी । मै पाछा घरा आयग्यो । सगळा जणा नै खबर दी । बाबूजी अर भाईजी जद आ मुणी क मर्याडी छारी हुई है तद वा र चहर माथ की सळ पड्या अर व सळ घणी ताळ नी टिनया । घोडीक ताळ पछ व इ या हुयग्या जाण की हुयो ई कोनी । कोई जलम्या कोनी । कोई मरया कानी ।

दिन ऊग्या ।

मैं, भाईजी घर बाबूजी अस्पताळ पूग्या । म्हार हाथ म फावडो घर खापण हा । भाईजी मर्योडी छोरी नै उठाय लाया । बी नै कपडो ओढाय'र हाथा मे उठाय ली । अब म्हे मसाणघाट जाव हा । वठ पूग र मँ खाडो खोदयो । बाबूजी छोरी नै खाड भाय वूर दीनी । मैं देदयो—बाबूजी घर भाईजी री भाख्या सूनी घर सूखी ही—साव सूखी ।

पण जे मर्योडो छोरो हुवतो तो ? खीरा सा बळतो सवाल उछळ । म्हारी ग्रान्या मार्गे कोई चित्राम घुमण लाग । सगा-सम्बन्धी घर गळी मोहल्ल आळा दुख प्रगट करण न आवता घर आळा नै की धीजो वधावता छोर री मौत सू लाग्याड धाव न भरण ग्रातर 'आ तो सा सावरिये री माया है क्य'र मल्हम लगावण रो फरज पूरो करता ।

पण आज ? आज कोई नी आवला । सगळा जाण है क छोरी हुई है घर या भी मर्योडी । चाला, चोखा हुयो, गिरह टळी । बापड रा भाग चाखा है क जलमनीज मरगो ।

हिडकाव

रमेश साइकल खड़ी कर र पिरोळ रो दरवाजो पडकायो । मांय सू घावाज प्रायो—गुण है र ।

उण पूछयो—बजरग है काइ ?

—हास है ।

रमेश आपर कोट री जब सू कमाल निवाळ र मूँहो पूछ्यो । कसां माथ हाथ फेर्यो । पछ म्हार कानी देण र मुळकयो । मुळकती बगत धीरा चिम्बा और ऊढा लाग्या मनै । उण म्हार काध माथ हाथ धर र कयो—घावो, माथ चाला । तू भी याद करला क विणी सू मिल्यो हो ।

म्हे दोनू मांय पूग्या । प्रागण म बेकळू बिछयोडी ही । धूर्ण मे छूट सू गाय बधयोडी । प्राग बाब हाथ कानी अेव कमरो हा ।

रमेश कमर रो दरवाजो खडकायो । दरवाजो छुत्यो । बजरग हंस'र बोत्यो—
घावो घावो ।

म्हे दोनू माच पर बठग्या । बा पुद म्हार वन बठग्यो । बी री लुगाई सुशीला जेव कानी खून म ऊभो ही । बजरग र कयां सू बा स्टूल माथ बठगी । सामन तणी पर पेटीकोट, साडी, ब्लाउज अर चाळी र अलावा गरम सूटर ग्यारी टंग्योडी ही । दूजी तणी माथै पण्ट बुशट अर गजी जाधियो टंग्योडो हो । छूटी माथ तौलियो पड्यो हो ।

च्यार जणा खातर बी कमरो मन बेजाई सक्डो लखायो । इण री अेक बजह कमर म सुशीला रो हुवणो भी हो । भायल र भायल सू मिलण नै जावा अर बठ वीं री लुगाई कमर म हुव तो अजीब-भो क लखावण लाग । इणी कमर म जे पाच-भात जणा जेक ई डौळ रा हवता तो सायद इती अमूजणी कोनी आवती । वाता रो बाजार गरम हुय जावतो । पण अठै ता म्ह सगळो चुप वठा हा ।

कमर मे मून तिरण लाभ्यो । मन ओ मून अखरण लाग्यो । थोडी ताळ पछ लखायो क ज थोडी ताळ ताइ आईज हालत रयी तो लिलाड माथ पसेव री वूर्ण तिरण लाग्या । बगला अर पीठ पर रीगा सा चालणा सरू हुय जावला । रुवा म अाल-पिना सी क खुभनी लागी ।

अठे घाय'र मूम रै जगळ म भटक्ण सू की पछनावो हुवण लाग्यो । आवण री ईछा तो ही ई कोनी, पण ओ रमसियो धीगाण घीस लायो । हरामखोर । मैं मन-ई-मन बीनै गाळ काढी ।

मैं म्हारा नख कुचरण लाग्यो । सामने तणी माथ टग्योडा कपडा देखतो अर बिना मतलब ई गिणण लागतो—अंक दो तीन । थोडी ताळ पछ बिना किणी ताल र पग हिलावण लागतो । अंकदम होळ-होळ । धरै हुवता ता दादी इ कुवाण खातर टोकती । कवती कै मांच मांथ बठ र पग नइ हिलावणा चाईज ।

मैं रमेस र खात मे गाळ्या जमा कर्या गयो ।

रमेस आपरी जेब मे हाथ घाल'र टिकटा काढी । बजरग अर सुशीला कानी हाथ कर'र कैयो—लो अंक अंक टिकट खरीद लो । लखपति वण जावोला ।

बजरग हस'र बोल्यो—नइ भायला । थारै कन ई राख । म्हारो इरादो लखपति वणण रो कोनी । घणो पीसो आदमी नै बेईमान वणा देवै । पछ दो रा प्यार अर प्यार रा आठ करण र अलावा की मूझ ई कोनी ।

रमस हस्यो । बजरग कानी सू निजर हटा'र सुशीला कानी सावळ घूम्यो । बोल्यो—लो, थे आख भीच'र, ले बजरगवली रो नांव'र अंक टिकट लेय लो । पलो इनाम थार ई नांव खुनला ।

खासा ताळ ताई ओ घघो चालतो रैयो । मै मगळां सू अलायदो अर कटयोडो-सो ओ ढग देखतो रैयो । बस, इत्ती राहत जरूर मिली ही क बा री फालतू खाता सू कमरै मे तिरतो मून टूटग्यो । फालतू ई सही पण कमरै म वतळ ही । अब मैं खुद नै की हळको महमूस करण लाग्यो । थाडी ताळ पली तो माथो दूखण लाग्यो हो—मून सू अमूजता अर भीता कानी देखता देखता ।

—मैं अंक मिट मे आवू—कैय'र बजरग कमर सू बारै गयो परो । जावती चगत बो कमरो बंद करग्यो—मांथ ठणडी हवा नी आवै इण खातर । अब बी कमर मे म्हे तीनू रयग्या—रमस, सुशीला अर मैं । कमर म आजू मून तिरण लाग्या । लाग्यो क कमरो सक्डो हुवता जा रयो है । थोडी ताळ पछै रमम बोन्यो—हां कवो तो अंक टिकट थानै तो नेय दू ।

बा की कोनी बोली ।

रमेस आपरी पीठ लार बण्योडो आळो खोन्यो । म भी आळ कानी पण लाग्यो । आळ मे तेल री सीसो श्रीम पाउडर काच नगपालिस अर लिपस्टिक र अलावा की दूजो जिनमा ई पडी ही । रमस लिपस्टिक उठाव'र बोल्यो—ई नै थोडा भाप पगाण लू तो किमोक रव । लिछमी काई कैवैनी ? मृशोला खासा

हुसियारी सू बात रो रख रमेस री जोडावत कानी कर दियो । रमेस न उथळो कानी मूझ्या । उण दात तिडका दिया—ही ही ही ।

म गौर कर्यो । बी ग चिन्वा और ऊडा हुयग्या हा । कमर रा दरवाजा खुल्यो । बजरग र हाथ मे द्रे ही । उण द्रे स्टूल माथ धर'र दरवाजो ढक लिया । पछ माच माथ बठग्या । सुशीला गिनासा मे चाय घालण लागी । द्रे म भुजिया अर बिस्कुट प्यारा हा । रमेस री निजर द्रे पर टिकयोडी ही । उण भुजिया सू मुट्टी भरी अर फाको मारता कयो—अ खाली देखण खातर ई है काई ?

—नई ता । बजरग बोल्यो ।

—तो पछ खावो कनी । कदरा ई पड्या है । कोई हाथ चलाव ई कोनी । अर उण फ ओ मार लियो ।

सगळा हसण लाग्या ।

रमस बिस्कुट उठाय र सुशीला नै खणावण लाग्या । उण आपरो आधो मूडो तक राट्यो हा । बी र नई नई करता थका ई रमेस बी न आपर हाथ सू बिस्कुट खणाया । बिस्कुट खणाया पछ वा मुळकयो । म्हारी निजर फेर बी र मूकयोड हाडा अर चिन्वा कानी ठरगी ।

पछ बजरग र क्या मू सुशीला अक बिस्कुट रमेस न खणावण खातर उठायो ।

—अरे अरे । करता रमेस बी रा मुरचा पकड लियो अर फेर हसण लाग्यो ।

बी रा चिन्वा और ऊडा हुयग्या ।

सुशीला दूजो बिस्कुट उठाय र म्हार कानी हाथ सम्बो कर्यो । म बोल्यो—म टावर कानी । मतई खा लेसू ।

बजरग रमेस कानी देख र हस्यो । रमस म्हारै कानी दख्या—बी री आख्या म हळकी सी क रीस ही ।

रमेस सुशीला रो मूडो उषाडता कयो—म्हां सू क्या रो घूघटो ।

वा सादी रा पल्ला ठीक कर र माथो ढक र बठगी ।

बी र गोर अर चौकण चहर री चमक मू कमर री रोसणी री सोभा बधगी ।

चाय पिमा पछ कमर म मून रा घटाटोप बादळ धिरग्या । कमरो फेर सकडो लागण लाग्या । मैं फेर भीता देखण लाग्या । तणी माथ टग्याडा कपडा गिणतो पग

हिलावण लाग्यो । योडी ताळ पछ मून सू भचीडा खाय'र उयथोड मे क्यो—अब आपा न चालणो चाईज ।

रमस बोल्यो—क्यू जल्दी मचाव है थोडो खटाव राख, अबार चाला ।

मनै रीस आयी । वेजा लीचड आदमी है । इया बठ्यो है जाण वाप रो घर हुव । हरामी कठई रा । खुद र तो कोई काम धधा कोनी, पण ई बापड बजरग र ता काम हुवला ई । अगरेजी म एम ए कर रयो है । पढणो भी तो हुवला अगल आदमी नै । पण ओ फटीचर बलक उठण रो नाव नी ले रयो है । आफिस तो मोडो बळ अर भागण री घणीज ऊतावळ कर । जिया दफतर सू भागण री ऊतावळ कर, विया ई अठ सू उखड बळ नी । अर गुस्घण्टाल ! अब उठ जा ! राम थारो भलो करसी ।

मे रमस वानी देख्यो । बी र होठा माथ भुळक ही । मनै वा मिजळाट लागी ।

—आलू रो सीरो कद खणा रया हो—रमस क्यो । बठ सरदारसहर मे थार हाथ रो सीरो खाया हो नी, जा पछ आज ताई आलू र सीर रा दरसन कोनी कर्या ।

मन हसी आवण लागी । हुह ! तो आ बात है । आलू रो सीरो भाव है वेट नै । गोबर क्यू कोनी खाव हरामी ! सीरो सुवाद लाग । लाग क्यू कोनी आपर घर सू काई जाव है । फोगट म खावण नै मिल जद तो सुवाद आव ई ! जेव सू खरच र खाया असली सुवाद री ठा पड ! बो दिन भूलग्या दीछ है । 'उपकार फिल्म म घीमाण घीस र लेयग्यो । साग कन्नू ई हो । रमस ई भरोस हो क फिल्म ता कनू ई दिखायला । खासा अळसा मळसा कर्या पण पार कोनी पडी । खुद र गळ म घण्टी वधगी जण अमूजण नाग्या । इण्टरवल ताई दस दफ क्यो हुवला क फिल्म तो सफा रही है । डायरेक्शन पोचो है । गाणा मे तत कोनी । बी री बात मानण नै कोई तयार कोनी हो । पण बो आपरी राग बंद कर दे किसी पोल पडी ही । क्वाडी कठ ई रो !

रमस क्यो—देख भायला बजरग थारी सिफारिस बिना काम बणतो कोनी लाग ।

—सुस्ती अ कद-कद कवला । बजरग क्यो ।

—ज रोजीना ई कवण लाग्या तो । वा हस र बोली ।

—हांस आलू आवं तो बार ई मास है, पण भरोसो राखो रोजीना कोनी क्यू ।

432
1983

मै रमेस कानी देख र साचण लाग्यो क ई रा अ चिब्बा आलू रो सीरो खाया तो भरीज कानी, इणत तो सजरी प्लास्टर करवा लेणो चाईज ।

म बी री बगल मे आगळी खुवायी । उण म्हार कानी देख्यो । मै नस सू टुरण खातर कयो । बा फीटाई सू बोल्यो—हाऽऽ अब तो चालणो ई पडसी । आ हलव खातर तो हा भरी कोनी । खर ।

वो ऊभी हुयग्यो । बी र लार मै ई कमर सू बार निकळ्यो । उण आपरी ऊट जिंसी लाम्बी नस कमर मे घाल र कयो—म्हाने छोडण खातर कोनी चाल ?

मन बजरग रो चहरो साफ निजर आव हा । बा की परेशान हो लखाया । दिमम्बर री ठण्ड म बार निकळण री की कम जची हुवला । पण रमेस री बात र कारण वो वेमनी-सो बार आयो ।

म्हे तीनू बार आयग्या । ठण्डी हवा हाड कपावण लागी । मै मफलर न कस'र काना र बाध लियो ।

थोडी दूर आया पछ मै कयो—अब थे जावो भला ई, कठ ई सरदी मे जुडग्या तो ।

रमेस बोल्यो—नइ नइ थोडी दूर और चाल भायला ! म्हे तो तीन मील सू चनाय र आया हा थोडी दूर तो तू ई चाल ।

मनै जूजळ आयी—अर कबाडी ! तू तो तीन मील सू आलू रो सीरो खावण न आयो हुवला, पण इ बापड न ठंडी हवा खावण खातर क्यू घीस है । थन ता टिकट यारा वेचना हा ।

थोडी दूर चाल्या पछ म कयो—अब थे जावो । आ तो थाने ठेठ बीकानर ताइ साग ले जावण री तेवड राखी दीख ।

—रमेस छोड जद जावू नी—बजरग कया । मै अंकर फेर कयो जण आपरी साइकिल पाछी गगासहर कानी मोडी अर—अच्छा, मै चालू—कस'र अधार म अलाप हुयग्यो ।

—तू सफा रद्दी आदमी है मास्टर ! रमेस रीसा बळता वाल्या ।

—बी न सीया मार र काइ करणा हो ? मै पूछ्यो ।

—तू समझ कोनी—उण आ कय र आख मारी अर मुळकण लाग्या ।

गोया गट कन आवताई म्हारा रस्ता फटग्या ।

ठण्ड रा थपड़ा खावतो मै घरा पूग्यो ।

अक दिन रमेस फेर मिल्यो ।

उण मनै हेलो पाङ्ग्यो । में ढबग्यो । म्हार कने आय'र पूछ्यो—अदीतवार नै बजरग आयो हो काई ?

—हाऽऽ ।

—साग मुशीला ही काई ?

—हाऽऽ । म्हारी निजर बी र चिब्बा माथ टिकगी ।

उण हसता कंयो—ई बजरगियै रो काम ठीक है । पली तो म्हार घरा घरणो दिया करतो हो, अब थार घरा आवण सागग्यो । वा छमको जोरदार है ।

—छमको कुण ? में पूछ्यो ।

—अरे यार बा ई मुशीला ऽऽ । वो हसण लाग्यो । बी र चिब्बा नै देख'र मनै घिरणा हुवण लागी । मुशीला खातर 'छमको सबद मनै खासा अखर्यो । बी रो घटियापणो सामन आयग्यो । हराभी कठ ई रो । दूजा री लुगाया बाबत सोचण म आनै मिल काई है ?

—आ बान ठीक कोनी । म्हार सू रईज्यो कोनी ।

—ई म ठीक व ठीक री काई बात है ।

—थारै मूड आ ओप कोनी । मूड आगं तो भाभी भाभी कर अर पीठ लार । आग री बात जाण वृक्ष र अधूरी छोड दी ।

बो चुप रयो । में चाव हो व बो की बोल । इण खातर फर कयो—जे बजरग घारी लुगाई खातर इसी बाता कर तो ?

अबक तीर सागी जगा लाग्यो । उण खारी मीट सू मन दश्यो । सडक माथ यूव र बोल्यो—थनै बाता घणी आवण लागी दोखै मास्टर ।

पछे बो नाराज हुय'र गया परे । अब जद भी मिलता रुख मिलार बात कोनी करतो । पण ओ सिलमिला घणा दिन कोनी चाल्या । अचाणचक बो राजी हुयग्यो । बी र राजी हुवण रो कारण मे कोनी जाण सक्यो । बस, इत्तो ई लाग्यो क बी न आ बाता म खासा मजो आया करता । अब कोई बात चालती ता वो घुमा फिरा र मुशीला रो किस्सो बी बात सू जोड'र हस देवतो । वो आ बात पुष्ट करणी चावतो क मुशीला 'चालू' है । कोई लगातार कोसिस कर तो बी नै आपर साग —आ कय'र बो हसता—ही ही ही ।

आ ई दिना बा बजरग न ई भाडण लाग्यो हो । लारल दिना कनू बी नै इसी बाता बतायी जिकी उण बजरग सू सुणी ही । बात पचाया बी रो पट आफर जाव । इण खातर बा रमेस ताई माल पुगाय दियो ।

अब रमम बजरग रो पूरा इतिहास बखानणो सरू कर्यो कै माणक रै श्रू' इ नीचड बजरगिय सू मुलाकात हुई। आ जद बीकानेर आयो ता रमेस र घरों ठरयो। बा दिना ई नुगर बजरगिय न उण चकदा करवाया। फेर बो बजरग न गाळ्या काडतो—नुगरो है नुगर। म्हारो तो बात छोड। बी किसा मनै छप्पन भोग जीमाथा हा। सरदारसहर मे मै माणक र अठ तो जरूर जीमती हो पण दण ता चाय खातर ई कदई पूछ्यो हुव जिका याद कानी। भूख माता कठै ई री।

—तू ई तो कव हो आलू रा सीरो खायो हो। मै बात कुचरी।

—अरे पड्यो कठ हो आलू रो सीरो। बो तो आपर बहनोई खातर बणायो हो। म्हे पूग्या जणा दो च्यार कवा म्हानै ई चखा दिया। मै आ समळा नै जाणू। थारी तो अक्कल निक्ळगी मास्टर। मसाणां म कठ ई इळायचिया लाध?

बो खासा ताळ ताई बजरग नै गाळ्या काडतो रयो। गाळ्या काड'र थकग्यो जण मनै हुकम दियो—ल अब चाय तो पा बाळ। मै बी रै हुकम री तामोल करी।

००

केई दिना बाद री बात।

सिख्या पडगी ही। बो म्हार साग चुन्नीलालजी री दुकान माथ चाय पीव हो।

—साळो नाजर है। रमेस कयो।

—की री बात कर है? मै पूछ्यो।

—बजरगिय री।

—थनै काइ ठा ?

—ब्याव हुय न तीन बरस हुयग्या। हाल ताई की कोनी हुया। अर ना ई काई उम्मीद है।

—थार ब्याव न भी तो पाच बरस हुयग्या। थार भी तो हाल ताई ऊदरी ई बानी हुई।

—मै तो सम्भळ र चालू। क्य र उण आपरी जव सू निरोध री डब्वी री डब्वी निकाल र िघायी।

—बो भी सम्भळ'र चालती हुवला। मै की और मुण्ण र मूड म हो।

—वो सम्मलर कोनी चाल । रमेस धुवर बोत्यो—साची कवू, बी नाजर है । लुगाई र बाबिल कोनी । पछ वो हसण लाग्यो । बी रा चिच्चा घोर ऊडा दीवण लाग्या ।

रमेस जोर सू हस्यो । में चिमक्यो । पूछ्यो—बाई वात है ? इत्ती जोर सू किया हस है ?

—बस, इया ई ।

—कोई कारण तो हुवला ई ।

—अेक बात याद आयगी रे ।

—बाई ?

—आ जोडी कित्ती बेडोळी लाग । सुशीला तो रेमन सक्म री हयणी दाई अर ओ वजरगियो टीगू म्हारज । आ बिलातियो बी नै किया सततो हुवला ?

में रीसा बळनो सोचण लाग्यो—हा, लाडी, तू तो दारासिध रो भाई है जाण । घर आळा हाड तो कीरतन कर है अर दूजा री नामरदी रा सर्टीफिकेट लोगा नै दिखावतो फिर । कठ ई ओ खुद तो । पण म्हारो बाई लियो । फूट्या लिछमडी रा । वा रोवती फिरला ।

—आ मास्टर, धनै घुमाय लावू । उण आख मार'र क्यो ।

—किन्न चालण रो विचार है ?

—गगासहर ।

—वजरग कन ? में पूछ्यो ।

—ऊ हूऽ बी सू म्हारो बाई काम । क्य'र वो सीटी बजावण लाग्यो ।

—तो पछ ?

—सुशीला कनै जावूला । वो हस्यो । बी री हसी म मिजळाट साफ दीख ही । बी री आख्या रा भाव बदळग्या ।

—तू जा म्हारो मूड कोनी ।

—डफोळपणो ना कर बठ सुशीला नै छेडसा ।

—आ फालतू बाता म बाई धर्या है ?

—बा मन चाव है र । उण हस'र क्यो ।

—ठीक है । तो तू जा परा । वजरग हुव तो बी न लिछमी कन भेज दिय । में रीसा बळ'र क्यो ।

बात बी री जोडायत सू जुडगी इण पातर उण मनै गाळ काढी । फेर सडक पर थूकर बोल्हो—थार मे अक्कल नई आणी मास्टर । ई दुनिया री की तजरबो कर ।

उण आपरी साइकिल रो मूडा गगासहर कानी कर लियो । म्हार कानी देख र मुळकयो । म्हारी निजर फेर बी र चिब्वा माथ टिकगी । साइकिल पर चड र उण पडल मार्या अर थोडी ताळ पछे म्हारी दोठ सू भलोप हुयग्यो ।

मे सोचतो रयो क ओ पूर रस्त सुशीला र गोर, चीकण अर भरव डील साण दिभागी असखेल करतो रवला । आपरी रगत गति नै तेज करला अर नसा नै विरथा तणाव देवला । फालतू ई सासा नै गरम करला । अर अबक जद मिलसी तो नूवो बात सुणावैला ।

कोई अचूमभ री बात कोनी क अबक मिलताई वो आ कव- सुशीला र टावर हृवण आळो है । थन सच्ची कवू मास्टर । ओ टावर म्हारो ई है ।

बी बगत वो फेर हसला । बी रा चिब्वा ओर ऊडा हुय जावला ।

राळा पाखतो अक कुत्तो म्हार कन सू निकळग्यो । डामर री काळी सडक माथ कुत्त री राळा देख र मनै रमेस री बाता याद आवण लागी ।

कुत्तो गयो परो । म्हारी आख्या आग रमेस रो चहरो घूमण लाग्यो ।

हत्या

तकिय न हाल ताई मुद्दू या म भोच राख्यो है । जदपि अब पला आळी स्थिति कोनी । जिक तूफान र आवण रो डर हो, वो निक्ळ चुक्या है । बी वगत कमर री छात काप'र पडती सी-क लागी । भीता भी हालती सी लागी । तूफान आयो । भीता र साग छात पडगी । मळवो हटा'र फक दियो । अब सब वाता ठीक है । जो बी भी हुवणो हो, हुय चक्यो । वीत्य नै लेय'र चित्ता करणी मूरखता है । मा भी आ ई बात क्व । बी दिन भी मा चिल्लाटी-सो मार'र आ ई बात कैंयी कै जिको भी हुयग्यो बी माय धूड हाखो । अब करणो काइ है, आ सोचो ।

मा जिकी बात सोची ही वा घणीज खतरनाक ही । मा री बात मुण'र म्हार सगळ डील म कपकपी बडगी । बी योजनाबद्ध हत्या म मैं सामिल हुवणो कोनी चाव हा । पण म्हार सामिल हुया बिना वा हत्या मुसकल ई नई असम्भव ही कारण कै वा हत्या मन ई करणी ही । किणो दूज री नी खुद री ई । म्हार आपर खून री ई । बी दिन मैं म्हारी आगळ्या कानी देख्यो । नख हा तो सरी, पण घणा लाम्बा कोनी हा । जे म्हारा नख लाम्बा हुवता तो मैं बिना चक्कू छुरी र हत्या कर नेवती । खुद र पेट मे लाम्बा नख खुभा'र वो सो की बार काढ लावती, जिण न नाजायज री सना मिलण आळी ही । वल्कि साची बात तो आ ही क घर आळा री तरफ मू तो बी नै नाजायज री सजा मिल चुकी ही । बारला नै बी बात री ठा ई कोनी ही । अर वो भेद वा नै मालूम नी हुव, ई वास्त स काम चागी छान हुवता हा । हरक बात होळ सी क हुवती । लागतो क वा दिना घर र मम्बरा रा काम जिका बी हत्या काण्ड म सामिल हा घणा सरवा हुयग्या हा । मन सावळ यान है क घणी ई दफ जीसा गळो फाडता रवता तो ई वा न वा चीज घण्टा ताइ कानी मिलती । मा ऊच सुर म काम करण खातर कैंवती तो ई किणो र कान माथ जू कोनी पालती । पण आ दिना तो हरेक बात सन सू ई समझीजण लागगी ही ।

आखिर खूनी आजारो री तलास सरू हुई ।

मा अेक समझदार नरस सोध लायी । नरस म्हार कमर मे आयो । उण मव जणा नै कमर सू बार काढ दिया । मैं डरपोडी बकरी दाइ पिलग माथ पी ही । उण म्हारी साडी, पटीकोट समेत, साथळा स ऊपर ताच सिरका पी । उण रबड रा

दस्ताना पर राट्या हा । उण म्हार समूच डील न तपास्यो । वा आपरो नीचलो होठ दाता सू दाब'र की सोचण लागी । बी र चहर माथ पसवर रग आयो अर धलोप हुयग्यो । बा चुपचाप बार गयी परी । खूण म ऊभी मा र वन्न जाय'र दबी आवाज म की कयो । मा नस हिलाय र इ बात री हामळ भरी क चाव जिया भी हुव, ओ काम सावळ पतीजणो चाईज । अकदम छान ।

नरस आपर काम म लागी । बी री नियोडी गोळ्या अर केपसूत्म अकारय गया । आखिर उण दो इजेक्शन देय र जीत न आपरी मुट्टी मे बाद कर ली ! अर खासा दिना पछ ठा पडी क मा बी नरस री मुट्टी मे सौ रो अंक नोट दाव्या हो— होळ सी-क ।

००

लारन दिना रो अंक टुकडो ।

सगळ घर मे म्हारी सगाई री बात चाल रयी ही । सगळा जणा बी री तारीफ रा पुळ बाध रभा हा । बी रा नाव हरीश हो । थाडाक दिना पली इजीनियर बण्यो हा । चोखी तिणखा ही । तिणखा र अलावा ऊपरली आमद ई घणी ही । घर रा स मन्बर राजी हा क म्हारी सगाई इस घर म हुय रया है जठ आराम ई आगम है । सगाई पक्की हुवण सू पली हरीश मन देखणी चाव हा । घोडा दिन साग रय'र अंक दूज र सुभाव आदत सू वाक्कि हुवण री इछा म्हार मन मे भी ही ।

घर मे सब सू पली इ रो विरोध मा करयो । पछ जीसा । पण भाईजी बोल्या क ई म वाई खराबी है । आपा बाजार सू बरतण भाडा भी तो सावळ देव परख'र खरीना हा । पछ ओ तो पूरी जिनगणी रा सवाल है । इ र पछ व आपरो रोवणो रोवण लागना क बा र गळ मे चरबी वध्योडी काळी छारी बाध दी जिकी अब च्यार टीगर जिण'र अंधबूढी हुयमी है ।

घर म ई बात री मरगग्मी केई दिना ताई रयी । अत पत हरीश आयो । बा स्कूटर चलाणा जाण हो । ई सहर मे आवता ई बो आपर भायल र घरा गया । वठ सू स्कूटर माग'र लायो । पछ घरां पूग्यो । घर म बी रो चाखो आव आदर हुयो । सिझ्या टुकताई में बण ठण र तयार हुयगी । जीमण रो यौरा काढयो जणा हरीश वाल्यो क पाछा आय र जीमसा । बी मन स्कूटर माथ बठाय र घुमावण खातर लेयगो । मैं स्कूटर माथ पली दफ बठी ही । मन झिझक महसूस हुय रया ही । अंक अणजाण आदमी रो डील परस । अपरिचय री खाई बीच म ही, पण तो ई मैं म्हार दोनू हाथा सू हरीश री कमर कस र झाल ली । डील मे रुवाळी भरीजगी । गाला

माथे लाल रंग पुतग्यो । हनारा तेज वायरा केसा री लटो नै लापरवाही मू उडा रिया हा । हरीश आपरी नस लार घुमाय'र घडी घडी मनै देखतो । जिता दिन हरीश अठ रयो, ओ सिलसिलो चालतो रयो । बी रो स्कूटर रात नै आलीसान होटल रै प्राग ठरतो ।

होटल रो कमरो । अकात । हरीश री आख्यां मे भरयोडी भूख । म्हारो विरोध । नई हराश नई आ बात ठीक कोनी । हरीश, नई ई ई 55 । में बी रो बाया सू छूटण री कोसीस करती कैया—आ बात गळत है ।

बो हस्यां । आपरा तपता हाठ म्हार गाला पर चेप र बाल्यो—ई दुनिया मे फी गळत कोनी । आज नई ता काल ओ सब तो हुवणो ई है । जिको हुवणा है, बी म एकावट न्यू ?

पछै बी रो बायां रा घेरा सुकडीजता । में वा घेरा म फसती जावती ।

हरेक र्फ आई वात हुवती । हरीश म्हारो साडी रो पल्लो आपरी मुट्ट्या मे फस'र बाल लेवतो । पछ बी री जिद प्राग हार'र मे सण्डल खोल'र पिलग कानी जावती परी । म्हारी आंखयां प्राग दिनुग री टम छात माथ ऊम र देघ्याडा व चीठाव पसरण लागता जिका म कबूतर कबूतरी दाणा चुग्या करता हा । कबूतर कबूतरी सू चूच मिलावतो अर पख फडफडाय'र बी र ऊपर चढ जावतो । पछ कूद'र पाछो नीच उतर आवनो अर कबूतरी सू पेर चूच मिलावण लागतो । आ दख र मनै खंवाळी सी छट जावती ।

हरीश गया परो । उण ब्याव करण सू साफ इनकार कर दियो । उण कागद मे लिख्यो क बी न बी ए पास छारी चाईज । अर में फकत हायर सकण्डरी पास ही ।

७७

लारल दिनां रो जेऊ और टुक्डा

अेक दफे समूचै घर मे मुडदानगो वापरगो । म्हारै खातर कोई दूना छोरा तिलासीजणो सरू हुयो । इणो बीच में खुद सू डरण लागगी । महीनो पूरो वीतग्यो । दिन ऊपर चढण लाग्या तो मां रो सक सूब भरी निजर म्हार फानी उठण लागी । बी न की पूछणो चाह'र भी बा की कानी पूछ सकी । अर पेर जेक दिन विना की घतायां ई सो खुनग्या ।

मनै घान रो बास आवण लागो । में लुक छिप'र जूल्है री राख फारण लागी । नीबू या कैरी खावण री इछा हुवती । बी दिन जीमनो बगत उरको आवण

लागी । उसकी रोबण गी बोसीस करी तो बा और जोर सू घायी । उठ'र नाळी बनै दीडी । गोडा म माथो घाल'र उवकी करी । उठी तो लघायो क लार काई ऊभो है । नस घुमाय'र देख्यो—साम मा ऊभी ही । म्हार चहर रो रग उढग्या । मा री आख्या मे ऊयोडो सवाल सजूत लाधताई अेक पुम्ना रूप धारण कर लियो । म्हारी चोटी पफ्ठ'र मा मनै घीस'र कमर म लेयगी । पिलग माथ धक्को दय'र पूछ्यो—साची साची बता, काई बात है ?

बात जिकी भी ही, मैं साफ साफ कह 'हाय्यी । मा र पगा हेठ सू धरती खिसकगी । बा आभो फाडू आवाज म बाली—कुळनासण हरामजादी ! धारा अ ई डील हा काई अ ई काम करण खातर बी धूडउढ्य साग घूमण फिरण री छट दी ही काई ? नाक कटवा दी रण्डार ! इसो ई नसा घड्या हा तो । आग री बात बेजाई भूडी ही ।

मैं अक मिनट ई मा रो भासण कोनी सुणणो चाव ही, पण सुणणो पड रया हो ।

तडाक ! जेक थप्पड । पछ अक धक्को । पछ अक लताड । मूडो काळो क'र्या है तो अब धुपण रो कोनी । बठी बठी रा करमा न । पतो नी, किस पापा रो पळ भुगतणो पड रया है ।

पाप मा कोनी क'र्या । पाप तो मैं करया हो । मन पदा ई नई हुवणो चाईजतो । पलो पाप तो ओ ई हो क छोरी हुय र भी जीवती रयी । दूजा—घर आळा रा तिरस्कार सहन कर र ई बडी हुवती गयी । तीजो—घर रो वाम-बाज सम्भाळ र मा री गाळ्या खावता थका ई हायर सकण्डरी पास करली । सायद बी ए ई कर लेवती । पण आग पढण ई कानी दी । हुह ! हायर सकण्डरी करली, आ ई घणी है । अठ छोरया न प'र किसी हूण्ड्या कमावणी है । चौथो—मैं जवान हुयगी । पाचवो छट्टा पछ म सोचणो ब'द कर दियो ।

मा गयी परा ।

००

लारल दिना रो जेक और टुकडो ।

जिको नई हुवणो चाईजतो बा काम हुयणो । गळत काम न लेय र समूच घर म अेक अजीब सो माहील पदा हुयग्यो । घर मे आयोडो भूचाळ देख र मैं सोच्यो क सायद ई दुनिया मे पली दफ मैं ई ओ गळत काम करया है । ई खातर पूरो घर खूती औजार री तलास म निक्ळग्यो । मैं भी खूनी औजार इस्तमाल करण खातर छटपटावण लागी । डर ता हो, पण मजबूरी ही । अपराध करया पछ आदमी मर

घोड़ी ई जाव । सजा रो डर हुव, पण जीवण री हूस भी तो बाकी रँव ई है । जीवण रो मोह कद छोड़ीज ? कुण छोड सक है ?

कमर म लटकत कलण्डर नै, जिण मे अेक टाबर मूड म आगळी घाल्या मुळक है, फाड'र फँक नाखण री कल्पना में करी । केई दफ पिलग सू उठ'र भीत ताई पूगी । कलण्डर नै, जिका खील माथ लटकतो हो, केई दफ उतार्यो । पछ बी नै मसळ'र या टुकडा टुकडा कर'र फकण री इछा हुई । पण नी जाएण क्यू, इया करती बगत हाथ काप जाया करता । आखिर हिम्मत कर र अक दिन में बी कलण्डर न फाड फँकयो । बी रा टुकडा टुकडा कर'र बार फँकती बगत डर सो लाग्यो ।

खून घणा बह्या । कमजारी आयगी धाप'र । चालण फिरण री सगती ई कोनी रयी । टानिक सरू हुया । छोटोडो भाई दवाया लावता । इ दफ टानिक री जिकी सीसी बो लाया हो बी रो डट एक्सपायर हुयाडी ही । सीसी खाल्या पछ आ बात ध्यान म आयी । मैं बी न पाछो भेज्या । वो दुकानदार कनै जाय र पाछा प्राया । दुकानदार सीसी बदळी कोनी । उग कयो—या सीसी री सील क्यू ताडी ? जे सील नइ तोडता तो मैं इ नै जरूर बदळ देवतो । पण अब तो ।

मनै लखायो क किणी म्हार गाल माथ कसर थप्पड मार्यो हुव । टूट्योडी सील आळी सीसी कोनी बदळीज सक तो पछ म्हारो काई हुवला ? मैं तो म्हारो । मैं ई सू आग री कल्पना कानी करणी चावू । सिसक'र तकिय मे मूडो सुकाय लेवू । रोस आव जण मुट्ट्या भीच'र तकिया मसळण लागू ।

मैं खून सू भर्याडी पाटी बदळू । पतो नी, थाडा-सो-क काम कर्या पछ इती हाफण क्यू लागू । निस्त सी हुय र पिलग माथ पड जावू । कमर री छात कानी दपू । पछ भीता कानी । की नी हिल रया है । सगळी चीजा आपरी जगा स्थिर है । पण अचाणचक हवा तेजी सू चालण लाग । कमर री खिडक्या भचभेडीज । मनै लयाव क फाड'र फँकयोड कलण्डर रा टुकडा हवा र साग उड र कमर म आयग्या है । व टुकडा आपोमाप जुड'र आजू बी कलण्डर रो रूप धार लेव । मूड म आगळी दाव्या वो टीगर मुळक रया है ।

नइ नइ आ नी हुय सक । क्यूक मैं खुद म्हार ई हाथा सू बी कलण्डर रा टुकडा-टुकडा कर'र गळी मे बगाया हा ।

म्हारी सासा भरोज जाव । मैं तकिय मे मूडो सुकाय र ओजू सिमकण सागू ।

सुल्योड़ा

दिन ऊग्या । पूर बास माथ तावडो फलण लाग्यो । बास रो अस्तित्व साक दीखण लाग्यो । दोनु कानी कच्चा घर । बीच र रस्त सू रेलगाडी निकळ्या बर । रेल री पटड्या सू थोडी दूर तीन चार फुट ऊची भीत बण्याडी हे । भीत पछ आउटर सिगल हे । इल्ल सू आवण आळी गाडी अठ रुक् । बिना टिकट चालणिया अठ उतर जाव । टी टी भी आपरो हिसाब कर लेव ।

फत्तू भीत माथ वठ्यो बीडी पीवतो हो । बीरा केस सृखी घास दाई खिड्योडा हा । दाडी वध्योडी ही । कपडा मला कच्च हा । बा कई दिना सू हाया कोनी हो । बो भीत माथ वठ्यो कच्च घरा न देखतो हो । घरा र आग माचा विछ्याडा हा । माचा माथ फाट्योडा विछावणा हा । बा विछावणा माथ मूत रा घगदा हा । कई घरा आग माचा ऊभा कर्याडा हा । बा र लार लुगाया हावती ही—पाचू कपडा पर'र । सडक र किनार लाग्योड बिजळी र घम्भ माथ एक प्लट लाग्याडी ही । बी पर लिह्याडा हो—थोडा टाबर घणो सुख घणा टाबर घणो दुख ।

फत्तू न किणी हेलो मारयो । बी चिमक र देहयो । सामन मगतू ऊभो हो । बी र लार मोडियो हो । तीनु जणा चाय पीवण री सोची । फत्तू भीत सू नीच उतरग्यो ।

बास में छोरा री हो-हा सरू हुयगी । वात-वात माथ गाळ्या । घणीसी क लुगाया सफाई करण खातर गमी परी ही । भगिया रो बास ठडो सा क दीखण लाग्यो ।

तावडा धीर धीर चडण लाग्यो ।

फत्तू आपरी पेटी लेम र घर सू निकळ्यो । आपरी जगा पर आय र बठग्यो । कोंगट माथ भीड बघण लागी । उण आपरी पेटी छोली । पालिस री ट्या वात्रो । अम र केमा माथ लाग्याडी धूड साफ करी । अक मला सा क पूर पाड'र बठण री जगा चुहारी । बो घाट्वा न उडीवण लाग्या ।

अक घादमी घायो । बी र जूती र पालिस कर्या पछ बो आपरी घादन र मूत्रब बोत्या—क्रीम लगावू साब ?

-नई ।

-श्रीम लगाया जूता काच दाई चमकला ।

-कित्ता पीसा दू ?

-बीस ।

बो आदमी पत्र पीसा फैंक'र चालतो बण्यो ।

अंक छोरी चप्पल ठीक करावण नै आयी । बी र कनै सू अंक छोरो निकळ्यो, आ कय'र-नूवी चप्पल खरीद लै । तू कव ता में दिराय दू ।

-थारी मा नै दिराय द, बापडी डोकरी उवराणी घूमती हुवली-छोरी बोली ।

फत्तू चप्पल ठीक करतो बील्यो-अ छोरा सफा बिगडल हुवं अवत कठई रा ।

छोरी मू डो मचकोड्यो । बोली कोनी ।

बि नै साग सब्जी बेचणिया र गाडा कानी सुरफुराठ हुवण लागी । अंक पुलिस आळो सगळा जणा न धमकावतो आय रया हो । जिक गाड मायली जिकी चीज चोखी लागती, उठा'र आपर थल में घाल लेवतो । कोई ची चप्पड करतो तो बो आट्या काढ र कवतो-घणी टें टें ना कर । साळ रो चलाण भर दू ला । कचडी रा चक्कर लगावत लगावत चपला रा तळिया घसीज जावला ।

पुलिस आळो फत्तू कनै आयो । वो गुरा'र बोल्यो-अरे कतिया, पालिस कर ।

फत्तू बी र काळ जूता माय जम्योडी धूड साफ करण लाग्यो । पालिस री डब्बी खोली । पुलिस आळ नस झुकाय'र नीच देख्यो । बिल्की मार्का पालिस दख र बी रा पारो गरम हुयग्यो । उण गाळ काढी-मादर म्हार साग ई चारसीबीसी करे चरी पालिस लगा । कतिय बीन गाळ्या काढी-मन ही मन माय । बिल्की मार्का पालिस री डब्बी दक'र चरी री डब्बी काढी । पछ श्रीम लगाय'र जूता चमकाया । पुलिस आळो रवाना हुयग्यो । फूटी कोडी ई कोनी दी बापड नै । फत्तू बोल्यो-हुह ! हद हुयगी बेईमानी री ! स लुच्चा है । पुलिसियो कुतो - ।

अंक छोरी सण्डल र पालिस करवा र गयी । मगत्तू बोल्यो-कतिया, तै की देख्यो ?

-काई ?

-आ छारी रकट र नीच चड्डी पर राखी ही ।

-चुप साळा !

-सच्ची कैवू मजाक कीनी कर्ह ।

-हास यार, बिलकुल साची है या बात । मोडिय चासा लिया ।

-धत् साळा ! कूड बोल ! खा धारी भा री सौमध !

मोडियो अर मगतू खीं खीं कर र हसण लाग्या ।

होटल र आग लाग्योड पास्टर नै देख र फत्तू री आख्या आग फागली री मूरत नाचण लागी । फागली र जोवन री याद कर र बीन झुरझुरी सी आयगी । धी सफीय साग फागली र घरा गयो हो । सफीय अर फागनी र साग खावण पीवण री वाता सगळ बास म हुव । सफीय फत्तू नै कामशास्त्र' री वाता बतायी । चौरासी आसणा रा नाव गिणाया । 'यार यार आसणा रा यारा यारा मजा !

फत्तू नै लाग्या क वो मोटयार हुयग्यो है !

००

ब तीनु चाय पी'र वार निकळ्या ।

सिड्या हुया पछ जघारो इवाईज उतर, जाण मोमबत्ती सू मोम पिघळ । अंधार मे डूब्योड घरा आग माचा बिछ जाव । लाग नसड्या झुकाया बोड्या फूकवा कर । मायन लुगाया किणी न सलटावती हुव । पेट भरण रो अंक धधो ओ भी है-आ लोगा वन ।

पूर बास रो सरणाटा टूट जाव । धडधडावती मालगाडी री कक्श आवाज सुण र लोग चिमक जाव ।

अंक आदमी घर सू निकळया । चार पाच कुत्ता भी भौ करण लाग्या । माचा माथ बठय लाग्ता न लाग्यो क व सगळा रेल री पटड्या माथ सूता है । धडधडावती मालगाड्या वा न किचर'र निकळ जाव । टीगर रोव पण कोई कोनी सुण ।

फत्तू फागली र घरा जावतो हों । रस्त म मोडियो मिलग्यो । इस्त म सफीयो आवतो दिख्यो । ब दोनु जणा बच र निकळण री सोची । पण सफीय बानें हेलो पाड्यो । । ब ठरग्या ।

-कठ जावो हा ? सफीय पूछयो ।

-बस इनें बिन घूमा हां । फत्तू बोल्यो ।

-मूठ बोल साळा ! सच्ची बता, कठ जाव है ?

-फागली बने । मंगतू बोल्यो ।

तडाक् ।

सफीय फत्तू रं थप्पड मार्या । बोन्यो-बीं राड कने गयो तो मर जावला । गरमी रो बीमारी है बीर । बा रोग फनाव । कदर्ई मोको मिल्यो तो साळी र चक्क मार देवूला ।

फतियं गौर सू देख्यो । सफीय म इत्ता वदळाव ?

बीन लाग्यो कै सफीयो कमजोर हुयग्यो है ।

सफीयो गयो परो । वो धीर धीर चालतो हो । बी रो टाणा छीदी पडती ही । फत्तू सोच्यो क भ्रव ओ तो गयो काम मू । बी रो भ्राभ्या भ्राग बो सीन प्रायग्यो जद सफीयो फागली न बाया मे झाल्या बीरा बुक्का लेवतो हो ।

-हुंह ! बदमास साळो ! फत्तू बोन्यो-खुद तो धूड खावतो-खावतो बीमार हुयग्यो भ्रर बेटा भ्रव दूसरा नै उपदेस देव !

फत्तू बीडी रो टोटो फक्'र दूजी बीडी सिळगायी ।

वो बोल्यो-तू चानला ?

-नई ! मंगतू बोल्यो ।

-तो जा मर ! म तो जावूला ।

फत्तू फागली र घर कानी जावण लाग्यो ।

हा ५, ओ ईज हो फागली रो मोहल्ला । घरो सू निकळती नाळ्यो नाळ्या र पाणी सू वण्णाडा कादो काद म बिलबिलावता कीडा घरा र पाखाना रो बदवू भीता र कन कूडो कचरो मल रा दिगला काद मे मूण्डो भर्याडा सुभर !

फत्तू जावतो हो । रस्त म चपली मिलगी । उण चपली नै पूछ्यो-चपा ५५ फागली घर है काई ?

-ही ५५ ।

-तू कठ जाव है ?

-दवाई लावण नै । फागली रो तबीयत खराबि है । कैय'र चपली टुरगी ।

फत्तू फागली रं घरा पूग्यो ।

कृण है रे । वूढ पूछ्यो ।

भ हू फत्तियो ।

-भ्रर फत्तिया तू किया धायो ?

-मुण्यो क फागली बीमार है बी रो हाल पूछण नै आयो ह । अब बी री तबियत किया है ?

-हाल तो भीत खराब है ।

-काइ ह्यो बी र ? फागली कानी इसारो कर'र पूछ्यो -।
डोकरो चुप

फत्त बठ बठग्यो । याडीक ताळ मै सगळो भेद बी री समझ मे आयगयो । फागली र खून ने नाळो छूट रयो हो । बीरा कपडा खून सू खराब हुवता हा ।

वा बोली- वापूऽऽ तू भाय जा मै कपडा ठीक करलू ।

फत्त ऊभो हुयग्यो । बोल्या-अच्छ्या, अब मै चालू ।

-आवतो जावतो रया कर र फत्तिया । होकर कयो ।

घर सू बार निकळती बगत बीन डोकर री घासी री आवाज मुणीजी-खो खो अक्खों ।

ओफ्फो ! घासी ! भीत री सूचक घासी ! मूण्ड सू निवळतो कफ । कफ मे खून । खून मे काळा घन्वा ।

फत्तू घर सू बार आयगयो पण उण र काना मे घासी री आवाज हाल ताई सू ज ही-खा खो अक्खो ।

बी नै लाग्यो क ओ पूरो मोहल्लो घास है । ई माहल्ल र मूण्ड सू कफ पड है । कफ मे खून है । खून मे काळा घन्वा है !

फत्तू न ई घासी आवण लागी-अक्खों अक्खो अक्खा ॥

घणा कोनी चालै

दरअसल अब तो वो इत्तो उघपाळ लागण लागग्यो कै वी र साग पांच-सात मिट गुजारण री इछा भी कोनी हुवती । जठ ताई पार पडती, मै वी सू बचण री कोसीस करतो । रस्त मे कठई दिख जावतो तो मै वी सू निजर बचा र निवळण री कोसीस करतो । इण र भावजूद भी वो आपरी चीलख दीठ सू म्हारो लारो करता अर धीगाण ई साग हुवण खातर तडफा तोडतो । बी बगत मै किणी जरूरी अर प्राइवेट काम रो ओळाव लेय र बी सू पिंड छुडावतो, कारण क बी री अकारण बाता मानसिक बलात्कार री स्थितिया पदा करण लागती ।

आज तो मै खुद अचूमभ मे हू कै ई जाहिल आदमी साग इत्ता दिन किया वाट लिया ? किया घटा लग वी री बेहूदी हरकता चुपचाप सहन करतो रया ? किया वी 'चाती नै चाय पावतो रयो ?

सावळ सोचू तो याद आव कै मामूली ढग सू हुयोडी मुलाकात वी री सन्नियता र कारण ई इत्ती आग बघी ही !

जद वो पली दफ मिल्यो हो उण खासा विनम्र ढग सू खुश र नमस्कार क्यो अर मुळक री जाजन विछाय दी । बी दिन बी री मुळक की सावणी लागी ही । पण अब तो वी नै मुळकता देख र मर्ने झाल आव । इच्छा हुव क चप्पल खोल र बी र मूड मार्ये गिण र पूरी इग्यार मारू । बी रा दात किता पीळा अर सूगला है । दखताई उघकी आव ! वी री जोडायत आपर होठा माथ बी रो हेत किया बरदास करती हुवेली !

बी सू दूजी मुलाकात स-जीमण्डी मे हुई । उण ई हेलेो पाड या ।

-काई खरीद रया हो ? उण म्हार कन प्राय'र पूछ्या ।

-वस ओ ई साग पात ।

-चालो, चाय पी लेवा ।

-साग पात खरीद तियो वा ? मै अमली वात पूछी ।

-नई । अबार तो इमै पग घर्या ई हो क आप दिखग्या ।

-म्हार खयाल सू आपा परा सव्जी लेवा ।

-हां S S, ओ ई ठीक रैमी । उण मुळक र म्हाण कानी ग्यो ।

वो सब्जी खरीदण लाग्यो । आलू, काटा टमाटर अर मटर आद तुलवाया पछ उण आपरी जेब मे हाथ घात्यो । अक रिपियो काढर दूकानदार न पूछ्यो क कित्ता पीसा हुया ? दूकानदार कयो—पूणी दा रिपिया ।

—है ? उण पली तो सब्जी आळ कानी देरया अर पछ म्हार कानी । सब्जी रो थलो साइकल पर लटकार मनै कयो—ओ तो चोखो हुयो क आप मिसग्या, नई तो आज इज्जत रा टका बटीज जावता । तुलवायोडो साग पाछो हाखणो पडतो ।

—क्यू काई हुयो ?

—अक रिपियो तो आप री जेब म हुवला ई । अकर दिया देखाण आपा बाद म हिसाब कर लेसा ।

मै नई चावता यकाई अक रिपियो काढर बी न दियो । सब्जीमण्डी सू निकळर म्हे सडक माघ आयग्या ।

—अच्छया, चालू । मै कघो ।

—आवो चावडी रो गुटको तो ल लेवा ।

मै बी नै गौर सू देखयो । अब मन बी पर जाल आयी । आ हुसियारी है या नीचता ? जब मे साग खरीदण सारू तो पूरा पीसा हा कोनी अर अब चाय री मनवार कर रयो है ? सीध ढग मू आ क्यू कोनी कव—भाई साब ! चाय पावो नी, बायडा मर रयो ह ।

बी बगत मनै लाग्यो क ओ आदमी सोळ आना बेसरम है ! फीटाइ री हद हुया कर !

चाय पाया पली जिकी बाता हुई वा सू उण आ जाणकारी दी क वा कवितावा कहाणिया लिख है । उण आ भी कयी क बो अक दिन म्हार घर आपर आपरी कहाणी सुणावणी चाव ।

—जरूर जरूर आपरी कहाणी जरूर सुणसा । आप बगत निकाल र आ जाया । मै शिष्टता र नात कयो ।

—मन तो बगत ई बगत है । बस आपन घणी तकलीफ नई हुव इसा बगत बतावो । फेर म्हार कानी देख र आपरा पीछा-पट्ट दात दिखाय दिया—ही ही ही !

अर दूज दिन बो घर आ घमकयो । मै बी री कहाणी सुणी अर तारीफ करी । हालाकि कहाणी म खाम्या ही । पण आदमी रो सुभाव मिजाज जाण्या बिना, बिना सघ पिछाण र मूड देखी बात कथोग्या कर है, बा ई मै करी । बी बगत मनै आ काइ ठा ही क म्हारी कूडी तारीफ मू बी रा हौसला इत्ता बघ जावला !

अब बी र आवण रो सिसिलो बघतो गयो । वो बिना बुलाया बगत-बबगत आ घमकतो । सामल र मूड री चिन्ता दर मे ई कोनी करता । आगलो उथप'र मर जावो भलाई बी री भा सू । कहाणी सुणाया पछ वो अेक वात जरूर पूछतो— ह हे तो किसीक लागी आपनै आ कहाणी ?

—बस, ठीक है । मै उदासी लेय'र कैबतो । मन मे रीसा बळतो बी नै गाळ्या वाढतो—हुह ! गधो कठ ई रो ! हाल आ ई ठा कोनी क जे रचना आछी हुव तो पढणियो बिना पूछ्या ई तारीफ कर देव । जे थनै चुप्पी रो मतलव मालूम नई हुवै तो सुण—चुप्पी रो मतलव हुव क थारी आ रचना सफा पोची है ! दौडम है ! वोन अब काइ कव ?

—आ कहाणी च्यार पत्रिकावा सू नामजर हुयोडी है । उण आपरी कहाणी री तारीफ खुद ई कर दी ।

म्हारै मन मे आयी कै पूछू—क्यू भायला ! हाल ई ठा कोनी पडी काइ क आ कहाणी किसीक है । हालाकि आ वात मै खुद जाणतो हो क खाली छपणो ई किणी रचना री श्रेष्ठता री निसाणी कोनी हुया कर । पण जिकी पत्रिकावा मे बी री रचनावा छप्पा करती ही, वा री साहित्य सू की खास लेणो-देणो कोनी हो ।

—आज इण न पाचवी दफ पोस्ट कर रयो ह । वो क्या गयो आप कनै बीस पीसा रा टिकट हुव तो अकर उधार देबी देखाणी आ क्या पछ उण आपरा पीळा दात दिखाय र कमर म बदबू भर दी । वो फेर बोल्थो—बिया तो मै महिन र महिन बीस रिपिया री टिकटा खरीदू पण महिन र तारल दिना मे सो पोस्टेज खूट जाव । आपनै थोडी तकलीफ तो हुवला, पण । मै बी न बीस पीसा रा टिकट दिया ।

पछ अेक दिन बाजार मे लिफाफो खरोदण खातर पाच पीसा माग्या । बी दिन बीस पीसा री टिकटा बी बन ही । बी नै पाच पीसा देवती बगत मन लयायो क आपा र अठ नूवा लेखका री आधिक हालत खासा माडी है !

अेक दफ वो आपरी लुगाई री बीमारी री बात कय र म्हार कनै सू बीस रिपिया लेयग्यो । थोडा दिन आडा घाल र उण टीगर री बीमारी री बात कय र दस रिपिया और लिया । पाच अेकर फेर लेमग्यो ।

आज साचू तो लखाव क आ ई कारण सू वो मनै इत्तो उथपावू अर चाती लागण लाग्यो हा । बी री सत्रल सू बचण री इच्छा उपजण रो आधार आ वाता ऊपर ही हा ।

या अरु तारीख त घाया घर तीम रिविया हातावर बाता—विगी ता घरात म्हाारा हाव उरला वानी पण ता घापन रिविया श्य रया हू। मातू क त जमरा हुमा ता पर माग तमू। जाणू हू क थ इनकार ता करा वनी। पर रा घात हू।

—हा घाता हू हू। म तीम रिविया वारी दग्या तैया। त म माता क घा वमरात घर री बात म घाड म ज रिविया पाळा जव म नद पात तव।

उण तास रिविया म्हार घाय कर्या। मै जन्ता मू वान जव र हवात कर र तम्या माग ली घर मर म या त पाळ बाडा।

—घाय वनी त रिविया तिया हा। मै वान हिमाव या तिरावणा घाल्या। तास तव र पात न भूत त जाव इन घातर।

—वनीम ? वा की तिमर व बाल्या—मै ता बटा तीस त घात हू। पण थ पाव रिविया घातर तड थोण बावना ? पण ता हू मै म्हारो हायरी दग तमू। वाकी पाव रिविया रा वाद माजता। पाव रिविया मू पार भूय घाय वानी घर म तगपनि वणू वाता। मरजी घाय त ल तिया।

घाठी ताळ ता म्हार विच मून रा टका बाजता रया। मै चावणा हा क वा उठ र जाव परा। अ पात ता शोट म घान द तिया। हायरी दगसी बावडा। जाणू मर म जमा कराया हा जिका लप्टा कर्याही ताधमी।

—चाव वानी पावा वाई ? उण पन मू वान कुपणा कया।

—निणया जव म हू। घाज ता पारा तरफ मू हुय जाव। म बी र ई डोळ रा वणण रा वाताम करता रया।

—निणया रा वाद ! महीन भर मरा जद अर तिया हाय घाय। घात ता था वन तांग रिविया एकट्टा हुयग्या। एकट्टा शत ता वार भायना विच द तलटा दिया करा। उण पन जव म घात र जग मू दात कुचरणा स कर तिया।

जो म तो ह्मी घायी क साळ री वत्तीसी माथ फार र चणू अर ! उघार तियाळा पीसा घाय ता व एकट्टा हुय जाव। तवती वगत घा वानी सापो क दगनिया घापर वजट म वटोनी कर र द रया हू।

—घर हत्ता वाटा ना करा। कय र बो मुळकण लाग्या। म बी नै चाव पायी अर इक्कीम गाळ या चाटी !

अत म बी मू वचण री कोसीत वरण लाग्या। अर दा दफ ह्य व्यवहार मू वान ममतावण री कोसीत वरी। पण उण पाडी परतणी वानी छोडी। जद भी घावना घटा ताई वार वगता। म्हारी जोडावत तवात बी र घावण स् परमान

हुवण लागती । वा वी रं गया पछ वी नै वोरिंग मशीन बनती । कणाई वी न बम्बई आळा चाती कवती । केई दफ बा बडबडाट यारो करती । पण तो ई वो भाई टस सू मम कोनी हुतो । केई दफ तीनू टावर आयर धुम्मम कण लागता तो ई मै वानै वरजतो कोनी । साचतो-सायद आ सू तग ह्य र ई वो उखड वळ तो चाखा । पण वो असली चीकणो घडो हो । टीगरा री ऊधम मू वा तो कोनी उचप्यो म ज्जर तग आयगयो । मै टीगरा न नडकर वार कान्या । ई पर जो बोल्यो—टावरा पर रीस नई करणी चाईज भाई साब ! टावर रोळा रप्या नइ करसी तो किसा आपा करसा ? चचळता टावरा रो स्वाभाविक गुण है ।

म भुसळीज'र राख हुयगयो । वी न गाळ कानी । धार ई बालमनोविज्ञान री ऐसी कम तसी ! चचळता तो टावरा रो गुण है । ठीक है पण अरे ओ हरामी, थारी आ आदत किस मनोविज्ञान म आव है । चाती हुवणो किसो गुण है !

वी र चाती हुवण मू जाडायत इसी उथपी क जेक दिन उण मिरचा री थली कमर मे लाय र बडकावणी सरू कर दी । आक छी आक् छी ।

मै जेव सू रुमाल काढ र आय अर नाक सू ववतो पाणी पूछयो । वो पिडकी कनै जाय र नाक सिणकर पाछो म्हार कन आयर वठगयो । जोडायत खुद छीका खावती बार आगण म गयी परी !

वी नै चाय पा न रवाना करया । घर आयोड आदमी न चाय पावण म की हरज कोनी । आ तो मामूली बात है । मरू म मै इणन चाय पाया ई करतो हा । कणाई-कणाई विस्कुट ई खणावतो । आ कोइ अहसान कानी हो । वी पण दया भी कोनी ही । आ तो आज र जमान री मामूली रीत सी क है । दो घडी साग बठ र वाता करण रो बगत निकळ जाव । पण जद कोई घरा खाली चाय पीवण खातर ई आवण लाग अर चाय पीर वाग करण रो ठेको यारो ले सव तद वी सू वचण री सोचणी ई पड । चाय पावणी सारी वार हुवणो दारा ! इणी वजह सू वी री सूरत देखताई म्हार माथ मे हळको हळका दरद हुवण लागता । जद वा कनै आयर वठता तो दरद और बधण लागता । वो आपरी पीळी वत्तीमी खोलता तो पूरा कमरा उदवू सू भरतो लखावतो !

और तो और वो गरमी म कपड रा जूता पर्या करतो । माजा परणा वी री आदत र खिलाफ हा । वो सगळ सहर री धूड छाण'र जद म्हार कन उग्रटतो अर आपरा जूता खोल र कनै बठता, वी बगत वदवू पसर जावती म्हार च्यामर । केई दफ जी मे आवती कण न कवू—कविता कहाणी सू ज्जरी हावणा । वदवू अर सुगंध मे फरक करणो ज्जरी ह ।

अंक दिन तो म गिष्टाचार री सीवा भाग ई हाखी । बी न बँयो—भायला !
धारा पग बदनु मार रया है । हावणघर मे जाय'र पग घाले ।

वो चुपचाप हावण घर कानी गयो परो । बी र गया पछ म सोची क ज
उण हावणो सह कर दियो तो ? हाया पछे कपडा मांगसी । पर्या पछ वा नै
आपरा ई समझ लेसी । चीज लेय र भूल जावणो तो बी री आदत है ।

वा पग धोर पाछो आयो अर मुळक'र आपरी जेव म हाय घाल्यो—अंक
नूवी कहाणी लिखी है । मुणला तो ठीक रसी । अर म्हार हा या ना क्या पला ई
कहाणी पढणी सरू कर दी ।

००

बी री आ हरकतो सू चाली मै ई उचप्या हावू आ बात कानी । बी सू
मिलण आळो हरेक आदमी बी री सूरत देखताई बी सू बचण री कोसीस करतो ।
वा सू हुखी हुयोडा जद म्हे मिलता तो बी री गरमोजूदगी म बी री बात करता ।
क ओ घर घर धूड खावतो क्यू फिर ? ई न सरम लाज आव है या नई । क
आदमी तो घणाई देच्या पण इसो निसरबा तो कोई कोनी । क ई तर जीवन सू
तो चाखा है क ओ आत्मघात कर लव ।

आ ई दिना म बी सू लारो छुडावण खातर विना साग-मूछ री बाता करण
लाया । वो खत री कवतो, मै खळ री मुणतो ।

-भायला भीत मुसीबत म हू ।

-और आ दिना किसी कहाणी लिखी ?

-बीसक रिपिया हुव तो देवो नी । छोरो बीमार है ।

-मै सुण्यो क थारी कवितावा आकाशवाणी सू आयी ही ।

-भगवान री सौगध, छोरो बीमार है ।

-थारी कहाणी कठ छप रयी है ?

-बीस नई ता दस रो ई जुगाड कर वा ता म र हुसी ।

-आजकाल थे गोष्टिया मे कोनी दिखो ।

-भायला ! वो जेकदम दीन हुय जाव ।

-मै थोडो जल्दी म हू । आपा फेर मिलसा ।

-कवो घर आ जावू ।

-म टूर माय जावण री सोच रयो हू ।

-अवार की ।

—ग्रह्या, फेर मिलसा । कैय'र मै साइकिल माथे चढ'र जल्दी जल्दी पडल मारण लाग्यो ।

दो घर मिलण री कोसीस करतो म्हारी । जोडायत बी नै बार सू टरकावण रा गुर सीख लिया ।

—मायत हे काई ? उण पूछ्यो ।

—कोनी । जाडायत उथळा दियो ।

—कित्रै गया हे ?

—कैय र कोनी गया । सायद धोरै ई घरा गया हुवै ।

—नइ म्हार घर काई भायलो कोनी भ्रावं म्हारी हालत ।

—तो फेर ठा कोनी । और कठ ई गया हुवला ।

—भाव जणा कय दिया कै मै आयो हा

—ठीक है । कैय देसू ।

—जरूर कैय दिया । भूल्या ना भलो ।

—ठीक है । अर उण शिष्टाचार भूल'र भचीड देणी दरवाजो ढक लियो । म्हारै काना नै वा देसुरी भडाक् री आवाज सगीत दाई लखाव ।

जोडायत म्हार कने आय र बोली—मै बी चाती नै बार सू ई काढ दियो है भलो ।

—असल कर्यो । राजी हुय'र मै कैया । फेर 'हाऊ टू एस्केप फ्रॉम द फण्डस्' पढण लाग्यो ।

हुवणो नई हुवणो

घर र आग फुटपाथ ह । बी र बन नाळी धव । गळी रा दम बार वरमा ताद रा टीगर नाळी मे टट्टी जाव । दोना कानी वण्याड फुटपाथ र धीचाळ मू वाली सडक निवळ । सामल फुटपाथ र विनार अेक भवान है । २ र च्यारुमर घाली जगा है । अठ गळी रा टीगर रम दिनुग सिझ्या ।

दिन ऊगताइ मकान रो मामलो अर पसवाडना भाग मूरज री रासणी मू गरम हुवण लाग । सियाळ म टावर टीगर इणीज भीतर र सा र ऊभ र तावडा लन । व गोळा अर गिल्ली इण्डा रम ।

जेक वाळी कुत्ती भवान रो भीत मू चिपण री मासोम वर रयी है । में जी कुत्ती न गीर सू देखू । मन लाग क जी कुत्ती रा पेट फूत्याडा है । बी र पट म सायद ऊ हू सायद नइ जरू ई ककरिया है ।

८८

घर माभूली सो ई है । तीन कमरा है । एक कमरो आया गया वास्त है । बीच म आगणो है । आगण री भान मार पगाधिया है । ज पगोधिया ठेठ डागळ ताइ पूग । डागळ माध अक माळियो है । बाकी दा कमरा नीच वणयोडा है ।

जीसा आफिम जा चुच्या है । म कालेज जावण री तयारी कर रयो हू । मुधा म्हारी छोटी व न आगण म साडी लगत्या ऊभी ह । वा सतीश राजू विद्या पुष्पा अर रखा नै कपडा पराव है । मा रा पट्टा धाव ह । वा न इम्कून जावणो है । मा रमोइ म बठी रोटया कर रयी ह । रमो म धूवा टुयग्या है । चूह म जागतो लकट या नुशगी हुवला । सायद ।

मा अचाणचक रसोई मू बाग आव । म चिमक सो जावू । में सोचू क अचाणचक काइ हुयग्यो । अरे ओ काइ ! मा ता आगण म दप्याडो नाळी कनै गोठा म माधो घाल र उट्ट्या कर रयी है । आगणा उठटया री मासू सू भरीज जाव । म मा र कन जाय र पूछू—ताइ हुयो मा ?

—की कोनी ।

-याने अचाणक उलट्या नीकर हुवण लागगी ?

बस, इया ई जी घबरावण लागम्यो ।

-डागदर नै बुलाय'र लावू ?

-नई ।

मैं चुप हुय जावू । सुधा जिकी ग्या न फरान परावती ही, बाल्टी भर'र पाणी ल आव । वा उलट्या माथ पाणी हाथ देव । पाणी र साग उलट्या बवण लाग । सुधा अेक बाल्टी पाणी भेर हाथ ।

मैं बालेज जावू परा ।

सिध्या नै घर आय र देखू क मा माच माथ सूती है ।

जीमा अेक कानी ऊभा है । खुरसी माथ डागदरणी बठी है ।

वा स्टेथस्कोप लगाय'र मा र हिरद री घडकणा सुण रयी है ।

थोडा साच र वा कागद र पुरज माथ बाजार री दवाया लिख देव । वा खुरसी सू उठती बगत कब आ र पट म टावर है । आ नै किणी भी तर री शारीरिक या मानसिक तकलीफ नइ पूगणा चाईज । जित्ता भी हुय सक आ न आराम करण दा ।

कागद रो पुग्जो जिक माथ बाजार री दवाया लिखोडी है, जीसा नै झलाय'र कब—अ दवाया आप बाजार सू खरीद लाया ।

डागदरणी जाव परी ।

माच माथ सूती मा न म देख । अब मने ठा पड क दिनुग आळी उलट्या अेक नूव टावर र आवण री सूचना ही । मी घिरणा सी क हुव क मा र पेट मे ओजू टीगर पळ रया ।

००

सामन आळी भीत र साग उभी वा कुत्ती हाल ताइ कूज्कूड कर रयी है । वा आपर पगा मू अेक घुरी खाद रयी ह । थोडी ताळ लगातार रत हटाया पछ वा आपरो जीभ काट'र हाफण लाग ।

००

मा माच माथ मू उठ'र पाणी री गितास भर । पाणी सू दवाई री टिकडी गिट । टिकडी गिटया पछ मू डा मचकाड ।

सिध्या हम रयी है । बारन कमर म अस्त हुवन मूरज री रोसणी फँटयोडी है । रोसणी रो रग पीछिय र रागी र चहर दाइ लाग है !

मुधा रसोई म है । मा बी नै चाय बणाय र ढादण खातर कयो है । मा बी नै आ हिदायत भी दी है क बा चाय बणाया पली दूध भी गरम कर लेव । मुधा चूल्है माथ दूध धर देव । अचाणचक बी नै याद आव क पाणी री बाल्टी भर र लावणी है । मुधा बाल्टी भरण खातर टूट्या माथ जाव परी । बठ बी नै थोडी ताळ लाग जाव । इणीज बिचाळ रसोई सू दूध घळण री वाम निक्ळ अर आगण मे पसरती बारन कमर ताइ पूग । मा बडबडाट करण लाग— की ई परवाह कोनी । दूध उफण र बळ रयो है । सब रा सब मटरगस्ती करता फिर । मा म्हार कनै सू निक्ळ । मनै उपयास पढता देख र कव—ई ी तो उपयासा सू ई फुरसत कोनी । दूध बळ तो बळो भलाई । ई ी की ठा ई कोनी पढ । इ र भा सू तो इण घर मे लाय लाग जाव क चोर बड जाव इ ी की पीकर कोनी । पतो नी काई पड्यो है आ उपयासा मे । बठ्यो आस्था किचोवो कर दिन भर ।

मा बडबडाट करती रसोई में जाव परी । मा र रसाई मे पूगताई मुधा आव । मा बी ी टेढी मोट सू देख र कव—पाणी भरण न गयी ही क भायल्या सू वाता करण नै ?

मुधा चप रव ।

—थे आराम करो चाय में बना देसू । थोडी ताळ पछ मुधा कव । मा अकेर फेर खारी मोट सू मुधा न देख । बा चल्है माथ चाय खातर पाणी चढाय'र कव—आराम तो भाग में ई कोनी लिख्योडो । अठ ता दिन रात बळधा दाई पीसीजणा लिख्योडो है । आराम करणिया अठ बाळण नै रसी । वा खातर तो मा बापा रा घर बण्या है नी ।

इण बगत मा रो तागा म्हारी लुगाई कानी है । म्हारी लुगाई केई महीना सू आपर पीर म है । असल म बी न बठ राखण मे म्हारो ई हाथ है । वा तो केई कागद लिख चुकी क मैं बी न लेवण खातर आय जावू या पछ बा खुद इ आय जाव—ज मैं नइ आ सकू तो । पण मैं बी न मना कर दी । मैं चावू क बा दो च्यार महीना और नी आव तो चोखी है । कारण क बा जद अठ हुव ता मैं पढ़ कोनी सकू । साची बात ता आ है क बी बगत म्हारो मन पढाई म लाग ई कोनी । बस, हर बगत आ इज इच्छा रव क ऊपर माळिय म बठ र बी सू वाता करतो रवू बी न दखतो रवू पम्पोळतो रवू । पण इण घर म आ बात मम्भव कोनी । अ काम इण घर री इज्जत र खिलाप है । इण घर मे ओ गिवाज कोनी क कोई दिन म आपरी लुगाई सू वाता कर । मा रो कवणा है क इसा काम ता अवूत आदमा कर । मा कोनी चाव क मैं अवूत बणू । पण मैं सोचू क इण म खराबी वाइ है । जे आदमी आपरी लुगाई सू बात नई करसी तो पछ बिण सू करयी ?

जीसा र दब्बूपण री घटनावा भी मैं म्हारी आस्था सू देख चुक्यो हू । मनै साबळ याद है क जद दादी सा जीवता हा तद जीसा मा नै हेलो तक कोनी पाडता । विणी रै सैमूडै मा नै बकारता ई कोनी । ब दादीसा र सैमूड टाबरा टीगरा नै गोदी मे ई कोनी लेवता । बा दिना जद सतीश, पुप्पा अर राजू छोटा हा, मा माय सू जे कोई ई वाद कर'र जीसा रै खोळ' मे वठण री बोसीस करतो तो जीसा बी नै अळगो कर देवता । मन रीस आवती । जीसा आखिर इत्ता डर क्यू है ? मैं सोचतो-वा र खोळ' मे बा रा ई टाबर-टीगर आवण न तरसता रब, पण व बा नै गोदी मे लेवण री जगा धक्को देय'र अळगो कर देव । आ सम्कारा री लोथा ढोवणिया लोगा बिचाळ' मनै अमूजणी आवती । झूझळ न्यारी आवती । हाल ई बिया ई मसूस हुव ।

सुधा ओजू न्हारी कर । पण मा राजी कोनी हुवै । मा दो तीन घटा ताई रसोई मे ई बठी रवै । रात री रोट्या भी मा ई करी है । बरतण भाजतो बगत मा म्हारी लुगाई नै ताना देवै ।

बगत गुजरतो जा रयो है ।

मा अब ई घर रा काम कर । आ दिना मा री तबियत घणी खराब रब है । डागदरणी साफ मना कर दियो क मा नै कोई काम नई करणो चाईज । जीसा मा खातर कमर मे अेक थारो माचो बिछवा देवै । मा अब बी कमर मे ई रब । बिना विणी खास काम कमर मू बार कोनी निकळ । अब मा र जल्दी ई टाबर हुवण आळो है ।

००

कुत्ती आघा फुट उण्डी घुरी खोद ली है । ई बगत वा घुरी र बार ऊभी है । कुत्ती र वन अक कुत्तो भी ऊभी है । बठई लो-तीन कुत्ता और आ जाव । कुत्ता आपस मे लडण लागै । कुत्ती थोडी'क ताळ ताई तो डरयोडी-सी क ऊभी रवै, पण पछ वा ई भुसण लाग । कुत्ता लडता-लडता दूर जाव परा । कुत्ती घुरी म बड जाव । बी र कूकरिया हुवण लागै । अेक-दो कूकरिया जलम चुव । हाल च्यार-पाच कूकरिया और हुवला ।

००

मा री तबियत घणी बिगडगी है । बी रो जी धबराव । दिन म कई दफे उलट्या भी कर चुकी है । सगळो डोल टूटतो-सी लाग । आ दिना मा र इजेक्सन भी लागण लाग्या है ।

आज दिनूगं दिनूगे ई घर में महाभारत हुय जावै । बात की कोनी हुव ता ई चग चड जाव ।

—मा ५, आज बोड री फीस भरणी है । सुधा कैव ।

—आज ई ? मा री मर्योडी आवाज सुणीजै ।

—हा ५ ५ । आ आवाज सुधा री है ।

—जीसा कने सू मांग ल ।

—जीसा कयो कै मा सू मांग लै । सुधा गम्भीर ह्वय जाव ।

—म्हार कने-कोनी ।

—भने फीस चाईजै ।

मा भडक जाव—मैं कय दियो नीं कै म्हार कने कोनी । ये सगळा हाथ घोय'र म्हार लार क्यू पढ्या हो ? थोडा दिना पलो सुधीर पचास रिपिया लेयग्यो हो । अब तू जान खावण नै आयगी । थोडा दिना पछ सनीस, पुप्पा अर विद्या से फीस मागण न आ जासी । लोग न तो आपरी श्रीलाद रो सहारो हुव, पण अठ ता श्रीलाद तिन रात छातो रा छोडा लेव । सब जणा भने खावण नै जलम्या है ।

—मैं तो कोनी कैयो क इत्ता पदा कर । सुधा बा चात कम हाथी, जिकी वी न नई कवणी चाईजती । पतो नी वी म इत्ती हिम्मत कठ सू आयगी । बा हाल ताइ कया जाव ही—ओ तो धान सौचणो चाईजतो । जद साबळ पाळ पोस कोनी सको तो पछ पदा पख मागण नै करा । क्यू ता ये दुख मावो अर क्यू म्हान दुखा री भट्टी मे हाथो । सुख सू जीवणो है ता अब ई ई र आगे बा कवणो चाै क पदा ना करा । पण कय कोनी सक । मा रो जोरदार थपट्टी र-गाल माथ पड । सुधा रोवती रोवती आपर कमर मे जाव परी ।

मा र डसक डसक र रोवण री आवाज कमर सू बाट आय रयी है ।

अचाणक मा पीड सू बरडावण लागे । मा दार्तिनी बुलबाय'र सावण खातर कने । सुधा दौड र दाई नै बुलाय लाव । दाई मा र कमर म जाी परी । बा कमरै रा किवाड दक लेवे । सुधा बार ऊभी है । मा री पीड बघती जावे । दरयोडी दरयोडी सिसक्या भी सुणीज ।

बुतडी सात कूकरिया दिया है । धुरी र बार टाबर टीगर ऊभा है । बें कूकरिया न देख है । अक आत्मी आने । वो सगळा टाबरा ी बठ सू हटा दगे । वो को—हट जावो हट जावो बुतडी अवार ई ब्याई है । आ धुरी सू निकळ'र किणी नै खा जावली ।

छोरा छोरी डर'र बठ सू सिरक जावै ।

। कुत्ती कूकरिया न चाट रयी है ।

कमर मे टावर र रोवण री आवाज मुणीज । ओ ओ री आवाज मुण'र सुधा सोच क बी र, भाई हुयो है ।

-छोरी हुई है ! दाई मा नै कवै । आ सुण'र मा रोवण लागै । बारै ऊभी सुधा, जिण थोडी ताळ पली सोच्यो हा क बी र भाई हुंयो है उदास हुय जावै । बी न लखाव क बा दुखा र तळाव मे डूब रयी है । बा पाणी गरम करण खातर रपोई म जाव परी । दाई हेलो पाड क गरम, पाणी जल्दी सू लावो ।

सुधा बाल्टी मे गरम पाणी घोलि । गरम पाणी री बाल्टी भर'र कमर म लेय जाव । सुधा देख क मा री बर्गल मे अवार जलम्योडी छोरी सूती है । मा हाल ताइ रो रयी हैं । दाई मा रो पेट मसळ । मा बरडावै । दाई चिमकै । सुधा कानी देख'र कब—हाल तो अेक टावर और हुसी ।

सुधा चिमक-सी जाव । बा मन ई मन घबगट सी क मसूस कर । अेक साग दो टावर ? अर जे हूओडी भी छोरी इ-हुई तो हूह ! तो बा काई कर सक है । आ काई धी र-हाय री बात तो कोनी क बा आवणिय छणा नै रोक देव । बी नै तो चोखी तरह मालम है क आ आवणिय छणा मे दुख र अलावा की कोनी । बी न आ भी ठा है क इण घर मे जलम सेवणिया री इच्छावा रो कोई महत्व कोनी । बी री तो आ इच्छा ई कोनी ही क बा पदा हुव । बी नै तो ओ भी भीत बाद म, जद तरह-तरह रा कस्ट श्लेण पड्या मसूस हुयो क बी न पैदा ई नी हुवणा चाईजतो । या पछ पदा हुवता ई मर जावणो चाईजतो । बी र बिना दुनिया रो किसो काम रकतो हा ? किसी साम्भर सूनी हुवती ही ?

पल पल भारी हुय जाव । थोडी ताळ पछ दाई री आवाज सुणीज—फेर छोरी हुई है ।

-फेर छोरी ? मा री आवाज । चढती उतरती सासा र बिचाळ । आवाज इसी, जाण छती माच साप आय'र बठयो हुव । अर बाको फाटयो रो फाट्या रययो हुव ।

-फेर छोरी । मुण'र सुधा चिमक । जाण भीत बुरी खबर सुणली हुव । किणी र मरण रो समचार !

सगळ घर मे मातम छा जाी । मा र कमर सू रोवण री आवाज आ रयी है । जीसा आपर कमर म माच माथ निम्त सा हुया पड्या हैं—जाण किणी बा री फीच्या अर मगरा मे लाठ्या मारी हुनी । बी बडबडानी—हरामजादी कुतडी । अेक दो गाळ्या और सुणीज ।

घर रो वातावरण देख'र सागे कँ जागे काई मरग्यो हुवै। सगळा रँ चहरां माथ मौत रो सो सोग पसरयोडो है। मा आपर भाग न कोसती रोया जागे है। अर जीसा मा नै गाळ्या कादुमा जा रया है। लगेतार ।

अबै म्हे नव भाई वन हुयग्या हा—मैं, सुधा, सतीश, विद्या, पुण्या, राजू, रेखा अर अबार जलम्योडी दो छोरया ।

बो दिन दिनुगे जीसा धाप र कानी जीमे । सुधा भी आधी भूखी उठ । छाटोडा टाबर-टीगर धाप'र रोटी खाी । वे ओ रिवाज कानी जाण क छारी जलम्या पछ रोटी नइ खावणी चाईज रोवणी-सी मूरत बणाय लेवणी चाईज जागे कोई मरग्यो हुव ।

दिन बीत जाव । रात र अधार सागे उदासी भी गहरी हुय जागे ।

आगत दिन भोर मे—

तावडो फल रयो है। घर र सामन आळो चोक तावडै सू भरीजगया है। कुत्ती रो घुरी साफ दीख है। बा आपर कूकरिया नै चुधा रयी है। बा आपरी जीभ सू कूकरिया न चाट भी रयी है। पण मा ?

मा आपर कमर मे माच माथ सूती हाल ताइ रो रयी है ।

गली जिसी गली

गली जिसी गली । लोगां जिसा लोग । आदता जिसी आदता । बासती पडी हुव तो माय आनी घास हाखणी । सावळ बळ तो लोगा रो जी सो'रो हुवै आर क्रिणी रो जी सो'रो आपा सू देखीजै कोनी । इण खातर धूवो करणो आपा रो घरम । धूवै सू घासी आवै । आख्या मे पाणी आवै । बळत लागै । गळै मे खरास सगावै । ओ सो' की देख'र आपा नै मजो आवै ।

गाव गळी मे अंकाध रडवो तो हुया ई करै । इण गळी म ई अंक रडवो । सारलें दिना लुगाई मरणी । दो महीना नीठ हुया । मूडाग सीधाळो आषतो देख'र इणर मन मे लुगाई लावण रो कोड जाग्यो । मिनख रै मन मे जाग्या ई करै । आपा रै अठे फगत लुगाई पाळी नी परणीज सक । मिनख नै तो खास हक मिल्योडा है । वो तो पैली लुगाई र दाग माय ई दूजी तुगाई ला सक । पण ओ थोडो सरमदार । दो महीना खटाव कर लियो ।

इण आदमी रो नाव जगनाथ । गळी आळा जग्गूडो कव । आजकाल नूवी लुगाई खातर उण रै लळा पड । अर पछ लोग ई बात सू कीकर टळै ? क्यूकें गळी जिसी गळी । लोगा जिसा लोग । आदता जिसी आदता । बासती पडी हुवै तो आली घास ता हाखणी पडै ।

-तै सुण्यो ?

-काई ?

-जगनाथ नूवी लुगाई लावलो ।

-नी रे ।

-नी रे क्यां री सोळै आनां खरी बात ।

-मानणी म तो कोनी आवै ।

-क्यू, कीई नूवादी बात है काई ?

-नूवादी तो कोनी, पण ।

-पण पछ क्यां री ?

-सावत्री नै मरी न हाल दो महीनां ई कोनी हुया ।

-तो काइ हुयो ?

-बाट ओपती कोनी लाग ।

-ओपती देओपती कुण देखी, आगल न सुगाई री जहरत, ब्याव तो करलो ई ।

-तो ई की तो मिनखपणो ई हुव ? हाल तो सावत्री री राख ई कोनी ठरी ।

-अब परणीज्या सावळ ठरला । मू डार्गे सीयाळो । सीयाळो सावत्री री राख आळी गरमास सू कोनी बट ।

-इसो पछ काइ सीयाळा ? की तो उमर कानी ई देखणो चाईज ।

-पैतोस बरसां म जूण पूरी कोनी हुय ।

-वीस बरसा रो सागो दो ई महीना मे गयो गत्ता सू ।

-म्है ई किसी फालतू बाता म भळ्ळग्यो । खास बात तो बतायी ई कोनी तै ?

-तू पूछी ई बढ ही ?

-ल, अब पूछ लू ।

-पूछ अबार वनावू ।

-ब्याव कठ पक्को हुया ?

-घूडजो री पोती साग । गिरघारी री वटी है नी भायला ? ।

-सतूडी ?

-हा ऽ वा सतूडी ।

-बापडी बिना मा री छोरी ।

-हा ऽ बापडी बिना मा री छोरी ।

-पण भायला, म्है सोचू व उण री मा जीवती हुवती तो ई ओ सागी साग हुवतो ।

-नी रे । मा रा जीव दूजो हुव ।

-जाप कुण सो कसाई हुव ?

-कसाई तो कोनी हुव पण ।

-पण पछ क्यारी । ब्याव मा हुया कोनी सज । अँढो तो पीसां स सज लाडी ।

-अर पीसो आ वन कोनी ।

-इणी खातर तो क्यू । मा जीवती हुवती तो ई ओ सागी साग हुवतो ।

-पण इण जगूड री अक्कल माथ भाठा किया पड्या ?

-क्यू, भाठा पडण री काइ बात ?

-क्यू किणी कवारी छोरी रो जमारो विगाड ?

-ध्याब हुयां आग ई किणी रो जमारो विगड्यो हुवला ?

-बा वापडी चवद बरसा री नीठ, अर मो पैतीसा पार ?

-मरद री उमर कोनी देखीज ।

-अवार नइ देखो तो ना दखो, पण दस बरसां पछ तो उमर मत्तै ई निग आ जासी । पछ उण बगत ?

-इण सू तो चोखो हो किणी विधवा नै नात लेय आमतो ।

-हां 5, थारो कैवणो है तो ठीक, पण ।

-विधवा नै गळ कुण बाध ?

-जीम्योडी घाली मे कुण जीम ?

-बोदा जूता कुण पर ?

-अठ्योड कप मे कुण पीव ?

-अर बोई केरू मूड आग अठ्योडो ? ठा नई हुवै तो कोई बात कोनी ।
आंस्या दोखती माखी किंयो मिटीजै ?

1 -आ बात कोनी । धो गयो तो हो बात करण नै । बा है नी राधा मास्टरणी
पण उण ना कर दी ।

1 -गली बळ दीखै रांड ।

-की तो भोगना फोडणा हा कै दोनो सांरू ई सांचळ रैवतो ।

-दोना रा टापर पाछा बध जावता ।

-पण म्हारी समझ मे कानी आयी क बा नटी वधू ?

-बा कैयो वताव क जगूड र टाबर घणा है ।

-घणा पछ कुण सा सी पचास है । पाच तो टाबर है ।

-पाच टीगर थोडा कोनी हुव ?

-तो कुण सा घणा हुवै ?

-आज र जमाने घणा ई है ।

-हां 5 भाईडा । आजकाले तो दो-तीन सू बत्ता टीगर कानी पोसाभै

-इणी खातर वा तयार कोनी हुई हुवला ?

-म्है कुणसो कूड चोलू ?

-अरे, आ तो बता उण मास्टरणी र कितीक रेजगी है ।

-उण र रेजगी खिडी ई कोनी ।

-भगवान भली करी !

- पण बीन अब रेजगी चाईज ।
 -नी रे ।
 -मा री सौगन, बीं नै चाईज ।
 -तो पछ जग्गूड न नटी ब्यू ?
 -जग्गूड र टाबर कोनी हो सक ।
 -हा ऽ रे, इण तो लारल बरस नसबदी करवाली ही नीं
 -साची कव ?
 -तू कुणस गाव मे वस ? सगळें मुलक नै ठा है ।
 -जणां तो ओ सरासर जुलम है ।
 -काइ जुलम ?
 -जग्गूड रो सतूडी लावणो ।
 -ब्यू ?
 -सतूडी न टाबर चाईजला अर ओ नाजोगो है ।
 -आगली र टाबरा नै ई आपरा समझ र परोट लेसी ।
 -हा भायला ! टाबर है तो छोटा ई । हिल जाती । वा न मा मिल जाती
 अर जग्गूड नै लाडी ।
 -आगली रा भलाई कित्ताई हुवो । खुद री कूख रा टाबर तो खुद रा ई हुव ।
 -अब नरक नई भुगत्यो सही ।
 -नरक किया ? लुगाई खातर मा वणणो लाजमी ।
 -हा ऽ मा हुवणो तो लाजमी ।
 -बाझडी रा तो दरसण ई खोटा ।
 -दरसण ? अरे बाझडी रो तो गळी म बासो ई खोटो ।
 -आपा ब्यू दूबळा हुवो ? आपा नै काइ ?
 -गळी म गळत काम हुव अर आपा बोला रवां आ कठ रो मिनखणो ?
 -बात तो थारी ई ठीक है ।
 -पुलिस म रिपोट करूया ओ ब्याव रक रक ।
 -छोरी नाबालिग है मा-बायरी है ।
 -छोरी र माम न कवा तो क्साक रव ?
 -हां ऽ बो है तो चालतो पुरजो । अयाव टाब सक ।
 -आवो, आपा उण र माम कत चाला ।

यल्ली रा लोग । लोग रा मू डा । मू डा मे जीभा । जीभा मे जहर । बीनणी रो मामो । माम रा कान । कान काचा । जहर भ्र्याडी जीभा । काचा कान । घुमावदार बाता मे सवाल ई सवाल । सवाला रा उथळा । उथळा पछ फेर सवाल । फेर उथळा । फेर सवाल । भ्रव सोचा तो भ्राह्या भ्राग अधारो ई अधारो । म्है घा जुलम नो ह्वण दू । अेव चिरळाटी । पगा मे बीजळी । डील मे भ्राघी । भ्राह्या मे साय । मू डे मे गाळ्या रा बोफणिया भाठा ।

—सतूडी भ्रो सतूडी !

—कुण है कुण ?

—म्है थारो मामो । तू माय काई करे ?

—वैठी हू ।

—थारो बाप कठै ?

—जीसा हेठै है ।

—ऊपर हेलो पाड उण कमीण नै ।

—ये अठै राड करण नै घाया हो काइ ?

—म्हारै सू फालतू रा जीभाटा ना कर । हेलो पाड उण हरामी नै ।

—जीसा, भ्रो जीसा !

—अरे, ये अवार किया घाया ?

—था सू पानो पढ्यो जणा !

—वाइ बात है ?

—छोरी रा भाग क्यू फोढो ! जाणता थवा ई खाड मे क्यू न्हाघो ?

—हाथ तो पीळा करणा ई पड !

पण ये तो काळा करण री तेवढी हो ।

—ये भावळ-भावळ ना बोलो ।

—काई कर लेसो म्हारो ? की नव री तरह करणी हुवै तो कर दियावो ।

—म्है क्या री नव री तरह करू । गरीब-गुजारा करू म्हारा ।

—गरीब-गुजारी करो अर भलाई म्हार भाय एग । म्है भो ब्याय कानी

ह्वण दू ।

—ब्याय तो हुवला ।

—म्हारी स्हास भाय ई हुवला ।

—घा पारी जयादती है ।

—म्है म्हारी भापकी रो जीवन नरव बोनी दयण पावू ।

-घर बसण दो-व नी । हाथ जोडू घान ।

-म्हें घाने एक बात कय दी नी, म्ही ब्याव कोनी हुवण हू ।

-धीज सू म्हीचो !

-सोच लियो । दूजवर नै कोनी देवणी ।

-तो पछ ठीक है । इत्तो ई गुमज है तो दूजो बर सोध लावो । म्हने तो इणी साव ब्याव करणो है । तेल हळनी चढ्योडी म्हारी छोरी कुवारी कोनी रव । म्हा बात कान खोल'र सुणलो । समस्या !

-इत्ता बरस घर मे खटायी तो अब कुण मी दो च्यार म्हीतां म्हीर कोनी खटावे ?

-नी, अब च्यार दिन ई कोनी खटाव । काल रै साव ब्याव हुवला ।

-म्राज म्हारी बन हुवती तो ?

-अेढो वाता सू कोनी सज समस्या ! घान भाणजी री इत्ती ई चिन्ता हुव तो काल ताइ दूजो बर सोध लाया । नीतर अ हाथ इणी साव पोळा हुवला । म्हन दो छोर्या म्हीर परणावणी है हाल । आप अठ सू पधारो ।

-जावू हू, पण याद राक्या, म्ही ब्याव तो म्हें मरया ई कोनी हुवण देवूला !

००

घोज दाब र पाळा बावडिया केई जणा । बा बने अेकाअेक खबर । आख दीठ गवाह । जिको की नी हुयो, वो तकात जाण ! अ वता सक क म्हाग काई हुवला । दूजा रो भलो चावणिया आय पूग्या ।

-घारो साळो म्राण गयो है ।

-था कणा देण्या ?

-अवार मिल्यो ही म्हने ।

-काई कव हो ?

-कवती क रिपोट लिखा'र आयो हू ।

-काइ लिखवायो ?

-क म्ही ब्याव जोरामरदी है । छोरी अग ई तयार कोनी ।

-कूडा रो श्रीपूत कठ ई रो !

-आ यारी लिखवायी क छोरी बारह बरसा री अर बीद चाळीस रो ।

-इसा कोडिया न राम ई कोनी मार !

-म्है चालू । थे थोडा सावचत रया । अर हा 5, आपणी बायली नै समजा दिया क कोई पूछनाछ सारू अब तो खुद न सोळ बरसा री बताव । केव क ब्याव न राजी हू । किणी भात री जोरामरदी कोनी । समस्या ! बिया तो पुतिस मे आपारी

संघ पिछाण है। जरूरत पड़्यां की न की उपाय कराला ई। पण राम कर जरूरत क्यू पड ? थाण अर अस्पताळ रा ती दरसण ई छोटा ।

-थांरो कंवणो वाजिब है ।

-थे बायली नै सावळ समझा दिया, भलो ! आ नीं हुव कै आपा तो उण र भल नै करां अर बा खुद ई नट परी'र आपा नै टट मे पजाम देव ।

-आ ई कद ई हुव ?

-बळती बाज भाई । सावचेती राखण मे काइ हरज ?

-आ बात तो है ई । म्है अंबार ई उण नै समझाय देस्यु ।

-ठीक है । म्है चालू । सावचेत रया ।

-ठीक है सा, भगवान भलो कर थारो ।

गळी मे मामो । माम सागें पुलिस । पुलिस पूगताई घर मे रोया वूको । गळ्या । करमा रो रोवणो । भगवान नै अरदास परसाद । देवी देवताथां रा बोलवा ।

or

गळी मे खळबळ । केई उणियारा आय आपरा घरा आंग । केई डागळा सू गळी मे देख । केई घरा सू बार । केई फुटपाथ माथ । अेक नै देख'र दूजो आय । दूज नै देख'र तीजो । तीज नै देख'र चौथो ।

-अब ठा पडसी भाईजी न ।

-कोई चोरी करी काइ आगल, जिबो ठा पडसी ।

-अ फेरा तो राजी बाजी रा ।

-जे छोरी नटगी तो ?

-छोरी नै जीवणो कोनी काइ ?

-आ बात तो बेजा ।

-ओ चाळीस रो, छोरी बबद री ।

-पतीस मे तो गोळ ई कोनी ।

-रामूड सू कित्तोक बडो है ?

-अेड-गड ई है ।

-रामूडा तां तीस रो है ।

-जणा ओ पतीस रा कठ सू हुयग्या ।

-तो ई भायला, पाच टाकरा रो बाप तो है ई ।

—टावर तो पाच काइ सात हुय जाव इण उमर ताइ । आपण भठ तो ऊगतां न ई परणाय देव !

—पण तो ई छोरी तो छोटी, आ तो मानणी पडसी ।

—घारो माथो छोटी ! अठार सू ऊपर बळ !

—सुणी है, डागदरी जाच हुवला ?

—जाच डागदर कर क डागदरणी ?

—डागदरणी ई करती हुवला ।

—डागदर कर तो आ किसी डरण आळी है !

—दोलड हाडा री है ।

—पर्योडी-प्रोद्योडी हुव तो दो टावरा री मा लागै ।

—लागो भलाई । मा हुवण रा तो सपना ई लेसी ।

—घणो कोड हुसी तो पाडोस्या नै ववार लेसी ।

—हा S, पाडोसी किसा मरग्या ?

—ही ही-ही !

—हैं ह हे !

—पुत्र रो ओ काम करण नै तां म्है ई तयार हू ।

—म्हार थका ई ?

—तू म्हार सू यारो कद ? तू पली, म्है पछ ।

—जीवतो रह तू !

—अरे, तू काई सुण ? जा देख र तो आ, बा र घरा काइ साग है ?

—अबार जावू ।

—गिरधारी रो मन किया मानग्यो दूजवर नै बेटी देवण सारू ।

—आग भूवाजी भी काइ कर वापडा !

—म्है ता सुणी क बो दा हजार सामा लिया है ।

—ओ तो बटी न वचणो हुग्यो ।

—इया ई तो घरती रो बोझ बघ । बाप हुय र बेटी नै बेच !

—बाप क्या रो कसाई है !

—हाल तो दो टारया और बठी है ।

—सुण्यो क बडोडी ई पाछी घरा आयगी ।

—सासर आळा काड दो काइ ?

—छोर छोड दी ।

- छोरी र टावर-टीगर है'क नी ?
 -अब कठ ? अंक छोरो हुयो, जिको चालतो रयो ।
 -ऊपर आळीं रो मरजी !
 -मौत माथ मिनख गो काई जोर ?
 -यन की ठा, क्यू छोडी ?
 -छोरी रो चाल चलण की ।
 -गिरधारी रा टीगर इसा कोनी ।
 -अठ काई, टाळ सही ! म्है तो सुणी जिसे कवू ।

-लुगाई रो चिरत अर मिनख रो भाग ता भगवान ई कोनी जाण, तू-म्है
 किस खेत रो मूळी ।

- किण सू लाग्योडी ही ?
 -काक सू ।
 -लिच्छूड साग ?
 -हा ss ।
 -लिच्छूडो तो इसो ई रळियार । डाकण ई अंक घर टाळै, पण बो नी ।
 -पोत चत्रह बीकर आया ?
 -अ पाप ढक्या कित्ता'क दिन रव ?
 -लो, सन्नूडो आयग्यो ।
 -काड खबर लायो रे ?
 -याणदार छोरी सू वात करग्यो ।
 -अच्छा ।
 -अपार पांच दडोड चेप्या हुवला ?
 -बो दावळ देय'र ई जीव काढ देव ।
 -सतूडी तो लैगो भर दियो हुवला ?
 -ही-हीं ही !
 -दांत क्यू काडो ? लैगो घोवण न घाने ई बुलाया है । पण पत्नी पूरी बात
 ता सुणो ।
 -तू काई हुसियारी छोट । वेगो-सी-क कैव बळ नी ।
 -याणदार पूछ्यो—माडाणी परणीज कं मरजी सू । सन्नूडी कयो—मरजी
 सू । किणी रो दबेलदारी नी ।
 -आ बात कयी ?

- हां SS, बिलकुल आईज बात कयी ।
 -छोरी क्या री दादी है, दादी ।
 -आजकाल री छोरया दादी हुय र ई जलमें ।
 -छोरी निक्की हिम्मतवाली ।
 -जगू मास्टर न फेंपया अणा देसी ।
 -आ लखणा तो ओ ई लाग ।
 -जणां तो फेरा आज ई हुवसा ?
 -आज नई तो काल, साढो साढी तो ले जावला ई !
 -माम फालतू ई माथाकूटी करी ।
 -भूड रो ठीकरी आवणो हुव जणा इयां ई आया कर ।
 -अेकर तो बिघन घाल ई दियो ।
 -अब बी रो ई माजनो हल्लको हुयो ।
 -कोसीस करी आगल । पार नी पढी तो नी सरी ।
 -नीच है साळा ।
 -और नी तो काई ? इत्ती भागा दीढी करी अर व्याव ई कोनी ढरयो ?
 -बी बगत तो इत्ती हैन-तन कर हो काई खागो कर लियो ?
 -छाछ दाई मूडो लियां कठई पढ्यो हुवला ।
 -गुटको लेय र आपरी लुगाई र घाघर वन बठो रोवैतो हुवला ।
 -अब क्यार दिनां ताई ता घर सू बार मूडो काढ कानी ।
 -म्हन मिलण न माजनो भाडूला ।
 -दो घावा घूड म्हार नाव री ई हाख्य ।
 -तो म्हार नाव री ना भूली ।
 -दो म्हारी ई याद राखजे ।

००

जगन्नाथ रो घर । घर मे स तूडी । टाबर साच - मा मिलणी । जगन्नाथ सोच—अब सीयाळो सारा ई निसरसा ।

गळी मे यारा-यारा लीग । यारा यारा बिचार । कोइ कव-बापड रा टापरो बधम्यो । कोई कव—टीगर बापडा नरनवाडो भुरतलो । माई मा टाबरा नै कद परोट्या ।

इतिहास देख लो ।

गञ्जी रा लाग । लोणा र मून म इतिहास जाणण री हूस । हूस सू उपज्योडो हेत । घर हेत र खेत मे जगन्नाथ रा टाबर ।

-अरे मनूडा ।

-काई ?

-अठी आव कनी ।

-ल, चोकलेट खा ।

-नूवी मा थारो लाड राख क नी ?

-राख ।

-थाने फलका लूखा देव क चोपड्योडा ?

-चोपड्योडा ।

-साची कव है नी ?

-म्है कूड क्यू बोलसू ?

-थाने कूट तो कोनी ?

-ऊ ऽ हू ऽ ।

-बवती तो हुवला ?

-नई तो ।

-मनूडा ?

-काई

-नू कठ सोत्रे रे ?

-म्हार भाई-बना कने ।

-मा कने कोनी सोव काई रे ?

-ऊ हू ऽऽ ।

-थारा कपडा कुण घोवे ?

-नूवी मा ।

-कड क्यू बोन रे । काल म्है थने देवपो हो डागळ सू । तू कपडा घोव हो नी रे" ।

-मा नै ताव चट्टयोडो हो ।

-ताव चट्टयोडो हो ?

-हा ऽऽ ।

-सुणपो, सन्तूडी नै ताव चट्टण लाग्यो है ।

-हो-ही ही ।

-है-ह ह ।

- तू जा लाडी, रम । भा ल, अंक चोक्लेट भळ ?
- देख सन्तूडो रा मजा । ताव रो मिस कर'र टीगरा बन सू वपडा घोवाव ।
- घोडा दिन ठर लाडी । राट्यां करवासी घर भाडा मजवासी ।
- जगूडो सन्तूडो रो लाड तो खासो राख ।
- दिनूग टूटी माथ पाणी भर हो ।
- ही ही ही ।
- हे हें हे ।
- मुणो भाई वाचण्यां ।

००

सगळ ही सावत्री घर सगळ ही ही-ही ह ह ! कठ जावं घर काई कर ? बापडी जीव क मर ? इण नै परणीज ता घयो उणन परणीज तो घयो । घर नी परणीज तो ई घयो । क्यू क ठोड ठोड, गळी जित्ती गळी । था-म्हा जित्ता लोग । आदता जित्ती आदता । बासती पडी हुव तो माथ आली घास तो न्हाखणी ई पड !

००००

अरे ! इत्तो दुख !

—लालजी मरग्या !

आ सुणताई वा सगळा रो जीव आकळ बाकळ हुयग्यो । अंकर तो वा र मानण मे ई कोनी आयी । आज दिनुग ई तो वा रो भाई छुट्टी बधावण खातर अरजी देयग्यो हो । पण सजोग री बात । अवार खबर लावणिया पण वो ई !

लालजी लारल केई वरसा सू मादा चाले हा । सरू मे तो बस इत्तो ई हो क बगत-वेबगत माथो दूखण लाग जाया करतो हो । उण बगत वेबगत र दरद री परवाह वा कदई कोनी करी । पण ओ सिलसिलो जद केई महीना ताइ चालतो रया तो सेवट वा नै हार'र पी बी एम अस्पताळ जाय'र डागदर नै दिवावणो ई पड्यो । डागदर कयो क 'ग्रेन ट्यूमर' है । वा नै अस्पताळ म भरती हुवण री सलाह दीवी । पण आ बात वा र घर आळा र जची कोनी । अस्पताळ अर कचेडो सू राम बचाव । व खुद आ ई मानता । डागदर र कय रो की असर कोनी हुयो । भरती हुवण री बात टाळ दी । पण अक् दो-तीन महीना जखता नी जखता तकलीफ घणो बघगी । अक् दाव जण ई दरद हुवण लागतो । दरद कई दफ तो इत्तो हुवतो क ब बोवाड सा करण लागता । या पळ कणाई कणाई माथो पकड'र सूना-सा हुय'र माच माथ पड जावता । इणी बिचाळ ब झाडा जतर करवाम'र हारग्या । दूण टोटका सू रती भर ई फायदो कोनी हुयो ।

लालजी नै अस्पताळ म भरती हुवणो पड्यो । जात्र पडताल पळ इलाज सरू हुयो । व अढाई-तीन महीनां ताइ भरती रया । इणी बिच्च वा न खुद नै फायदो पखायो । रोग कटतो देख'र डागदरा नै खुसी ही पण अज ताइ ट्यूमर जडा मूळ मू कटी कोनी । डागदर सलाह दीवी क वा नै दिल्ली जाय'र आप्रसन करवाणा पडसी । विना आप्रसन बचण री गुजाइस दर ई कोनी !

लालजी र घर आळा साम बेजा अक्यायी आयगी । अक् वर ती वाइ वर ? दिल्ली जावण री सरधा कोनी अर इलाज नी करवाया सासा रा ठिकाणा कोनी । किणी बगत सास रो पखेरू देही र पिजरं सू उड सक—पुंरर ! अर आ हाणी अणहोणी हुया घर उजड । टाबर-टोंगर हळ ! रामजी री दया सू घर भर्यो पूरो । तीन छोऱ्या, च्यार छारा । अंक् छोरी परणायोटी, दो कुचारी, परणावण साव, बडाडो

छोरो परण्योडा । घर सू बेट्टी सासर गयी ता बेट री बहू घरा घ्राभगी । बाबा मर्या अर गीगली जाई रया तीन रा तीन । छोरो काम र नाव सडवा माय जूता रा तळा घसतो फिरतो । बाकी तीनू हाल ताइ पड हा ।

डागदरा लालजी न अस्पताळ सू छुट्टी देय दी । या री राय मुजब दिल्ली जावणो जरूरी हो पण घर री हालत देखता आ पार पडती निग घ्रायी कोनी । सेवट घर मे ई माचो झाल लियो । अर साथ काम करणिया कने अ समाचार आवण लाग्या क लालजी न चेतो की कमती ई रव । क चेतो आव तो की न-की बडबडावता रव । क बारो खावणा पीवणो दिनोदिन कमती हुय रयो है । क वा न घायो पीया जर ई कोनी । क अरवे डील मे सून सी वापरण लागी है । क घर घ्राळा घमच सू दूध दळिया देव । फेर दिनोदिन हालत विगडण रा समाचार मिलता रया । सायी वेली उठता बठता वा बावत यात क लिया करता । सगळा इणी कोसीस मे रवता क दपनर सम्बधी वा रा काई काम नही अटक । भाग-दोड कर र वा रो काम पली कराय देवता । पण अर नी तो दोडणो रया अर नी इण री जरूत । सो खेल ई खतम हुयग्यो । अवार अवार वा रा भाई कयग्यो—लालजी चालता रया ।

००

सगळा जणा स्टाफ रम म पूग्या । इचाज साब न ई इण बात री खबर मिलगी ।

—अर काइ कर्यो जात्र । हैडमास्टर साब ता हाल घ्राया कोनी ।

—आ हैडमास्टर रो बच्चो कदई वगत्तर आव बळ ई कोनी ।

—क्यू आव, लार खूटो है । रमूल घोषो करण लाग्यो—या म्हा दाइ चोदू मोदू घाडी है ।

—कानून कायना सगळा खातर बरोबर । इचाज सार्मे देख र सूरजमल कयो । बात आग गाळ या री गळी म बड, इण सू पली ई चपडासी नत्यू आयर खबर दीवी—हैडमास्टर साब आयग्या ।

—या त करया मोहन बोल्यो ।

—आवो आपा ई दरसण करला । आ कयर नरेद्र स्टाफ रम सू बार आयग्या । बाकी लोग ई साग ।

हैडमास्टर न ई तालजी र रामसरण हुवण रा समचार मिलग्या हा । सगळा र भेळा हुनता ई कयो—छोरा नै मदान मे भेळा करर सोग सभा कर र वा नै तो छोड दो । पछ आपा नार चालसा ।

सोग-सभा कर'र छोरा नै छोड़्या पछ मास्टर लोग बाग म जाय'र ऊभग्या !

-नारायणजी ! हूडमास्टर हेलो पाड्यो । नारायण बा कानी जावण लाग्यो इत्त म ब खुद ई बाग कानी आयग्या । पूछ्यो—दाग किक्तीक बजी ताइ हुवला ?

-बारह अेक तो धज ई जासी ।

-वा र भाई सू पूछ्यो काई ?

-अदाज सू ई कवू । आ कामा म सगा परसगी भेळा टुव इत्त की देर तो लाग ई । फेर सामान सूमून चारा लावणो हुव ।

-किणी नै भेज'र मालम करवावा काइ ?

-जिया ठीक समझो ।

-थे जाय आधो ।

-हा, देख'र आवू ।

-अौर कुण जाण ?

-नत्थू नै भेज दो ।

हैडमास्टर कमर माय गयो । पछ घटी बाजी । नत्थू माय गयो । धार आयो । साइफल लेय'र रवाना हुवतो दीट्यो ।

नारायण बाग कानी आयो तो गजेस पूछ्यो—काइ कब हो फददूमल ।

-नार चालण री बात कर हो ।

-इण तुरकड रो बठ काइ काम ! भगवान आपरी जनऊ सम्भाळता कयो ।

-म्हार तो आपर कम जच । गिरधारी री आवाज ।

-कट्टा फट्टा स ई नार चालसी काइ ? मोहन कवण लाग्या—धामणा रै नार मे आ बकरा खावणिया री काइ जरूरत ? अर इणी बिचाळ की न हाजत हुयगी । कान र जनेऊ रो ओटो दय र पाखान कानी गयो ।

-पण म्है कँवू हरज काँइ है ? कलास बोल्या—आपा साग काम करणियो भाई मर्यो है । अ बाता साव ओछी लाग ।

-अौर नई तो काई ! आदमी आदमी सब बरोबर ! कट्टा या धामण री काई दान ?

-आपो आप रा सस्वार । कय'र नारायण बात बदळण री कोसीस करी । धो जाणतो हो कै जे बहस छिडगी तो पछ गयो घटा भर री । फालतू री खपत । छेकड हुव—तू-तू म्है म्है !

—चाय पी'र आवा । आवो नारायणजी !

—हा ५५ । व टुरग्या ।

साडी दस पूणी इग्यारा हुयगी ।

आपोआप री साइकला सम्भाळण लाग्या । वेई जणा आपरी साइकल लेय'र वार फुटपाथ कत ऊभग्या । च्यार पाच जणा हैडमास्टर र कमर माय हा । व वा न उडीकण लाग्या ।

—गाडी मे हवा कम दीख । सम्पत आपरी साइकल रो लारलो टायर अगूठ सू दबाय'र देखता कयो ।

—हवा तो म्हन ई भरणी है । दिनुग आयो जणा ई कम बळती ही । कय'र सोहन बी र साग सामली दुकान कानी टुरग्यो ।

—सबनै चालणो जरूरी है काई ? किसन पूछ'र आपरी गुद्दी कुचरण लाग्यो । बी र सामै ऊभा मास्टर बारी बारी सू बी न देखण लाग्या ।

—गोरमेट रो इसो कोई नियम कोनी क जावणो जरूरी हुव । नारायण थप्पड मारु उयळो दियो ।

घडी खड सारु उठ मून रा तीखा खीला खिडग्या । कोई सामली भीत माथ चेप्योडा फिल्मी पास्टर देखण लाग्यो तो कोई आभ कानी ।

अेक दो जणा उबासी खायी । अेक जण खखार थूकयो ।

—गिरधारी अर गणेश उठ सू खिसक'र अेकानी गया । गिरधारी पूछ्यो—
फिलम विसी लाग्योडी है ?

गणेश फिलम रो नाव बतयो । नाव मुणताई गिरधारी न जाण खजानो लाधयो । होळ सा क पूछ्यो—चालसी ?

—आज ? बी री आठया की चवडी हुई ।

—अोर नी तो काई आगल जलम मे ? रीसा बळ र थूकता कयो ।

—जाबरु ई भू डा लागसा, की तो सोच ।

—आपा कुण सा ढाल बजार जावा हा । चुपचाप रस्त माय सू खिसक जासा ।

—ठीक है । उण होळ सी क हा भरी । दोनु पाछा आय र सगळा मे रळग्या ।

नत्यू चाय लेवण नै जावतो दीधयो । नारायण हेले पाड्यो—अरे नत्यू !
व लाग माय सू निकळसी क नई ? काई करण लागग्या ?

—जिणणिया नै घोबा देव । गिरधारी बाल्यो—वी नै झाल आवै ही । टुरता ई आगै रस्त माय सू खिसकण री सोच हो ।

—हैडमास्टर साब की काम भोळाय राख्यो है । पूरो कर'र पाच मिट मे आवै ।

—इण फहू मल नै स काम अवार ई सूझला ।

—वा रो चाज कुण लेसी ?

—चाज लेवण मे काई है कोई लेय लेसी ।

—वमती-वेसी कुण भरसी ।

— वा र चाज मे काई रोळो कोनी । व आदमी काई, हीरा हा । सम्पत बोल्या ।

—हा S, लालजी आदमी काई, हीरा ई हा ।

—म्है तो लारल दस बरसा सू वा र साग हू पण मजाल क वी आदमी किणी नै दो ओछा लफज कया हुव ।

—धीजो अर नठाव ई गजब रो । सौ तकलीफा थका ई किणी आग कदई रोवणो कोना रोवता ।

—हारी वेमारी मे दूजा र घाडा यारा आवता ।

—लेण देण रा इत्ता साफ क ना पूछो बात । कोई पाच पच्चीस वा रा भलाई खायग्यो हुव, वा किणी री फूटी कोडी ई राखण री कोनी सोची ।

—पण कव है नी कँ भला आदम्या री दुनिया म ठोड कठ ? वा नै तो भगवान ई पली बुलाव ।

—आदमी लाखीणो हो ।

गिरधारी री झाल माय री माय बध्या जाव ही ।

बाकी मास्टरां र आवता ई सगळा टुरग्या । रस्त म गिरधारी अर गणेश चुपचाप खिसकग्या । नारायण कनै जाय'र रघुनाथ होळ-सी क बोल्थो—यारा, म्हैने सुगाई नै स्कूल छोड'र आवणो है । म्है चालसू । अर बो टुरग्यो ।

रस्त मे अेवर फेर घुसर फुमर हुई—ओ तुख बठ काई करसी ? पण काई करसी-काई करसी करता-करता ई लालजी रै घरा पूगग्या ।

अरपी हाल ताई उठी कोनी ।

लोग भल्ला हुयोडा हा । माय वार रोदणो कूकणो चालू हो । गळी गुवाड रा टीगर अठी उठी उछळकूद कर हा । बूढा बडेरा अर समसवान लोग डीगरा नै अेकानो भेज हा ।

सामल घर र डामळ री भीत माय तीन जोध जवान छोर्या ऊभी ही । ऊमर रो उठतो उफाण । दो च्यार मास्टर गरी मीट सू वठी नै देखण लाग्या । गळी रा छोरा पली सू बा नै ई देख हा । बाता कर हा ।

-बिचली धाकड ह ।

-अेडनी छेडली पण माडी नी ।

-गाल साडी आळी चालू दीख ।

कन ऊभ आदमी खखारो कर्या । गुणका हाखणिया नै खखारो खारो लाग्यो । बाता रा परसग बदळग्या ।

-काई वेरी है ? अेक आदमी नै धोळ केसा आळो आदमी खून कानो ले जावता पूछ्यो ।

-बस, प द्र बीस मिट म रवाना हुवण आळा हा ।

-आ सो इतजाम क्रिया ?

-अवार तो म्है ई ।

-भाजाई कन सू मांग्या कोनी काई ?

-वठ काई पड्यो है ?

-पूछणा तो हा ।

-पूछ्यो जणा क्या क बीमारी म लागग्या । अक कन फूटी काई ई कोमी ।

-गणा गाठा तो हुवला ?

-आधा पडधा बीमारी म वेच लाया । थोडा घणा हुवला ।

इया पछ काई, वार मास भुवाजी सू बाधडा करतो हा काई ? पांच छव सो नडी तो निनखा ही ।

-तीन साल सू बीमारी म खरचो हुवता रथा । या पछ आभ सू थोडी बरग्या । ओ तीजो आदमी अवार अवार बठ धाय र ऊभ्या ।

-धूड हाखो खार हुय माय । अवार तो काम सजग्यो । आग काई करला ?

—म्हार तो मगज काम कोनी करे । लुगाई केने सू गणो गाठो मागू तो वा सीधी चट्ट पड अर भोजाई केने सू अवार मागू तो भूडो लागू ।

—भूडो लागण री कोई बात कोनी लाडी । दुनिया मे पीस रो काम तो पीस सू ई सज ।

—म्हारी तो च्यारू कानी मौत है । करू तो म्है पीचीजू अर नी कर्या यात जात आळा वटका भरसी क बरोवर रो भाई लार हो तो ई धूड उडी । हाल तो स काम बाकी पड्या है । तीसरो त्रिया वारियो अर बो डुसका भरतो भरतो घर मे गयो परो ।

थोडी ताळ पछ अरथी उठी ।

रोवा कूकी अर हेला हवा म भरोजग्या —रे जीसा ओ S S, हाय रे म्हारा भाई, तन आ काई सूची ।

—राम नाम सत है सत बोल्या गत है । चालो चित वासी बकुठ वासी जहा बहती गगा, बहा मुगती पासी ।

रास्त म फूत्या अर पीसा री उछाळ ।

००

लालजी ने मर्या ने तीन दिन हुयग्या ।

बा र चाज री लेवा देवी हुयगी । हैडमास्टर म्हाफ री राय लेय'र लालजी र परिवार री पीसा टका सू मदद करण री योजना बणायी । तय हुया क हरेक मास्टर कम सू कम पाच रिपिया तो देव ई । हरेक क्लास मे छोरा दीठ रिपियो रिपियो मगावा । इया सात आठ सी रिपिया भेळा हुवण री उम्मीद वधी । की रकम 'टीचस वेलफेयर फण्ड' माय सू मिल जासी । कानून मुजब राज अर जीवण धीम सू जिको की मिलणो हुचला मिलसी ज ।

अवार मास्टर बाग मे ऊभा हा ।

—भायला आ पाच रिपिया देवण आळी स्कोम ? 'ठीक या गळन' आ बात गिट्योडी राखी ।

—क्यू धार जची कोनी काइ ?

मूड आग सवाल आय पड्यो जणा बगला कानी देखतो बोल्तो—है ता पण ।

—ठीक है जणा पछे पण क्या री ?

—आपण बो मुडदाफण्ड बणयोडो है नी ?

टीचस वेलफेयर फण्ड' आपसी बतळ म मुडदाफण्ड रें नाव सू नामी । जद कद ई इण फण्ड खातर की देवणो पड तो चाय पीवण नै भेळा हुव बी बगत आ बात चाल ई—आज मुडदाफण्ड मे पाच रिपिया हास्या है । कदाच की घरम हुव तो ।

—बी फण्ड सू तो मिलसी ज । बी र अलावा आपा की और कर लेवा ता काइ हरज ?

—च्यार पाच मास्टर भेळा हुयग्या ।

—पाच रिपिया खातर घरती क्यू हुव ?

—अरे ओ चम्पालाल, दो फिलमा ना देख्य ।

—हा ५, और काइ ?

—तू कदेई चामडपणो छोड्या कर ।

—म्हारो मतलब ओ कोनी । थ लोग बात न कदेई सही ढग सू समणो ई कोनी । म्है आ कवणी चावू क मुडदाफण्ड ई गळत है । अक तो किणी र घर सू आदमी जाव अर आपा बठ सेफावाई सो मूडो कर र पाच-सात सो रिपिया देवण न जावा । बी री मोत रा मोल । म्है पूछू, बी री जिन्दगी भर री सवावा रो मोल इत्तो ई खाली इत्तो ई है ?

—तो पाच-सात हजार रो इतजाम करल्यो । पाच तो दिरीज कोनी, पच्चीस पचास देवण री बात कर बेटा ।

—अरे ओ फिलासफर, तू चुप रह लाडी ।

—इण बात माथ गौर कर्यो जाव ।

—मगजमारी तो करो ना जिण न नही देवणा मती दो ।

बाता रा बवडर चालता रया । अठार्दस जणा माय सू दो जणा साव नटग्या । बा री निजरा मे आ फण्ड ई फालतू हो ।

तीनेक दिना म सात सो रिपिया भेळा हुयग्या । रिपिया कद दवणा इण बाबत मोटिंग ही । लालजी रा बीम रा कागजात तयार करावण खातर, सोहन आप्ति गयोडो हो । बो आयो जणा बी र हाया म पाइला ही । कमर मे आय र बठता ई उण कया—लालजी आदमी हा भागी !

—देखो, काल ई सरकारी आदेस हुआ क सरकारी सेवाकाळ मे रामसरण हुवणिय नै सरकारी बीम री दूणी रकम मिलसी । अ आदेस लारल महीनै सू लागू हुवला । लालजी रा भाग तेज । वा नै ई दूणी रकम मिलसी ।

सरकार ओ काम तो आछो ई कर्यो । पण इत्तो आछो तो पकरायत कोनी हो क दूणी रकम लेवण खातर ई लोग मरणो सरू कर देवै ।

सगळा जणा अेक दूज रो मूडो देखण लाग्या । पछ खबर सुणावणिय नै देखण लाग्या ।

सगळा री निजरा खुद माथ टिकयोडी देख'र बो बगला जोवण लाग्यो ।

कमर माय घोडी ताळ खातर मिधावतो भून पसरग्यो ।

सकडी बिड़योडी दीखें या आठ दस थेपड्या इनै बिनै पढी लाध । भाई दिना आठ आठ पीप रो तळो भी दिखण लाग्या कर । तल र पीप या तिल्लाडी मे चूल्हो चासण खातर वाटी चोपडण जोगो चीटो बच खाली ।

केस चोपडण रो तो आ दिना सुपनो ई कोनी भाव । साबणदानी मे साबण री जगा साबण रा भोरा लाध, जिवा हाथ मे ई कोनी झिल । आ भोरा नै भेळा कर'र लुगाई कुल्हड मे भीजोय दव । बी पाणी सू म्हारी गजी या बुशट झिकदौळ देव । बस इण सू बत्ती गुजाइस आ दिना कोनी रव । आ दिना काई पावणो आय हुक तो जी र आफत हुय जाव । जी र आफत किणी र बीमार पडण सू भी हुय जाव । ङागदर इसा भला है क मामूली घासी जुकाम या बुखार म प'दर-बीस सू कम री दवा कोनी लिख । जावताई पूछ—सरकारी नौकर हो नी ? अर हा फवता ई नाव पूछ'र दवाया घस हाख । दुकानदार नै रक्को देवता ई वा प'दर-बीस रो फोटू उतार'र मेल देव । एक दिन री खुराक देवण खातर कवा तो भलो माणस क्व—तीन दिना री साग ई सेय जावो नी । घडी घडी कशमीमो कुण काटला ! कोस तो पूरो ई लेवणो पडना । इण रो मतलब दुकान आळो भी जाण क सरकारी नौकरा रा रोग पूरा कोस लिया ई ठीव हुव । जे बीनै क्व क भाई अवार पीसा कोनी तो तपाक् सू मुणण न मिल—थार किसा घर सू लाग है ? सरकार सू पाछा मिल जावला ।

म्है सोचू क घर सू किया कोनी लाग । अवार री घडी जद क जहर खावग न ई पीसो कोनी, दवा खातर पीसा कठ सू लावू ? सरकार पाछा ता जर देवली, पण बद, आ घनै ठा कोनी भाई । आठ आठ म-दस महीना ताई घिल रा खोज ई कोनी बापर । महीन रा महीन मिलता हुव ता काई बात कोनी ।

फेर याद भाव—हाल तिणखा आडा छव दिन पड या है । सोचू क अक्की दफ भलाई की हुवो अंक गरम कोट जर बणवाणो है । टाठरा खातर भी गरम कपडा बणवाणा है । घटा आळी अून सेय भावू तो किसाक रवं ? सागीडी गरम रवलो । पूरी बाका आळी मूटर पर्या पळ तो सी बार-बार ई फिरला । गरम कोट नै गाळी मारण री साच'र घेटा आळी ऊन री मूटर बणवावण री साचू । म्हार माय हरख रा हवोळा उठ । म्है मन ई मन गायण लागू—घानै काजळियो बणालू म्हार नणा म रमालू

००

हाल ताई ठण्ड इत्ती घास तो कोनी भापी, पण तो ई दिनुग सिध्या कार कमीज या बुशट म बार निवळता लघावतो क डील माथ की न बी हुवणो चाइज । हुवो भलाई जानट या बादी-पुराणो मूटर ई ।

तिणखा मिलताइ सोच्यो क अत्रकै गरम नोट खातर कपडो जरूर खरीदणो है। पण दो तीन दिना ताई आ ई सोचतो रयो क किसो कपडो खरीदू। गरम खादी या ? अर किणी छेन निणय ताई पूग्या पला ई तिणखा रा नोट आलमारी म धर्योडी डबरी मे बन्द हुवता थकाई उड'र पतो नी कठ पूग्या—पतो हुवता थका !

महँ मन ई मन साचण लागू—अस्सी रिपिया रा गहू बीस रिपिया हल्लगी, धाणा अर मिरच्या तीस रिपिया री खाड पचास रिपिया दूध आळ रा चाळीस रिपिया तेन रा धी ? डालडा रा ई दसरण दोरा है। ओ खरचो तो सूखी रोटिया रो है। दाळ चावळ किया पोसावँ ? म्हारो हाथ खरचो तो गिण्यो ई कोनी ! तीस रिपिया तो खरच हुय ई जाव। पान खावू नी सिगरेट पीवू नी खाली चाय अर सनीमा रो सोख है जिको भी जेव मे हुवत तीणा र कारण घणा दिन धिकणो मुसकल लखाव ! इसी हालत म आदमी कपडा कराव तो कठ सू ? अर घर मे बिना बुलाया पावणा ई आवता रव। बिना बुलायोड पावणा दाई हारी बेमारी यारी आवती रैव !

लारल दिना छोटोडी छोरी बुघार मे जुडगी ही। मा अर लुगाई खास ध्यान कोनी दियो। मा कव—ओ कुधन तो काळ मे ई कोनी मर ! म्हेँ मोचू क जिको काळ म ई कोनी मर वो ताव तप सू तो ता ई कोनी मर सक ! कसर हुय जावँ तो बात दूजी है। या पछ टिटेंस हुय जाव। अस्पताळ पूगा जित्त तो रागी बटीज बटीज र मर जाव ! कारण क रोग बध्या पली तो आपा अस्पताळ रा दरखण ई कोनी करा। अस्पताळ किसो मिदर थोडी है क जिको राजी राजी जावा !

छोरी बुघार सृ छूटी ता छोरो बीमार पडग्यो। बी रो बुघार बीस रिपिया री दवाया सू उतर्यो।

रात न लुगाई कयो—अबकी तो गरमनोट बणाईजणो मुसकल लाग।

—हा SS ! कय'र म्हेँ निस्त सी हुयग्यो।

—ऊन नाय देवो तो म्हेँ सूटर बणाय दू उण कयो। कमर री छात बानी देखतो म्हेँ सोचण लाग्यो क तीन च्यार टाबर हुया पछेँ लुगाई, लुगाइ कोनी रव। वा आपर धणी री सुनिधावा असुनिधावा रो ध्यान ठीक बियाई राखण लाग, जिया क मा टावरा रो ध्यान राख !

—सुभित सू टूकगी तो ऊन लेय आवूला। कय र म्हेँ आख्या भीवनी।

छोरो रोबण लाग्यो। लुगाई उठ'र गयी परी। म्हेँ नीद लेवण री कोसोस करण लाग्यो। इण मू घाई न गाळ्या कान्तो काडतो।

बी दिन मेडिकल बिल रा पचास रिपिया मिल्या हा । दफ्तर सू आवती टैम साग काम करणियो जगदीस बोल्यो—ब्रदरी, ल आव, आपा गरम कोट देखा ।

—कोट ?

—हा 5 सक्लिण्डहेण्ड कोट । यार, अठ घणाई विक है नी—अमरीकन कोट ।

—सुभीत सू दूक जावैला ?

—हा 5, नूव कोट री सीवाई सू ई कम म ।

म्है हरखीजतो हरखीजतो बीर साग हुयग्यो । म्है दोनू वे० ई० एम० रोड पूग्या । वठ भात भात रा कोट पड या हा—बद गळ रा कोट खुल गळ रा कोट ओवर लोट । भात भात रा रग । भात भात री डिजाइन ।

भूरै रग आळो कोट हाथ मे उठाय'र म्है गौर सू देखण लाग्या । दुकानदार रो सुर सुणीज्यो—पर'र देखलो बाबूजी देखण परखण रा कोई पीसा कीनो लाग । दाय आवै तो लिया, नीतर पाछा मेल दिया ।

म्है बी कोट नै पैर'र देख्यो । साव अगोजग दूकग्या । द नै विन्ने हाथ हिलाय'र देख्यो । सोळै आना जचग्यो ।

म्है पूछ्यो—ई रा किता पीसा है भाई ।

—बीस रिपिया । उण कयो ।

म्है की क'रू उण सू पत्तीज जगनीस बोल्यो—बीस तो ज्यादा है लार तो पन्दर-सोळ मे देय'र आया हा ?

—बाबूजी चीज देख र बात करो नी ।

—देखलै, पारं बेचवाळी हुव तो । जगदीस की बरडावण मे आय र कयो ।

—ये अठारै देय दिया वस, ई सू बत्ती गु जाइस कीनी ।

जगदीस की और हील हुज्जत करतो, इण सू पैला ई म्है बीन अठार रिपिया देय दिया । म्है सोची क सोदो कठई हाथ सू निक्कळ नी जावै । कोट री हातत देपता म्हन लघायो क आ पीसा मे तो सूटरडी ई वण । कोट तो पळै काट ई हुन ।

जगदीस दो कोट खरीदया । उण दनील दीनी क भायला, आपा ई रईसा आळ दाई फोर-फोर र पराला ।

म्ह अेर ओवर कोट उठाय'र उषळ पुयळ'र माय वार सू देखणे सफ क'र्यो । बीरो अस्तर भी चोयी हालत म ही, म्है साच हो क जे ओवरकाट आळा

सौदो ई ठूक जाी तो टाबरा र ई कोट बरवाय दू— इणन कटवाय'र। इण मे कम सू कम तीन टाबरा र कोट तो भाराम सू बण जावला। नूवो कपडो लाय र बणवावण री उम्मीद मे तो टीगर सार सीयाळ ठण्ड सू पीटीजता रैवला। भर लुगाई रा तगादा इमा ई चालता रैवला। या रोजीना याद दिरावला भर म्है काल लावण री कय'र टाळतो जावला।

उण भोवरकोट रा पच्चीस रिपिया भाग्या भर बाईस माथ भाय'र फसलो हुया। जगदीस पीसा तुडवावण म मास्टर है। जिकी जिनस रा दुदान भाळो सात माग, बो छव देय'र ई हट। बीर साग हूवण रो फायदो ई हुयो।

म्है धीनें चाय पायी भर भुजिया खवाया।

००

म्है घरा पूग्यो। मा हागळ ही। म्हार हाथ म कपडा देख'र उण पूछ्यो—
ओ इत्तो काई उठाय लायो रे ?

—गरम कोट है। म्हारी भावाज मे गरमास हा।

—कद बणवाया ? उण पूछ्यो।

—बण्यो बणायो लायो हू।

म्है ब दोनू कोट मा र सैमूड मेल दिया। बा नै देख'र मा बोली—
बोला पूर कठ सू उठाय लायो ?

—मा, अ अमरीकन कोट है। चोखा भला खावता पीवता आदमी तकात आन पर। नूवा कोट तो तू जाण ई है।

म्हारी बात पूरी हुया पला ई मा बोली—जे अ कोट मुडदा रा उतार्योडा हुया तो।

—हुह ! थान तो हरेक बात ऊधी ई सूझ। म्है भुसळीज र बोत्यो—मुडदा रा उतार्योडा कोट भी कद ई विक्या हा। अरे मा ! ब लोग अमीर हुव। नूव साल माथ आपरा कपडा उतार। ब ई कपडा अठ विक।

मा आग की आपरो दरसण बघारें इण सू पली म्है बै दोनू कोट उठाय र माळिय मे लेय गयो। बठे लुगाई न दिखाया तो उण भी इसीज बात कयो। म्हन झाल चढी—हुह ! भारं भेजे म तो बस अके ई बात बठ्योडी है क अ कोट मुडदा रा है। घाळो हीयो फूट्यो है मा लोग रो। अक्कल रा दुस्मीं कठे ई रा।

म्है खासा ताळ ताइ माय रो माय भुसळीजतो रैयो ।

००

दो दिना पछ टाबरा खातर कोट बण'र तैयार हुयग्या । बा नै पर्त्या पछ टाबरा रा हूलिया ई की की बदळ्योडा लखाया ।

अै तो असल ओपग्या रे । मा कैयो ।

—हा ५५ ! कय'र म्है सोचण लाग्यो कै असल ओपो या नी ओपो, सी रो जावतो जरूर हुयग्या । म्है काच सामे अभ'र म्हार कोट रा बट्टण बन्द करतो मुळकण लाग्यो । माळिये सू वार निवळ्यो तो लुगाई डागळ माथ ऊभी दीखी । म्हने कोट म देख'र बा भी मुळकी । बीरी मुळक रो मतलब हा कै सागीडा जच रैया हो ।

म्है धीने मुळकती देख'र आख मारी अर पागोथिया उतरण लाग्यो । दपतर जावण खातर साइकल उठायी अर टूर बहीर ह्यो ।

पूर मारग आ सोचतो रैयो कै ई बरस पडणिये रठु रो सामनो आराम सू कर सकूना ।

००००

अधारे में सांस

पता नी काई हूया क म्भन क्याम्बर अधारा गिरर घावण साग्यो । म्भन म्भनावतो क म साग बी बी बन्ल रया है । भा बाण धर मायां रा ता बाण ई काइ क थ व ता म्भन म्भन हूयता घका नी हूयन बराबर हा । गन म्भारी मुगार्द, जिण नै म्है जी जात म्भु यतो पायता हा, बा तबान बन्ल्लाई सग्यायी । धर म्भारा सग्ल्ला भायता भी जिवां गानर म्है घापी गन । ई बी भी करण गानर तयार रवता धर व भी म्भारै गानर—व तबान बन्ल्लायाहा सग्याया । धर म्भारा टावर, दा छोरा धर अर छोरी, जिवां न दग्यां ई म्भारो गि भर रा पावता उतर जाया कल्लो हो, घाजवान ता थ भी बी भार सग्यावण साग्याया हा । बां र हेन म भी म्भ । रेल सग्यावण साग्यायी ही ।

म्है म्भारै भायतां गाम घा प्रवग्याया राग्यी । बां घापापाप गे प्रवगत री धरनी सीय ताइ साण र क्भ सग्ल री बागो बगायी । कई कया कँ भा घानी म्भार मन मगज रो बँम है । जब म हूयाइ दिरतां र कारण म योग बन्ल्लायाहा सग्याय । जिब गि भी जब रा दिरता रपू हूय जायता क धूयीनकार जब साग जायता, बा गि मा बी सायळ गिवन हूय जायता । धूयी जेव घातर म्भन मणत करणी चाईज । ज्यार मो रिपिया री तीवरी रँ बलावा गिनुग गिन्ध्या घाट-म री जुगन जुह जाय म्भन काम करणी चाईज ।

क्भ इगा भी हा जिवां रा कवणो हो नँ प्रवार म्भारा गि गिर की माडा है । बा म्भार हाय नी रगावा देखी । रघावां रो गणित म्भारै साभ राख्यो । म्है वारी बातां गुण्या गया । गो गलासो करया पछ बां सलाह दोधी क म्भन म्भूगे पँरणो चाईज । बा मो भी बगाया क इण न पर्या म्भु मगळ री दसा रो कुप्रभाव कम हूवैला ।

साची क्वू जे म्है मन मगज म्भु उषळ-मुषळ हूयोहो नी हूयतो तो वारै मूडै माय म्भुन दवतो । अँ झाहा जितर, टूणा-टोटवा, मिदर डेरा फालतू री घपत गिणणियो म्है बी दिन वाला वालो बढ्यो रयो । म्भार मन रँ जिणी भूड घूणै म्भु भा आवाज भायी क हूय सकँ भा ई बात हूय ! धारो कवणो साच हूय सकँ है !

बा री बात मन म जचयी । बा न म्भारी जेव रा छेवला दिघाया । व मुळव'र

बोल्या—अरे डफोळ ! इ बात रो क्या रो सोच ? म्हे फेर क्या रै वास्तै हा । अर सी रो अंक कडकडाट करतो नोट म्हारी मुट्टी मे आयग्यो बा रो कृपा सू ।

फेर पछ म्हे बी चीज री तलास मे निकळ्या । तीन-च्यार दुकाना देखी । सरु पली जठ गया हा, पाछा बी दुकान दूवया । साठ रिपिया मे मूगो खरीदयो अर चादी रा बीटी मे जडवायो ।

मूगो पर्या पछ लखायो क म्हार खून मे नवी गरमी अर गति आयगी है । लखायो क कोई कद तो म्हे पदाक मार र हिवाळै माथ चढ सकू हू । कै बिना किणी विमाण रै फटाक मार र चाद सू असखेल करैर आय सकू हू । क मुट्टी भीचैर कैय दू कै अे मोटर ! तू जाम हुयजा, तो फरटा भरती मोटर जाम हुय सकै है । आज तो म्हनै इत्ती फुर्ती मसूस हुई क किणी नै 'बोनविटा पीया पछै ई कोनी हुवती हुवैला । इत्तो आतम विश्वास लखायो कै किणी नै पूरी पोधी कठ हुवता थका ई परचो देवती बळा कोनी हुवै !

बी दिन इणी जोस अर हरख मे भायला सागै सात-आठ रो घूरमो कर हाख्यो । लुगाई खातर मळाई रा लाडू लेयग्यो । टाबरा खातर साप सीढी अर लुडो !

मूगो पर्या पछै केई दिना ताइ म्है हवा मे कुदडका करतो रयो । म्हनै लखायो कै सगळा लाग पाछा हेताळू हुयग्या है । हेत री नदी म्हारै बिच्चै बवण लागी है । इ नदी रै पाणी सू प्राणलेवू तिरस बुझ सकै है !

मूगो पर्या पछ अंक नूवी बात म्हार माय घर करगी । म्है दिन भर री घटनावा रो लेखो जोखो राखण लाग्यो । नित री घटनावा लार बीत्याड दिना सू मिलान ररतो अर इण नतीज माथ पूगतो क म्हारी हालत सुधर रयी है ! दो च्यार दिना पछ तो हालत हुयगी कै जे म्हनै जमळ खुल र लाग जावतो सो बा भी इणी मूगै री करामात लखावती !

पण अचाणचक म्हन लखायो कै बो अधारो फेर धिरण री तजबीज बठाय रयो है । छोरी री बीमारी सू म्हारी चितावा बधण लागी । अस्पताळ लेयग्यो । बीस पच्चीस रो फोटू उतरणो सरू हुया अर आय पाचवै सातव दिन ओ फोटू तयार लाघतो । हारैर म्है बी नै बडोडी अस्पताळ दिखावण री धारी । रट्ट पडण लाग्यो हो इण खातर लौकार काड्यो । भडका भडकूँर अंक कानी मेल्यो । सोच्यो—रात नै अस्पताळ मे ओढण नै काम आवैला । छोरी नै भरती कर्या पछ किणीन किणी न तो बी रै कनै रवणो पडला ।

सिझ्या न छोरी री हालत घणी बिगडगी । इण खातर बी बगत ई अस्पताळ जावणो पड्यो । देखताई डागदर कयो क इत्त दिना ताई म्है नीद मे सूतो हो काइ ?

प्राखिर चावू काई हू ? जे छोरी नै मारणी ही है तो भठै ताय'र मारण री भू तेवडी है ? भरा किता प्राण निवळता कोनी काई !

भर केर बो आपरी कोसीम म लाग्यो । ग्लूकोज थदाय'र मरस नै बठ उभाय'र गयो । म्है ग्लूकोज री सीसी कानी देपण लाग्यो । ग्लूकोज घट हो—टप् टप् टप् ! दो घटाई कोनी बीत्या क टप् टप् टप् हूयग्या भर सास री पतेर देही र मीजर सू उढायो—फुरर ।

पतो नी भू, म्है रो कोनी सवयो । म्हारै हीय मे सून वापरगी । सून कई दिना ताई बापरयोडी रयी । सून इत्ती वापरी क म्है भूलगयो—म्हार मूगो पर्याडो है । पण जेब म हुवत खेकलां भर बळन चट्टां म्हन मूग री याद दिराय दीवी । म्है केर दिन भर रो लेखा जोखो राखण लाग्या । भवकी दफ म्हन सघायो क मूगो पर्या सू पली भर भवार री हालत म काई करव कोनी । छोरी री मौत नै जे इण सू जोडू तो थ दिन पली करता माठा ।

म्हारी वा सा गूग कपूर बण र उढयो । कठ तो म्है मुट्टी त्रद कर र मोटर नै रोकण री सोच्या करतो हो भर कठ आज चालती बीडी नै ई कोनी रोम सकू । हिवाळ माथ तो चढ़णा दूर रयो, बिना पग उठाया पगोघिया ई कोनी चढ़ सकू ।

हुयो भो क म्हनै बो मूगो वेचण री सोचणी पडी । सोचणी काइ पडी, भव तो सोळ घाना ई तेवढली क इण रो पापो काटणा ई है । म्है हडमान र भरा सयो । बी र घरां तळपर म चाय पीवती वेळा साव हो क बात किया टोळ । म्हार मूड सू कीं निवळ इण सू पली बो बोल्या—आजकाल तो दिन गिर भौत साडा चाल रया है । भायला थारलो मूगो केई दिना खातर परण नै तो द, म्हनै ई मगळ री दसा है ।

—आ छाटी हुई नी ! काइ कवू इणनै ? किया समझावू क बस्रा ई मूग सू ई जे साडा दिन गिर सावळ सुवा हुवता तो म्है इणन वेचण री बाळण नै तवढतो !

पण म्है बी नै की कोनी कयो । आगळी स बीटी उतार र चुपचाप बीं न दे दीनी । सोच्यो—बधा तू ई देख ल, इ भाठ मे बी कोनी । सुण'र सीखण नाळ कर र सीखयोङ्गे पुस्तता हुया कर । आ सोच'र बीं न समझावणो फालतू समझ्यो ।

दो-तीन दिना पछ बो जी एम बी मे मिल्यो । म्है की कोनी पूछ्या । उण खुद इ बात टोरी—भायला, चीज तो सातरी है ।

—कोई खास फायदो ? म्हारो सवाल उछळ'र बी रै मूड आग जाय पड्यो ।

-हुयो तो कोनी, पण लखाव हुवलो जरूर । ध्यारुमेर शुभ ई शुभ आसार दीख रया है ।

म्हारै मगज में किणी दाशनिक् री आळ्या ताजो हुंयंगी, जिण कथ्यो क जो की आपा नै दीख, वो असल मे 'वो' है ई कोनी । असली चीज तो की और ई है । जिया क सनीमा र पढद मायें दिखणिया चितराम किणी असली दुनिया री पढछीया ई हुया कर । सनीमा घर सू निकळ्या पछ असली घर नकली सोकी तारें छूट जाव । आपा फेर अक नू वो दुनिया में आय जावा । दुखा अर अबखाया सू भर्योडी दुनिया मे ।

अक बात आ भी है क आ बीटी शुभ है, इण खातर शुभ कोनी लखाव । पण आपणें मन मगज मे आ बात बँठयोडी है, इण खातर शुभ लखाव । जिया क केई दिना पैली आ बीटी म्हार घास्तें भी शुभ ही, पण आज कोनी—जद क बीटी सागी है ।

दिन दसेक आडा घाल'र वो म्हार कन आयो । बोल्थो—भायला, म्हनें तो ई मे की तत कोनी लखायो ।

म्हें राजी हुयो । चालो अक सू दो तो हुया जिक्, कय सवा क आ तत-घायरी चीज है । किणी बात रो प्रचार प्रसार इया ई तो हुया कर ।

म्है बोल्थो—इ नै बेच देवा ता ठीक रव । पाच-सात रो काटो कटें तो ई कोई हरज कोनी ।

म्है दोनु मूग नै ठिकाण लगावण खातर निकळ्या । जठ सू खरीद्यों हो, पाछो बी नै ई देवण री सोची । पण बी री दुकान बंद लाधी । पूछताछ कर्या ठा पढी क बी नै पुलिस पकड'र लेयगी । बी री दुकान मे नाजायज जवाहरात मिल्या ।

म्है गोता खावता दूजी जगा पूग्या । खीचडी-सो मूछा आळो वो आदमी बोल्थो—आवो, माय बठ'र घात करे । माय बठ'र म्है बी न सा' बात साफ-साफ कय दीबी क म्हार मूग री बेचवाळी है । कित्तक मे लेय लेवोला ?

वो गौर सू मूग री पढताल कर'र बोल्थो—कित्त मे खरीद्यों हो ? वो म्हार मूड सामें देखण लाग्यो ।

—साठ मे ! म्हें बोल्थो ।

वो की कोनी बोल्थो ।

भून रा म्हुणभुणिया बाजण लाग्या ।

म्हार सू रयीज्यो कोनी । पूछ्यो—ये वित्ता दे सको हो पांच सात तोडणा हुव तो ।

—भाफ करज्यो ! ओ तो साव घोटो है । इ रा ता पाच रिपिया ई कोनी बट । पचास पीसा बवो तो म्है देय हू ।

भर उण मूगो म्हार कानी पन दियो । म्हारी समझ म कोनी भायो क म्है काई बोलू । मूगो जेय म घाल'र चुपचाप उठ सू उठगयो ।

म्हे दोनू बार भायग्या ।

काळी सडक साप दाई पसरमाठी ही ।

किणी नै दाग देय र भाया पछ जिवी हालत हुया कर है नी बा ई हालत म्हार जी री ही ।

जीवती लहासां

अदीनवार रै कारण दफ्तर रो छुट्टी ही । बो दिन भर सडका माथै घूमती रयो । बिना किणी काम । बी रै चहरै माथै रजी चढगी । ढळन सूरज री रोसणी मे बी रो चहरा काळा निजर आवै हो । चल-डाल सू लागतो हो क बो खासा थाकयोडो हुवैला ।

उण आपरी गुद्दी कुचरी । मल री चिपचिपाट साम्प्रत लखायी । उण सोच्यो क दिगूग सिनान कर लेवणो चाईजै हा । साबण कोनी ही, आ याद आवताई उण मू डो मचकोड्यो । पिच्च देणी सी-क थूकरं डारै पासी मुडग्यो ।

घरा जावण सू पत्नी चाय पीवण री सोची । बो सामनें आळी साकडी गळी मे बढग्यो । बा दुकानडी हर बगत धूवै सू भर्योडी रैवती । आगे खार्च मे सगळै सर री गदगी रो ढिगलो हो । अकूरडी री बदबू चौकेर वापर्योडी रैवती । बी दुवाडी रै माय वठो का बार धूव अर बदबू सू छुटकारो कोनी हो । माय मेजा माय चाय दुळ्योडी रवती । बी पर माख्या री भिणभिणाट । चाय लावणियो कोजियो मैल सू काळा कुट्ट हुयाडा कपडा पर्या आपरै बेसाने कुचरतो रैवतो ।

उण चाय खातर कैंयो । कुसीं खैच'र माय खर्ग मे बैठग्यो । अठे आय'र चाय पीवण रो कारण ओ ई हो क सगळै सैर मे चाय रा पैतीस पीसा लागता, पण अठे बीस पीसा मे फस्ट किलास चाय मिलती । घर रै कने ही ओ मुख यागे ।

बो घरा पूग्यो । कमरै मे पूग'र बत्ती जगायी । मार्च माथै बैठयो । माच री चरमराट हुई । आळै मे पडी कहाणी पत्रिका पढण खातर उठायी पण दो पाना सू आगे कोनी पढ सकयो । पछ पत्रिका रा पाना फरोळण लाग्यो । केर पत्रिका आळै मे फँक दी—अणमण अर उदास मन सू ।

बी री लिडर मेज कानी गयी । लिफाफो पढ्यो हो । परमू आयो हो । उण हाल ताई उयळो कोनी दियो । कागद लिखण री सोच र बो मेज कानी गयो ।

बो कागद वाचण लाग्यो—मा भौत याद कर । पुण्या रै सासर सू कागद आयो है । बी री तबीयत ठीक कोनी रैवै । विद्या अर स्याणी हुयगी है । बी री सगर्द खातर बात चाल रैयी है । बात पक्की हुवताई स्याव ई वेगो ई कणो पडला । रिपियां रो इतजाम अवार सू ई सह कर दे । 'हे तो सो' की धार ई भरौस कर

रैया हा । दादी मा री तबियत पैला सू ज्यादा खराब रैवै । पण खास चिंता री बात कोनी । थे कद ताई आबोला ? पान सगळ्या यान कर हे प्रर सब मज मे हे । थ सरौर रो पूरो जापतो राख्या । प्रर उण आखरी ओळी वाचो—घारो भाई—रमेस !

उण मेज माथ कागद मेल वियो प्रर आपरी पढलीया देखण लाग्यो । इन्न सरौर हालतो प्रर विन्न पढलीया । उण हाथ ऊचा कर'र आळस मरोड्यो । ऊचा उठ्योडा हाथ बी नै फासी रै फ'र री तरिया लखाया । थोडी ताळ ताई उण आपरा हाथ ऊचा ही राख्या । बो सोचण ढक्या कँ जे आ फदो बणती पढलीया असली रसो रो रूप लेय लेवँ तो किसो करव ? ऊपर सू काई खँच प्रर खँच्याई जावँ । वीं रो गळो टूपीजँ प्रर जीभ बार निवळ जावँ । हुह ! निस्कारो हाख'र धो कुरसी माथ वँठयो । पडूत्तर लिखण लाग्यो । बलडर कानी देख र उण हिसाब जोड्यो कँ दूजँ सनिवार प्रर अदीतवार री छुट्टी है । प्रर दो दिनां री कँजुमल लीव लिया पछ च्यार दिन घूम्यो जा सक है । कागद लिखता लिखता बी न सरला री याद आयी ।

सरला ।

वीं री आस्था अगाडी आपरी जोडायेंत रा चैहरो घूम्यो । बो सोचण लाग्यो क अबकी दफँ सरला खातर की न की जरूर लेय जावणी चाईजँ । अक सांतरी सी कँ साडी ठीक रैवोला । विद्या खातर ई कीं लेवू काई ? प्रर भंतीजां खातर ? हुह ! देखी जावोला । अबार तो दस दिन पड्यो है । मैडिकल बिले आयग्यो तो ठीकँ, नीतर सगळो हवा खावो । पण साडी जरूर लेय जावणी है—उण श्रीजू याद कर्यो ।

थोडी ताळ पछ बो सूषम्यो । जद ताड नीद नीं आयी तद ताई सरला रो चँहरो बी र मन मगज मे घूमतो रँयो । पसवाडा फोरता फोरता बी न नौद आयगी ।

००

शुक्रवार री सिइया री गाडी सू रवाना हयो । दिनुग घाठे'क बजी बो घरां पूगयो । लखायो कँ बी र घरा आवण मू सगळो राजी हुया है ।

बो आंगण मे बठ्यो हो । बी री लुगाई साळ र किवाड री ओट मे ऊभी बी नै देखँ ही । उण मुळक'र सरला कानी देख्यो । हरख रँ हवोळा सू सरला रो चहरो गुलाबी हुय रयो हो । मा गिलास मे चाय लायी । सरला किवाड री ओट छाड'र माय गयी परी । घट्टी पीसण री आवाज आवण लागी ।

मा बी रँ कनै बठगी । वा पूछ रयी ही—सरौर और तो सावळ मज में रयो नी ?

हा 55 ! उण गिलास मे फूक मार'र चाय रो गुटको लियो ।

—सुण्यो है क आ दिना तिणखा फेर बधी है ?

उण सक्कळू निजर सू मा कानी देख्यो । चाय रो अगलो गुटकी लेवताई वो अचळूक्ष्मयो । घासी रुकी तद बोल्यां—हा 5, महगाई रा दस-बारै रिपिया बध्या है ।

मा र चहरै माथ चमक आयी । बा बोली—चोखो ही है । बाकी महगाई तो मार रयी है चीजा रा भाव आभ कानी ।

मा री बात पूरी हुया पला ही इण प्रसंग नै बदळण खातर उण पूछ्यो—
दादी-सा किन्न है ?

—लारल माळिय मे ' । मा कैयो ।

—दादी सा री तबियत धणी खराब ही नी । बार कनै कुण है ? चाय री गिलास अक कानी मेल'र पूछ्या ।

मा रो उपेक्षा भट्टयो सुर सुणीज्यो—की कोनी लाडी ! चिंता री बात कोनी । अर फेर आपा रै हाथ मे है ई काई ? स करमा रा लणिया दणिया है । बुढाप रा रोग है । नित घटै, नित बधै । अब तो भगवान उठा लेबै तो चोखो है । बाकी सावरियै री मरजी है । जिती सासा घाली है, ब तो पूरी करणी ही पडला ।

बी नै लखायो क आने तो दादी सा री मौत री ही उडीक है खाली । पण गळै मे आगळी घाल'र तो किणी सू मरोज कोनी । अर अ खुद, का फेर म्हे खुद जिवा खुद नै सावा साता समझा हा, जीवण री हूस दबाया बठा हा, इण जीवण मे की भदरक है काई ?

—दादी सा स मिल'र आवू ।

—चाय लेवतो जा बा खातर ।

बी रसोई कनला पगोपिया चड'र माळिय माय सू हुवतो लारल डागळै पूग्यो । माळिय रा किवाड प्रोटाळ्योडा हा । उण किवाड खोल्यो । माय बड्यो । माय बडताई बढबू रो भभको नासा माय सू पेट मे पूग्यो । मुड्ड माथ बठया पछ बी नै लखायो क इण माळिय मे तो मिनख नई मरतो हुवै तो मर जाव ! अघार अर बदनु र कारण !

चाय री गिलास दादी सा रै हाथा मे झलाय र उण सोची कै राजी-खुसी रा समचार लिया दिया बिना ई उठ र पाछो नीच जाव परो ।

दादी सा आपरी आख्या मिचमिचाय'र बी न देखणो सहू कर्यो । फेर बोली—कद आयो र । वा मर्योडी सी-क आवाज सुण'र उण सोच्यो क अब जल्पी ही आ आवाज अलोप हुवण आळी है ।

-बस अबार आयो ईज हू ।

चाय री गिलास मेल'र वा तम्बाखू री डब्बी वाढी अर चिमठी भर'र मू घी । फेर गिलास उठाय'र चाय पीवण लाग्या ।

-कित्ताक दिन रवला ?

-तीन च्यार दिन ।

-सावळ मज मे तो है नी ?

-हा ss !

दादी सा जद बी र माथे पर हाथ फेर्यो तद बो गळगळो हुयग्यो—बदवू अर अघार र बावजूद ।

उण टुरण री सोची ।

-अच्छा, म्है थोडी ताळ पछ आवूला । वय'र बो टुरग्यो । माळिय सू वार खुली हवा मे आवताई बी न लखायो कै अब थोडो आराम है ।

बो नीच आय र रसोई म बठग्यो । मा चूल्है मे लकडी घाल ही । आगली लकड्या र बुझण सू धूवो हुयोडा हो । मा भूगळी लेय र फूक मारी । धूव र कारण बी री आख्या मे पाणी आयग्या—मा री आख्या मे भी । अबक आळी फूक सू बास्ती जगग्यो-भक ! थोडी ताळ मे सो घवा छटग्यो ।

विद्या रसाइ मे बडी । वा आय र मा कन बठगी । उण विद्या कानी देख्यो । विद्या र डील मे हुवता बदळाव बी सू छाना नी रय सक्या । उण सोच्या क च्यार महीना पैली आळा कपडा तो अब प्रोछा हुयग्या हुवला । डील कित्ता भरीजग्यो है—अकदम मू । विद्या खुद न खुद सू लुकावती सी क बठी ही । वा खुद भी आ बदळावा मू नावाकफ कोनी ही । उण साच्यो क फाक पर र इन बिभ्र घूमण आळी विद्या जद पनी दन ब्लाउज अर साडी परी हुवला तो काई लखाया हुवला ? अर काई लखायो हुवला जद व ब्लाउज ही हर महीन काठा हुया हुवला ?

-थारा इम्तिहान कद मू है ?

-दस माच मू । विद्या बोली ।

-तयारी कडी क है ?

-सागोडी है । सकिण्ड हिबीजन तो छोडू ई कोनी ।

-इत्ती सखी ?

-इत्ती सेधी ?

-पढ़ू ह, समझ्या भाईजी !

-रमेस कठ गयो ?

-सतीस र घरा पढण न गया है । विद्या बतायो ।

-वीन ता तू ही पढा सक् है ।

विद्या मुळकी । बोली—पण वो बदमास पढ जद नी । बा म्हनें तग करण खानर इसा ऊघा सुधा सवाल पूछ क म्हारी ता अक्कल ई चकरोज जाव । अ फँक्टर-पाक्टर म्हन आव कानी अर वो म्हनें जद भी पूछ, अ फँक्टर ई पूछे ।

-बजाई बोछरखो ह्यग्यो वो । मा बोली—हस'र ।

विद्या कैया गयी—वा इया कर बा विद्या करे । भा बात मान कानी । बा बात सुण कोनी । बाता ई बाता म वा अेकर जोर मू हसी । फेर मा कानी देख'र चुप ह्यगी अर चुप ई बठी रयी ।

रसाइ म फेर ध्रुवो ह्यग्यो । ध्रुव र कारण आर्या म पाणी आयग्यो । आर्या नसळतो वो उठयो । भा कय'र—मा भाईजी मू मिल'र आवू ।

मा आपरी आट्या बीर चहर माथ टिकाय दीवी । बा आपर गळगळ मुर म बोली—हा 5, मिल आ भलाई । वीन तो आपा रो ना मही, पण आपा न तो बी रो फिकर है ई । वो तो म्हाटो आपरी लुगावडी र रग म इसी रगीज्यो है क मा अर छोट भाइ-बना रो ख्याल इ कानी करे ।

फेर मा रोजीना आळा पुगणो रावणा सेय'र बठगी—बी रे वास्तै म्है कांइ कानी कर्यो ? पढायो लिखाया चाख घराणे म व्याव कर्या । पण धार जीसा रे मर्या पछ छव महीना ई कोनी बीर्या क वो जुदो ह्यग्या । छोरो तो लाइ सम्भू है पण बा लार आयाडी काळ माथे आळी रडार वाछाड है । छोर नै उघी-सूबी पाट्या पढाय र इसा रग चढायो क बस ना पूछ पण खर । आपरो कमावो-खावो । अर निस्कारो हाव र—लाडी, अर ता म्हान धारा ही सायरो है । तू नई हूबतो ता म्ह बुदाप म भूया मर जावता ।

पाडी ताळ ताइ मून । डील मे काटा रो तरिया खुभणियो मून । फेर सागी रोवणे । की-न की माथ-बोटी करणो पडला । माथ चाटी र भलावा कोई चारो कानी । सो इतजाम थन ई करणो है । धार ही भरोस ।

वा ऊभा-ऊभो सुणतो रैयो । फेर काटा रो तरिया खुभणिया मून तिरण नाग्यो । मून मू छुटनारा पावण खानर उण कया—म्है अवार आवू ।

चपला पगा म घाल'र वो घर मू वार निकळग्यो । भाईजी र घरा पूग्यो तो नखायो क वा त्रिणी अणनेध आदमी र घरा आमा है । दिखावटी रामा स्यामा ।

धीगाणै मुळकण री कोसिस। आट्या म सवाल—ओ अठ क्यू आयो है? कोई आफत गळ आवू है काई ?

जद बवलू बी र कनै आय'र ऊभ्यो तो भाईजी बी नै तडक्यो—अेक कानी हट। बेसहूर कठ ई रो। हरक आय गय कन जाय उभै। सहूरबायरो। चाल बठी न।

बवलू डरू फरू हुय र माय गयो परी। बी नै लखायो क वातावरण भारी हुयग्यो है। मून री तीखी मार सू डील छुलण लाग्यो। अठ सू चालणो चाईज।

—अच्छा, म्है चालू। उण क्यो।

—चाय तो पी जावता। भोजाई कयो। बी न मनवार साव लूखी लागी। सुर छानो थोडो ही रव।

—चाय तो अवार पी'र ही आयो हू। बस, अवार तो चालसू। भायला पापला सू मिलणो है। उण कयो।

—ठीक है। मिल आवो। फालतू मोडो करण सू काइ फायदो। फेरू आया भलो। भोजाई बोली।

—हू S S। कय र वो टुरग्यो। भारी मन सू। सडक माथ आय र उण कडर चाय पीवण री चीती अर जेक हाटल मे बडग्यो।

००

तीनक बजी डाकियो अेक लिफाफो देयग्यो। उण लिफाफो भेजणिय रो ठिकाणो देटयो। पुष्पा र सासर सू आयो हो। उण कागद बाच र मा न सुणायो। खसी रा समचार हा। सुणताई मा रै चैहरै माथ हरख हबोळा मारण लाग्या। मुळकती मा नै दख र बी न लखायो क अठ चौथा छोरो हुवै तो ई बेसुमार हरख मनाईज। पुष्पा र चौथो छोरो काई हुयग्यो जाण पारस लघभ्यो हुव। बी न याद आयो क मा क्या करती ही—अर डफोळ! वेटा पड्या कठ है? वेटा तो भाग आळा रै हुया कर। बी र छारी हुई जद मा कयो—आछी लागी तीख भाठ री। भा च्यार हजार री घ्याडी आयगी। अर जद बीस दिना पछ छोरी रामसरण हुई तद कयो—टटो मिटया। गल छूटी।

मा याळी लेप र डागळ गयो परी। बी रै साग बिद्या अर सरला ही। थ सगळी बारी बारी सू धाळी वजावण दूकी।

मा डागळ सू नीच आयगी। उण बी न बीसक रिपिया रो इतजाम करण खातर कयो। वो चुप रयो। बी न चुप देखर मा बोली—थार कन कानी दीस। थर सरला। अवार तो म्है उधार लेप आवू।

बी रो उथळो सुण्या बिना ई मा बारै गयी परी । पाछी भाय'र सक्कर मगवायी । गळी र टाबरा न सक्कर बाटीजी । थोड दिना पछ भावण घाळ खरच री याद कर बो सोचण लाग्यो क आ लोगा नै समझावणो फालतू है । आ र भेजै मे तो बस थेक ही बात जम्पोडी है कै गाडै मे छाजल रो काई भार हुवै ! आ र छाजला सू गाडै मे जुत्योडै जीव रा प्राण भलाई निक्ळ जावो ! आ नै कोई चिंता कोनी । गळो टूपीज तो टूपीजण द्यो । पण नाक ऊची रवणी चाईजै ।

आ ई बिचारा बिच्च बी नै सरला रो फूल्योडो पेट चेत आयो । देखो, तीखं भाठै री लाग का सक्कर बट ! हुह ! तीखो भाठो सक्कर पाळी री भणझणाट मा री बडबडाट जा, गुड लेय आ ! सिझ्या नै सीरो राघाला । मा कयो । बो घैनी लेय र बाजार कानी गयो । भात भात रा बिचार बी रै चेतै मे श्वनारा मारता रया—पूर भारग ।

००

सिझ्या !

ढळतै सूरज री किरणा घर सामें ऊग्याड नीमड री डाळा सू छण'र वारली साळ मे पसरै । पछ अधारो गहरीज । होळ-होळ बत्ती रो चानणो अधारै न निगळ जावै ।

उण रोटी जीमी । जीम र थोडी ताळ पछै घूमण खातर बारै निक्ळग्यो । चुन्नीलालजी री दुकान सू निब्बै नम्बर जरदै रो पान लगवायो । अेक मीठो पत्तो मसालो अर गुळकद धलवाय'र बधवायो—सरला खातर । दोलड वागद मे लपेट'र पान पट री जेव न घाल्यो ।

माळिय मे पूगताई सरला दीखी । हायोडी धोयोडी । वाजळ टीवी घर राखी ही । बी खातर आ नूवी बात कोनी ही । बो जद भी आवतो, रात न बा आपरी अक्कल सारू तैयार हुवती ही ।

मात्र माथै बठ'र उण कयो—सरला, म्हारो बग इन्न ला । सरला बी रो बग खूटी सू उतार लायी । बग खोल'र उण गुलाबी साडी निक्काळी—घो रग धार डील माथै सागीडो फन्न ला । उण मुळक र कया ।

सरला उयळ पुयळ'र साडी देखण लागी । बा वाली—इत्ती बडिया साडी लावण रो अवार काई जरूरत ही ।

बो साचण लाग्यो क आ साडी, जिकी पचास रिपिया री है इण न इत्ती बडिया लाग रैयो है । कर भी काई ? घर मे घाघरो ओठणा पर का पछ अट्टार बी भाळी तिगदळ साडी । बालेज री हवा खाय र आयी हुवती तो सो सवा सो री सा

दख'र ई इण रो मीगणी ई कोनी भीजती । आ तो मिडल पल है । पण तो ई मा गळी म ढडाळो पीटती फिर वं वीदणी भणीज्योडी है । उण कई दफ सोच्यो व किणी तरह इण न मटिक करवाय दी जाव । पण जल् भी वो बात टोगतो, मा आर्दज कवती—इत्ती पढाई घणी । आपर घर आळा न राजी खुसी रो च्यार ओळ या माड देव अर बा रो आयोडो कागद वाच लेव । ऊची पढाई करवाय र आपां नै कुणसो हूडया कमावण घातर भेजणी है । नौकरी करण आळया रा लपण । हुह ! तो तरह र मरदा सागै काम करणो पड । घणो पढ्या आदमी सुरग म तो जावण मूरयो !

उण सोच्यो व अ भ्यासा कदेई तरक्की नी कर सकला । घर मू वार जाव तो सुगन लेय र । गघा सामन दीस ता डाव लेय र निकळ । घाली घडा लिया लुगाई आवती दिख जाव तो पाछा घर मे बड जाव । आछा फूट्या ! अ गात्र रा कीटा गात्र मू वार निकळणो ई कानी चाव !

—तिवार टाकई परण नै काम आवली । सरला रो बात सुण र बी रा विचार टट्या ।

—हां S ! वो सरला कानी देखण लाग्यो । वा हाल ताई साडी उबळ पुथळ कर ही ।

—पर र दिखा तो सरी । उण मुळक र कयो । ओढणो घूटी माथ टाग र घाघर न पेटीकोट रो जगा काम लेय र उण साडी बाधी ।

—असल ओपी है । पर्योडो ही रेंवण दे । खाल ना ।

पण थोडो ताळ पछ उण साडी खोल र सावट र मेल दीनी ।

थोडो ताळ ठर'र—कद ताई विचार है ? अब कितीक नील ह ? उण पूछ्यो—सरला र की-की फल्याड पेट मार्ये हाथ फेरता फरता ।

—क्या रो । बी रो सवाल समझता थका नासमझ बण र बोली वा ।

—थाळी बजवावण रो । उण कयो ।

—धत ' मूडा फोर र बोली—घणी उतावळ है काई ?

—यने कोनी ?

वा की कोनी बाली ।

—छोरो हुवैला वा छोरी ?

वा फर चुप ।

—बोल कनी । बी र सुर म खुसामद ही ।

—म्है परमात्मा थोडी हू ।

—तो ही ।

—तो ही क्या री । सूवो परा । क्यू फालतू री वाता करो । दिनुगे जल्दी उठणो है । अर उण वत्ती बुझाय दी ।

वी री आगळ्या सरला र डोल माथ फिरण लागी । वाता ही वाता मे चान्दज उतरवा फिरवायो । तज-तज सासा लेवती बा बाली—था री आ काई घादत है ।

अधारे म हाफण री आवाजी आन्ती रयो ।

८८

पांच महीना पछ बी र छोरो हुयो । खब हरख बघायो हुई । थाली बाजी । सक्कर वटी । डूमण्या गावण नै आयी । हीजडा नाच्या । नाव र मुहरत सू दो दिन पनी बी नै आवणो पड्यो ।

मा कयो—जीमण तो करणो ई पडला ।

—जरूरी है काई ?

—जरूरी बिया कानी ? पलडो छारो है । अवार ही हरख बघाया नई कराला तो पछ कद कराला ?

—तीन च्यार सी रिपिया नै तडा है । उण कयो ।

—पुप्प। नै बघाई म हाथघडी देवणी पडला । वा छोर खातर कपडा लावली ।

—ठीक है ? उण कयो । बुझ्योडी सी आवाज मे ।

—थारी दादी सोन री नीसरणी चढला । मा कयो ।

इत्त म ई रमेस फरमाइस करी—भाइजी, नाव आळ दिन रडियो लगावाला ।

मा फट बोली—रेडियो पेडियो कोनी लगावणो । फालतू माथो खावै । जेकर फेरु डूमण्या गवाय लवाला ।

—मा SS ! म्हनै थारी अ डूमण्या फूटी आख ई कोनी सुहाव । रेडियो इ ठीक रवला । आज काळ गळी मे सगळ्या रडियो ई लगाव है । विद्या बोली ।

—चोखा वावा ! मरजी आवै जिया कर लिया ।

बी नै माय ई माय झाल चढी । चोखा तनासो है । भुवाजी नागी फिर अर भतीजा नै युगला-टोपी चाइज ।

मा नै अलायदी लेख'र उण कयो—अवार च्यार पाच सी रिपिया रो इतजाम कठ सू हुवला ?

—म्है साकळ अडारण राख र सात सी रिपिया लायी हू । मा कयो ।

हूँ ! तो मा मापरो सोन रो सूत भट्टाजी राघ'र प्रायो है । बी न लघायो क मा लोगा रो अर ई भ्रमून है—लाय धमोहा सवो, पण नार राखो । माय रा माय भ्रमूज'र मर जावो, पण भरम भर्यो राखा । मर्यां पछ ल्हास भलाई नाळ म ई हायो पण नाव कुतबमीनार सू ऊचो रवणी घाईज । बी र लाय भीचा भाची वरता धका ई रीत रा स रायता हुय र रया ।

सगळा वाम सळटग्या । लोगां रा वरतण भाडा, जिवां रा माग'र लाया हा, पाछा पूगता वर्या । दोफारा वार सू तीन धाळी फिल्म रा प्रोषाम हो—भायला साग । च्यार बजी घरा पूग्या ता दळ्यो क गळी मे रोवा कूची मन्धोडी ही । रामोजी वामण चालता रया । बापडा भनो मिनख हो । भरपी सेम'र जावण री तयारिया वरतीज रयी ही । बी नै भी नार जावणो पड्यो ।

लोग रवाना हुया । हाण्डी सू धूवा निवळ हो । फूल्यां भर पीसां री उछाळ हुव ही । लोग बारी-बारी सू भरपी नै काधो देव हा ।

राम नाव सत्त है सत्त बोल्या गत है चालो बितवासी बकुण्ठ वासी ।

बो भरपी नै काधो दिया घासा ताळ तांड चाल्या गयो । भ्रवाणचर बी नै लखायो क बो लम्ब भरस सू ल्हासा दाय रया है । जीवती जागती ल्हासा चालती फिरती ल्हासा भर बी री दीठ सामें कई चहरा धूमण लाग्या—भ्रव्या भ्रव्या करता दादी सा वेटा नो भाग धाळा र हुव, कवण धाळी मा खुद न खुद र माय लुकावण री कोसिस करती बिद्या घारी मा वाइ घादत है, कवण धाळी सरला छोटी भाई रमेस मा मा कर र रोवतो छोरो सगळा चहरा निजर भाव हा बारी-बारी सू ब जीवती ल्हासा भय माग ही—लावो लावो लावो ।

—ले भाई, म्हानै ई काधो देवण दे । अक जणो बी नै कयो ।

बो चिमक'र ठर्यो । बी री दीठ सामें ब ई चहरा धूम हा हाल ताइ । बी र मगज री नसा तणीज ही ।

लोग बोल्या जाव हा—राम नाव सत्त है सत्त बोल्या गत है ।

धरती कद ताई घूमैली

ओ महीनो खनम हुवण म दो च्यार दिन और रया है। सीता साच्या अर निसकारा नाच्यो। वी याद आवताई बा गळगळी हुयगी। डबडबाईज्योडी आख्या पू छ र उण आभ कानी देख्यो। फेर जमीन कुचरण लागी। वी न लखायो क धरती अर आभे बिच्च अमूजो भर्योडो है। ठीक विसो ई अमूजो जिसो क वी र हीयं मे भर्योडो है। सो की है अर की कोनी। भरयो पूरो घर है। बेटा बहुवा है। पोता पोती है। दोहिता दोहिया है। मिलण नै दानू टर रोटी ई मिल है। पण तो ई पतो नी सो की आपरो आपरो सो लखाव। लखाव कै बठ ई की काण कसर है जर। पकड म भला ई ना आवो। दोनू टक राटी खायी अर नचीत हुय'र सावणो ई तो सो की कोनी। राटी र अनावा भी तो मिनख नै की चाईज्या कर है। अलावा आळी मनस्या ई तो फोडा घाल है।

सीता आपरो काळो ओणो देख र फेर गळगळी हुयगी। व जीव हा जित्तै तो सो की सावळ ई हा। घर, घर ई लाग्या करतो हो। आगण मे रमत लडत टीगरा री चाय माय कित्ती सोवणी नाग्या करती ही। वी चाय माय मे सगीत रो सा रस आवतो। पण अब तो लाई टीगर ई चाय माय कोनी कर। जे कणा ई कर तो वा री मावडल्या चटक ई तीन नम्बर री डाट पाव। पकड बूकीयार माय कमर मे घीस लेय जाव। फेर वा रो बाजो बाजण लाग। कित्ती दफ समझायो है व अठ ना रम्या कर। गाळ्या सीखण र अलावा काइ है बोलण रो फम तो किणी नै है कानी दाई जिया ई बोल राममार्याडा।

सीता सोच क इ घर न काई हुयग्यो। टीगर जे घर र आगण म नइ रमला तो किस्ता पाडोस्या र आगण मे रमला? टीगर ता घर आळा साग ई रमला। पण नइ। आ नै तो घर आळा टीगर आख्या देप्या ई कानी सुहाव। आप आळा पूत घणार्ई झाला लाग। वा नै चौईसू घण्टा रमावला हसावला। कुदावला उछाळला। फिर फिर दुक्का यारा लेवला। पण छोट बड भाई रै टावरा नै देखता ई आन सूग सीक आवण लाग। मूड सू भलाई की मती कैवो, पण आख्या तो सो की बताव ई है। खीर पूडी खावती बेळा जे ताळी माय सू उठ र कोई कुत्तो घाळी वन आ जाव,

बी बगत जिकी' रीस जिकी घिरणा भर पता नी बाइ नाइ जिको भी आया कर है नी—बस, बो ई सो बी आर चहरा माय आयोडो लपाव !

सीता आपर ई वावत सोषण लाग । बा कुण है ? कवण न तो आ री मा ई है, पण मा भर वेटा बिच्च जिको लगाव हुया कर है, बा कठ है ? कोई घडो-खण खातर इ वन कानी वठ । बाइ हालचाल है तबियत रिया है जी सोरो रव बा किणी जिनस री जरूरत है बा । बाइ पडी है आ न । अ क्यू पूछ ? दोनू टक जीमाव ओ कम है बाइ ? पण ओ दोनू टक जीमावणो ई किसा राजी खुसी है ? धीगाण गळ बधयोडो फरज है आ तो । नइ ता आ तीना माय सू इसो मुहदार कुण है क म्हनै आपर वन कोनी राख सक म्हारो घरको कोनी छोट सक ? चाईज ई काई है म्हन ? रोटी अ खाव रोटी म्है खावू । पाच सात जणा री रोटी लार अक जण री रोटी ता इया ई निवळ जाव । माल मलीदा मापू बा बात तो माय कोनी । अ लूखी खाव तो म्है किंसी चुपडी मापू ह ? पण अवार तो अ चुपडी खाव भर म्हनै है—हा हा, म्ह तो दुभात करा । म्हानै तो चीवणी चुपडी पोसाव कोनी । गरीब आदमी हा । नीठ गुजारो करा । पण अब जिका यानै छप्पन भोग लगा सक, बा वन जावो परा । देखा किता क दिन रोटी घाल ब । अमीर भर भागवान है तो आपर घरा हुवला कोई । बारी भागवानी म्हार किंसी आडी आव । म्हार ता म्हारी भूख ई आडी आवला ।

सीता याद कर क बो दिन किता माडो हो जद बडोड वेट कलास दिनुम चाय पीवनी बगत नारायण भर बिजजू न बुलवाय र कयो क मा नै राखण रो ठेको खाली बी रो ई तो कोनी । धा लोगा रो भी तो कोई फरज हुवला । धा किसा घर री पाती कोनी ली ? ये किसा मा रा वेटा कोनी ?

बी री बात सुण र नारायण बोल्यो—आप कबो जिया ई कर सेवा । म्है काई कवू ? यानै बीस कोनी काइ ? कलास र माय रीस रा बरूळा उठ

रमा हा ।

बिजजू चुप रयो । वो हमेसा चुप रव । बस, खाली देखतो रव क कुण काइ कर क्व ।

अर सीता ? बा अघगावळी सी देख ही । देखो, अब काइ हुव ? अक मा तीन वेटा दो टक री रोटी तीन बटा, अक मा अक मा, तीन वेटा । मा राटी वेटा । बटा रोटी मा । मा वेटा रोटी । अर फर बहस मे घूमता मा, वेटा अर रोटी माय सू खाली रोटी ई महताक रयोगी । मा अर वेटा

कठई अलगा जाय पड्या—गोफण मे घाल'र फकयोड भाठ दाई । रोटी रो आकार अर भार इत्तो वधग्यो क बी न सम्भाळणो किणी अेक र वूत परबारी बात हुयगी । फसलो हुयो—तीनू जणा बारी बारी सू मा नै अेक अेक महीन राखला ।

सीता नै बी कवण रो मौको ई कोनी मिल्यो । तीना माय सू किणी आ कोनी पूछी क ओ फसलो बी न मजूर है का नही । बी रो आपरी मनस्या काइ है ? उण निसकारो नाट्यो—खर सल्ला । जे आज ब हुवता अर आ तमासो देखता तो काई कवता ? बा सू इत्ती जरणा हुवती ? व तो लाल पीळा हुय'र गाळ्या काडण लागता । थप्पड का लात भारता यारी । काई समझ राट्यो है म्हनै । म्है धारी आ दो रोट्या भरोस बठा हू काई । हाल तो इत्ती पीच है क था जिस बीसू मगता न राट्या घाल सकू । अेक लाम्बो निसकारो । पण वा र धका तो कदे ई इसी बात उठी ई कोनी । बा नै काई ठा हो क अ दो टक री रोटी खातर इया करला ।

००

सीता नै सावळ याद है क व फागण रा दिन हा । तीन च्यार दिना पछ होळी ही । तय आ ई हुयो क होळी पछ मा बारी बारी सू सगळा कन खला । ना'र सिधजी आळ दिन जीमती बखत बी न लखायो क लापसी साव फीकी है । कवो गिटती तो लखावतो क कवो गळ मे अटक रयो है । हाळी आळ दिन ई बा अणमणी अर उदास ही । होळी नै लगपसी ई हुया करती ही, पण बी दिन कलास री वहू दाळ रो सीरो राधयो । दाळ सिक्ती दख'र बा साचण लागी क बा खुद सिक् रयी है !

टीगर बी नै कवण लाग्या—दादी मा दादी मा वाई (मा) कवती क फाल सू थे नारायण काको सा री पाती म जीमोला । दादी मा, थे साचापी वठई जीमोला वाई ? अर सिझ्या न बा जीमण बठी जणा कलास री जोडायत राधा बोली—दाळ रो सीरो धार ई वास्त राधयो है । सावळ रज'र जीम्या भलो !

बा सोचण लागी क दाळ रो सीरो हुवा भला ई लूखी रोटी जीमण नै बठ्या पछ तो पेट रो घाडा बूरणो ई पड । इच्छा हुब तो दा कवा बत्ता, नीतर च्यार कवा कम । उण सोचो—आज पछ म्हनै अठ सू सीध । काल सू नारायण री पाती म धावणो पीवणो । पछ अठ र पाणी मे ई सीर कोनी खला काई ? टायरा कन आवणा-जावणो ई बढ हुय जावला काई ? नई, नई मा बात कोनी हुय सक ।

अेक पछ दूज अर दूज पछ तीज री पाती म बा गुडकण लागी । कलास री पाती सू नारायण री पाती म अर नारायण री पाती सू विज्जू री पाती मे । पाती

वदलता ई टीगर हरखाया हरखाया बी वनै भ्रावता अर वचता—दादी सा, बाल सू थे म्हारी पाती मे जीमाता ! आपा साग माग ई जीमाला—अेक ई घाळी म ! ठीक है नी दादी सा ?

बा रोवणखाळी हुय जावती । आ नासमझ टीगरा न ई इण वान रो पतियारो हुयग्यो क वा वारी वारी सू जीम है । अेन महीन सू अेन दिन ई उपर कोनी राख कोई । महीनो हुवता ई टिकट कटावो । अब दा महीना ताई तो गल छूटी—आ ई सोचता हुवला !

००

टीगर सिझ्या पडी सरावग्या र पाट माथै रमता । न जद कदे ई 'माई माई रोटी दे' आळी रमत घालता बी न लखावता क आ कहाणी आा भी सोळ आता साची है । टीगरा माय सू अेक जणी मगती वण र वारी वारी सू दूजा बन जाय र अेक इ बात कँवतो—माई माई रोटी दे । बी न उयळो मिलता—ओ घर छान, दूज घर जा !

बा सोचती—अेकाम आ ईज हालत म्हारी है । म्है इण मगती आळै दाई ज तो हू । महीनो हुवता ई वेटी कय दव—माई ओ घर छोड अगल घर जा ! अर टुर जावू । अगल घर ताई । बठ महीनो हुवता ई सागी हुकम सुणीज—ओ घर छोड अगल घर जा !

ओ घर छोड अगल घर जावता अर वो अगला घर छोड दूज घर जावता जावता पाचे क बरस बीतग्या । न पाच बरस सुख सू बीतग्या हुव जिकी कठ ! आ पाच बरसा मे पच्चीसू दफ फजीता हुया । बिज्जू री पाती म ही जणा नारायण री बहू भवरी छोर री बरसगा० आळ दिन बाटकी मे घाल र रसमळाई भेजी । रसमळाइ रा अेक कवो इ लिया हो क इत्त म उपर सू रोळो गुणीज्या । बिज्जू री बहू पुष्पा बोत ही—अर भागवानी फाडण न रसमळाई रो टरो भेज्यो है काई ! थारी पाती मे हा जद तो लूखा टुकन्ड घाल्या बा न । गाज म्हाराणीजी रसमळाई री घसकायो तगायो है । दखी थारी भागवानी । म्हारी पाती म हुव जद थारा ओ करारो थार बन ई राग्या कर । म्हान गुडसी जिसी म्हे मत्त ई घाल देसा !

सीता न डेर याइ आया—बा दिना बा नारायण री पाती म ही । राधा न ताव चड्याग हा । क्लाम नौकरी र काम सू बार भयोडो हो । उण दो तीन दिना ताई बी र टावरा ताई राटी पाणी कर्त्या । थोड दिना पळे टीगरा री लडाई न लेय र भवरी अर राधा बिच्च राड हुई । राधा कयो क टीगर जल लडया, सामूजी बठ ई हा । बा न पूछ ल भला इ ! इत्त मे भवरी जहर म बुझ्याडो तीर मार्यो क—

अर जा जा ! पूछ लियो धनै अर दा नै, दोना नै । बा नै काई पूछागे है ? वं गोनीपो करता फिर धारो अर जीम म्हारी पातो मे । गोनीपा करवायो जिको तो चोत्रो, पण जीमावणो ता ही ।

बी री आरुषा गौली हुयगी । आ रं राड-अगडे रा काई अउ रोनी । ज नित लड । नडाइ है आ री, काटा म धीस म्हनै । अवं मग्णो ता म्हारै ई सारं कानी । सार हुय ता ओ ई अरनू । सावरिय जिनी साजा धानी है, वं तो लेवगी ई पदसो । सीता आ माच गोच'र गळमळी हुव ही ।

सीता न लडावण लाग्यो वं आमो अत कोनी । वो मुन्हडो है । आ धरती लम्बी-चवडी कोनी । आ सुक्योतगी है । पर ई मुन्हडोयो है । अई मायां सुकावण न ई जगा कानी । कवण नै तो आ धर ह । आ धा अर्यो मे आओ द्वावडो-पीवतो धर वाज । पण अठ खावन-पीवत धा में द्वावण-पीवत जे ई पट ह । जेक पट र खातर इत्ता टटो । ज तो दिनुा भिन्दा गड-कुन नै ई राटी धा ह । जेक मारी रोटी म इसा काई है व आ नै नित नुवी विचारण करण पई ।

००

आन ता हद हई ! कलाम क्या—आ वाउ ता आओ कोनी क म महीन री महीन इन विने मुक्कतो र्वे । म्हा खदान म्हा टोण र्वेता म्हा पा तोनू ई मा नै पचास पचाम पिपिया आय महीन मे दिना ह्य । मा नै होण्या रिपिया घणा ई है । चाय ता आपा पादा ई ह्य । अ क्के ई पाण्या र्हा । व बी रयो रोटी जिकी आपरी मन ई पाईमा-अवण ।

नारायण क्या—जिया घाी—मग्नी । अर तो मग्ण म्हा । आउ मा विग्ण ई चुप कोनी र्या । वाल्या—नित अने-विने मुक्कत म तो टोक ई म्हा । आगी जक ठोड पडी तो रवना ।

इती वान गुया पई माउ में मन रे लीखे ई ज गे अत उगाया । अई गिरी हिलता ई खीना खम । मग्ना हा जिना ई वेल्ला र्हा । बीजे ताउ गुया पई गीसा ठकवाण सुर मग्ण ह्य—मा नै पूउ ता जेवण । विग्ण री आपाज री मा ।

—मा आउकाळ जिपा दाठ खाउण ता जानी करे । बी ई भाई री हुवा भना इ । अमली वाउ ता आपा रै जवण री है । कलाम रीया भाई री—भा मग्ण र जवणी हुव ता मा मू वाउ क्ण ।

जद साजा आ मुग्णो तो ता बी कानी भागी । भागी भागी म्हा अने कानी देखण लागी । बी री आउता आग विचारण म्हा आणण लागता । इवड

आख्या पू छ'र बा आपरो भरीजयोडो गळो चुपचाप पीमी । रोवण री आवाज होर
सू बार कोनी निकळी । हिबड रो अक अक टुकडो रोव हो । बी र माय आसुवा र
समदर भरीजयो ।

सीता सोचण लागी क अठ रोटी खावू तो किसी मुफत री खावू । आ र
टीगरा रो गोलीपो कह । सरधा साह दो च्यार बरतण भाण्डा ई रगड दू । कित्ता
हाथ घसीजै है म्हारा । पण अ म्हन पचास पचास रिपिया ई काम री मजूरी देव है
वाई ? जन् म्हन मजूरी ई करणी है तो कठै ई कर लेसू । दुनिया मे काम री किसी
कमी है ? और नई तो किणी र घरा ठीकरा रगड'र ई रोटी खा लेसू । सवाल ता'
रोटी रो ई है ।

→ ω ३

००

अगल दिन सीता आपर दो-च्यार पूर पल्लां री गाठडी बाधर अधार मूई
घर सू निकळगी । अबार बी री आख्या आग ना तो अधारो हो अर ना ई बी न
घरती-आभ बिच्च अमूजो लखायो ।

आज आभा अणत हो । घरती घणीज बडी ही । बो रस्तो घणो ई चवडो हो
जिक माथ बा टुरी ही । अर सै नाऊ बडी बात आ ही क बी र च्याहमेर खुली
हवा ही ।

' ००००

